पृथ्वीपुत्र



ललित



मैथिली अकादमी
पटना

[illegible]

पृथ्वीपुत्र

ललित



मैथिली अकादमी, पटना

[illegible]
[illegible]

প্রকাশক
© [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

মুদ্রক
[illegible]
[illegible]

पुनर्प्रकाशकीय

मैथिलीक पोथी सामान्यतया कम विकाइत छैक से सर्वत्र चर्चित अछि । मुदा मैथिली अकादमी आइ फेर ललित'क 'पृथ्वीपुत्र'क चारिम संस्करणक पुनर्मुद्रण करा गौरवान्वित अछि । पृथ्वीपुत्र एकटा एहन उपन्यास अछि, जे मैथिली उपन्यास आ कथा कें नव दिशा आ नव शिल्प दय ललित साहित्याकाश मे एक जाज्वल्यमान नक्षत्र जकाँ सभ दिन चमकैत रहताह । गद्य साहित्य कें आम मैथिल जनक दुख-सुख सँ जोड़ब हिनकर विशेषता रहलनि ।

पृथ्वीपुत्र अपन गुणात्कर्षक कारणें विभिन्न विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम मे समादृत भेल अछि । आइयो ई पोथी मैथिली पढ़निहार छात्र आ मैथिलीक सामान्य पाठक'क मध्य अर्चित अछि ।

मैथिली अकादमी ललित'क प्रति पुनः श्रद्धांजलि अर्पित करैत हुनक दुर्लभ कृति ललित समग्र'क प्रकाशन करा रहल अछि, जकर सम्पादन डॉ. विभूति आनन्द द्वारा कयल गेल अछि ।

पृथ्वीपुत्र'क ई चारिम संस्करण अपनेक हाथ अछि । अकादमी अपनेक सहयोग आ सुझावक सदाकांक्षी अछि ।

पटना

दिनांक 31/01/2013

कमला कान्त झा

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दिनांक [illegible]

विनोद प्रसाद

निदेशक एवं सचिव

हिन्दी अकादमी

प्रकाशकीय

आधुनिक मैथिली साहित्यक गगनमे ललित एक जाज्वल्यमान नक्षत्रक रूपमे उदित भेलाह तथा उपन्यास एवं कथाक क्षेत्रमे एक कीर्तिमान स्थापित क' अकालहिमे अस्तंगत भ' गेलाह । जँ-जँ समय बीतैत गेल अछि तँ-तँ समीक्षकक दृष्टिमे हिनक कृतित्व जगजगार होइत गेल अछि । ई मैथिली उपन्यास एवं कथाकेँ एक नव दिशा, नव आयाम आ नव शिल्प देलनि आ कतेको समवर्ती एवं अनुवर्ती साहित्यकारकेँ अनुप्रेरित-अनुप्राणित कयलनि ।

हिनक एकमात्र उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' मैथिलीक कीर्तिस्तम्भ सिद्ध भेल । ई प्रथमत: 10-5-1964 सँ 5-7-1964 धरि क्रमश: साप्ताहिक 'मिथिलामिहिर' मे आ तत्पश्चात् 1965 मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल आ प्रकाशित होइतहि अपन गुणोत्कर्षसँ विश्वविद्यालयीय पठन-पाठनमे समादृत भेल । एहिसँ पूर्व 1964 ई० मे हिनक कथा-संग्रह 'प्रतिनिधि' प्रकाशित भ' चुकल छल । हिनक जन्म छओ अप्रैल 1932 ई० मे भेल छल आ 1983 ईसबीक चौदह अप्रैलकेँ हिनक आकस्मिक स्वर्गबास भेल । साप्ताहिक 'मिथिलामिहिर' 29 मइ 1983 क' ललित श्रद्धांजलि अंक' प्रकाशित क' मैथिली जगतक आँखि खोलि देलक जे ललित की छलाह । 'मैथिली अकादमी पत्रिका'क अप्रैल मइ 1983 अंकमे सम्पादकीय अग्रलेखमे हिनका श्रद्धांजलि अर्पित करैत हिनक इतिवृत्त प्रकाशित कयल गेल अछि ।

हिनक 'पृथ्वीपुत्र' प्रथम संस्करण थोड़बे दिनमे हाथहि हाथ बिका गेल आ संयोगवश एकर प्रकाशक पुनर्मुद्रण नहि क' सकलाह । फलत: ई चिरकाल धरि अप्राप्य रहल आ मैथिलीक छात्र एवं सामान्य पाठक अभावक पीड़ा सहैत रहलाह । तेँ मैथिली अकादमी व्यग्रतापूर्वक एहि उपन्यासक पुनर्मुद्रण कयलक अछि जे अपनेलोकनिक हाथमे अछि ।

मैथिली अकादमी ललितक उत्तराधिकारीलोकनिक प्रति कृतज्ञता प्रकट करैत अछि जनिक सौजन्यसँ 'पृथ्वीपुत्र' प्रकाशित भ' सकल अछि । आशा अछि, ललितक आनो कृति सभक प्रकाशमे अकादमीकेँ हिनका लोकनिक सौजन्य सुलभ होयतैक ।

मदनेश्वर मिश्र

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी

22 अक्तूबर 1984

आमुख

'पृथ्वी-पुत्र' धारावाहिक रूपेँ 'मिथिला मिहिर' मे मइ-जुलाई 64 मे छपल छल ।

'उपन्यास एकटा विशेष परिस्थितिमे लिखल गेल । आ परिस्थिति रहय श्री हंसराजक तगेदा । किछु दिन पूर्व ओहिना कहि देने रहियनि जे 'मिथिला मिहिर' लेल एकटा उपन्यास देबह । आ गछनाइ काल भ'.गेल । हुनका अन्तर्देशीय ओ पोस्टकार्डसँ अकच्छ भ' गेलहुँ । हारि क' अन्तमे लिखनाइ आरम्भ कयल आ दस दिनमे कोनो प्रकारें लिखि पठा देलियनि ।

पौने चारि बरख पूर्णियाँमे रहबाक अवसर भेटल छल, सहरसा-पूर्णियाँ मोरङ सिमानपर । मोनमे ओतुक्के माटि पानिक एवं ओतुक्के लोकक स्मृति रहय । लिखबाक काल अनायास ओएह पृष्ठभूमि रूपायित भेल । पुस्तकाकार छपयबाक अवसरपर प्रेसकापी तैयारी करैत काल यत्र-तत्र किछु परिवर्त्तन करय पड़ल ।

मैथिलीमे कथा ओ उपन्यास साहित्यक समस्या आन भाषासँ भिन्न अछि एतय समस्या थिक पाठकवर्ग तैयार करब, जकर नितान्त अभाव अछि । पाठक ओ लेखकक बीच दूरी रहलासँ दुनू एक दोसराक प्रतिएँ उपरागसँ भरल छथि । पाठककेँ मनोनुकूल सामग्री नहि भेटबाक उपराग आ लेखककेँ मर्मज्ञ पाठक नहि भेटबाक उपराग । मुदा पाठकवर्ग तैयार करबामे साहित्यकारहुक समक्ष अन्ये कलाकार जेकाँ एकटा दायित्व रहैत छैक । 'आर्ट' केँ 'पोपुलर' बनओनाइसँ श्रेयस्कर थिक पब्लिककेँ 'आर्टिस्टिक' बनओनाइ । एहि समस्या पर मतैक्य नहि अछि । रहबोक नहि चाही ।

जनिक आशीर्वाद पाबि मैथिलीमे लिखैत रहबाक उत्साह बनल रहल ओ थिकाह आधुनिक मैथिली साहित्यक अन्यतम दिकपाल, पूज्य गुरुवर श्री रमानाथ झाजी । हिनक विचार आदर्श बनि अनुप्राणित करैत रहल, जकर अभाव मे कहिआ ने हतप्रभ भ' बैसि गेल रहितहुँ ।

प्रकाशनक जोखिम उठयबाक हेतु विद्यापति प्रकाशन श्री रमेन्द्रनारायण चौधरी जीक अभारी छी । श्री बचकुन (मिहिर जी)क प्रतिएँ सेहो आभार प्रकट करैत छी जनिक देख-रेखमे पुस्तक प्रकाशित भेल ।

श्री ललित

7-3-1965

लालबाग, दरभंगा ।

भूमिका

मैथिलीमे एमहर किछु दिनसँ सबसँ विशेष प्रगति जाहि अंशमे देखि रहल छी से थिक कथा-साहित्य ओ ताही क्षेत्रमे श्री ललितजी ताहि रूपक प्रसिद्धि प्राप्त क' लेल अछि जे हुनक एहि कृतिकेँ कोनहु प्रकारक भूमिकाक प्रयोजन नहि छैक, ताहूमे ई 'पृथ्वी-पुत्र' धारावाहिक रूपेँ मिथिला-मिहिरमे प्रकाशित भ' नीक जेकाँ चिन्हार भ' चुकल अछि। पुस्तक रूपेँ एकर प्रकाशन पाठकक सुविधार्थ कयल जा रहल अछि ओ जेँ एहिमे प्रेरक एक जन हमहूँ छलहुँ तेँ एहि प्रसंग दू शब्द कहब हमरा हेतु आवश्यक भ' गेल अछि।

कथा कहब वा कथा लिखब एक गोट कला थिक जकरा हमरालोकनि 'लूड़ि' कहबैक जे सिखला उत्तर परिमार्जित तँ अवश्य होयतैक परन्तु जे लोककेँ रहैत छैक, सिखने अबैत नहि छैक। कथाकार लोक होइत अछि, बनैत नहि अछि, बनि सकैत नहि अछि। एकर प्रतिभा जन्मजात होइत छैक। प्रतिभाक बीजकेँ व्युत्पतिक अनुकूल स्थितिमे अभ्यासक जलसँ सिचलहि उत्तर ओहिसँ पुलक आशा। श्री ललितजीमे ई सब अछि ओ सबसँ विशेष ओ जनैत छथि ओ मानैत छथि जे ओ कथाकार थिकाह। मैथिलीक एहि नव युगमे ओ कथाकार रूपमे अबतीर्ण भेल छथि ओ उत्तरदायित्वपूर्ण भावनासँ प्रेरित भ' साहित्य-सर्जनमे संलग्न छथि। मैथिलीमे कथा-साहित्यक विकासमे हिनक योगदान इतिहासकार लिखताह, परन्तु हमरा सन-सन बहुतो व्यक्ति छथि जे हिनके कथा पढ़ि-पढ़ि मैथिली-कथा-साहित्यक प्रति रुचि उत्पन्न कयल अछि।

कथा साहित्यक अध्ययन ओ अनुशीलनसँ एक गोट कथा जे हमरा संस्कार जकाँ दृढ़ भ' गेल अछि ओ थिक ई जे कथा साहित्यक जे कोनो रूप हो, उपन्यास हो वा लघुकथा हो, कथा मात्रक मूलभूत वस्तु थिक कथानक, घटनाचक्र। हम मानैत छी जे घटना शून्यमे नहि घटतैक, घटना घटतैक कोनहु परिवेशमे, परिस्थिति-विशेषमे, व्यक्ति-विशेषमे ओ घटनाक विकास होयतैक वर्णनक द्वारा अथवा कथोपकथनक द्वारा। घटनाक क्रम ओ ओकर परिणाम इत्यादिसँ जीवनक प्रति जे दृष्टि लेखककेँ छनि सेहो कथानकसँ अवश्ये घोषित भ' जायत। एवंक्रमे चरित्र, परिवेश, परिस्थिति इत्यादि सब वस्तु कथाक उपादान थिक ओ न्यूनाधिक रूपेँ एहि सब वस्तुक स्थिति सब कथामे रहितहिं छैक ओ कथा विशेषमे एहिसँ वस्तु विशेषक प्रधानता रहि सकैत छैक। परन्तु

कथाक प्राण थिक । कथानक ओ शेष सब वस्तु कथानकहिक अंग रूपेँ प्रस्फुटित हो, घटनाक्रमहिसँ बहराय तँ ओही कथाकेँ हम उच्च कोटिक कथा मानव । अंगीक सौन्दर्य छैक अंगक सौन्दर्यमे परन्तु अंगक विन्यासमे संतुलन हो । सुन्दरसँ सुन्दर अंग-विशेषक संतुलनहीन विन्यास हो तँ अंगी सुन्दर नहि रहत ई विषय सभक अनुभवसिद्ध अछि ।

कथा कहबाक प्रकार अनेक अछि, अनेक भ' सकैत अछि । सबमे गुण छैक, सबमे दोष छैक । परन्तु कोनहु रीतिसँ कथा कहल जाय, ओहिमे गतिशीलता हो, घटनाचक्रक क्रमिक विकास हो, जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढ़ैत जाय, औत्सुक्य प्रबलतर होइत जाय । यदि साध्यपर ध्यान अछि ओ सिद्धिक दिस गति अछि तँ साधनक हेतु हमरा चिंता नहि अछि । कोनहु साधनसँ साध्य एके अछि । परन्तु साधनक पाछाँ पड़ि साध्यकेँ बिसरि जायब अथवा ओकरा गौण करब कलाक अपकर्ष थिक ओ ताहि कथाकेँ हम नीक नहि कहब ।

कला जीवनक अनुकृति कहल जाइत अछि । ओ सबसँ विशेष जीवनक अनुकृति कथा थिक । एहिमे अमूर्त जगतक चित्रण होइत अछि ओ से चित्र की तँ प्रतीयमान होयत किंवा सम्भाव्य अथवा आदर्श । परन्तु कोनहु स्थितिमे ओहि जीवनसँ परिचय आवश्यक जकर कल्पना ल' कथाकार अपन संसार बसबैत छथि । जीवन ओ जीवनक क्रमक यदि वास्तविक परिचय हो तथा ओकरा सत्यताक संग अभिव्यक्त करबाक भाषामे क्षमता हो तँ कथाकारक सफलता निश्चित अछि ।

एहि 'पृथ्वी-पुत्र' मे हमरा इएह गुण भेटैत अछि । एहिमे कथानक अछि जाहिमे गति छैक, कथहिसँ चरित्रक चारुता चित्रित अछि, कथामे औत्सुक्य अछि जे क्रमशः बढ़ल अछि ओ कतहु क्षीण नहि होअ' पओलक अछि । कथानकक मूलतत्व जे थिकैक संघर्ष से वाह्य आभ्यन्तर दुनू प्रकारक कथहिसँ स्फुट भ' जाइत अछि । कहबाक तात्पर्य जे कथानकक सबटा गुण हमरा एहिमे प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि । जाहि ठामक ई कथा अछि, जाहि समाजक ई कथा अछि, जाहि प्रकारक व्यक्तिक ई कथा अछि, जाहि परिवेशमे ई कथा घटित वर्णित अछि ओ जाहि परिस्थितिमे ई कथा घटल अछि सबकेँ जेना श्री ललितजी समीपसँ देखने छथि, ओकर मर्म एवं तत्त्वकेँ अपन अन्तश्चक्षुसँ प्रत्यक्ष कयने छथि ओ तेँ एहि उपन्यासमे जीवनक ओ चित्र उतरल अछि जे सत्यपर आधारित अछि, सत्य अछि आ जेँ ओ अमूर्त जगतक चित्र अछि तेँ इतिहासक सत्यसँ भव्यतर अछि, सुन्दर अछि ।

एहिमे हमरा हेतु आकर्षणक दोसर विषय थिक औचित्यक रक्षा । 'पृथ्वी-पुत्रमे' जाहि अमूर्त जगतक चित्रण अछि से ने सम्भाव्य थिक, ने आदर्श । ओ थिक प्रतीयमान ओ हम श्री ललितजीक संयम-शीलतासँ मुग्ध छी जे ओ कतहु मर्यादाक अतिक्रमण नहि कयल अछि, औचित्यक त्याग नहि कयल अछि । अवैधा प्रेमक प्रसंगमे कोनो संयम शिथिल भेलासँ कथानक अमर्यादित भ' जाइत, परन्तु श्री ललितजी अवैध प्रेमक प्रसंगकेँ वैधहु प्रेमसँ भव्यंतर चित्रित क' मानव-स्वभावक सहज शालीनताकेँ स्फुट क' देल अछि । एहि अंशकेँ आदर्श सेहो कहि सकैत छी परन्तु प्रतीयमान परिवेशमे ओकरहु प्रतीयमान रेखा श्री ललितजी केवल सत्य ओ सुन्दरे टा नहि, शिवहुक कल्पना साकार क' देखाओल अछि ।

ओ जीवनक समस्या दिस श्री ललितजी एहिमे जे दृष्टि अंकित कयल अछि से ततेक स्वस्थ अछि भव्य अछि, सत्यपर अवलम्बित अछि जे एहिसँ हमहिटा आकृष्ट भेल छी से नहि, जे केओ एकर गम्भीरतापूर्वक विचार करताह, बिनु आकृष्ट भेलेँ नहि रहि सकैत छथि । समस्त 'पृथ्वी-पुत्र' मे एक गोट कथा सबसँ विशेष स्फुटताक संग प्रदर्शित भेल अछि से थिक-"जिबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसारमे । तखन लोक-लाज । नीक बेजाय ।" कर्त्तव्याकर्तव्य बुद्धि थिकैक, जीवनक ममता सहजात प्रवृत्ति ओ एहि सहजात प्रवृत्तिकेँ प्रधानता द' श्री ललितजी एहि उपन्यासमे मानव स्वभावक नैसर्गिक प्रवृत्ति ओ भावनाकेँ जे प्रधानता देल अछि से हुनक स्वस्थ दुष्टिकोणक् द्योतक थिक । जीवनक भावनाकेँ व्यापाक वनाय एहि उपन्यासक समस्त घटना-चक्र एहि तथ्यक अन्तर्भूत भ' जाइत अछि । एहि द्वारे ई उपन्यास कोनहु वर्गविशेष अथवा समाज-विशेषक नहि, प्रत्युत मानव जातिक मूलभूत भावना ओ वासनाक चित्र उपस्थित करैत अछि । अतएव एक दृष्टिमात्रसँ नहि, अनेक दृष्टिसँ श्री ललितजीक "पृथ्वी-पुत्र' हमारा अंगरेजीक विश्वविश्रुत कथाकार टामस हार्डीक उपन्यास मन पाड़ि दैत अछि ।

परन्तु 'पृथ्वी-पुत्र' मे तेँ त्रुटि नहि छैक से नहि । सबसँ विशेष तँ ई उपन्यास हमरा अत्यन्त छुछुन लगैत अछि । उपन्यासमे जे व्यापकता चाही से एहिमे नहि भेटैत अछि । उपन्यासमे मुख्य कथानक संग-संग एको गोट गौण कथानक होयब आवश्यक । से एहिमे नहि अछि । बिजली ओ कलपूक प्रेम-प्रसंग जे उपन्यासक आरम्भमे मुख्य कथानक प्रतीत होइत अछि क्रमशः गौण होइत गेल अछि ओ अन्तमे ओकर आदर्श रूप अंकित क' ओकरा समेटि लेल गेल अछि । पटुआक खेती कयनिहार श्रमिक समाजक चित्र तँ बड़ वास्तविक

भेल, परन्तु ओहि समाजक विनोद अथवा मनोरंजन इत्यादि सामाजिक जीवनक चित्र अंकित नहि भेल । सबसँ बेसी खटकैत अछि एहिमे विशुद्ध हास्य-रसक क्षीणता । ग्रामीण जीवनमे हास्य-रसक बड़ विशेष स्थान छैक ओ तकर समावेश नहि भ' सकल अछि से नीक नहि लगैत अछि ।

मुदा जे नहि भेल से नहि भेल । विचार करब ओकर जे अछि । ओ से ई उपन्यास बड़ सुन्दर भेल अछि । त्रुटि तकनिहारकेँ से कत' नहि भेटत ? परन्तु त्रुटिक रहनहि कोनो वस्तुक, विशेषत: कलाक वस्तुक, महत्व कम नहि होइत अछि । देखबाक थिक जे उपन्यासक जे उद्देश्य थिकैक मनोरंजन ओ ताहि संग-संग अमूर्त जगतक यथार्थ चित्रण से एहिमे पूर्णताक संग सम्पन्न भ' सकल अछि । इएह कारण थिक जे हम एहि उपन्यासकेँ पुस्तकाकार प्रकाशनक आग्रह क' छपबाओल । आशा नहि, विश्वास अछि जे कथा-साहित्यक प्रेमी जन-समुदाय एकर समुचित स्वागत करताह, एहिसँ रसग्रहण क' आनन्दक प्राप्ति करताह । ताहीसँ विज्ञ ओ उत्साही कलाकारकेँ साहित्यसेवाक पुरस्कार होयतनि ।

श्री रमानाथ झा

२७-७-१९६५

पुनर्प्रकाशिकी

ई 'पृथ्वीपुत्र' पूर्णिया जिलाक सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि मे बटाइदारी समस्याक फलस्वरूप भूस्वामी तथा वास्तवमे खेतकेँ जोतनिहारक मध्य राजनीतिक हवाक फलस्वरूप तनावक स्थितिक हृदयस्पर्शी प्रभावकारी चित्र अछि । बटाइदार सर्वहारा वर्गक तथा कथित निम्नवर्गक अछि आ सर्वेसँ प्राप्त अपन अधिकार प्राप्तिक हेतु कृतसंकल्प भए प्राणक आहुति तक द' दैत अछि । एहिमे किछु एहनो अछि जे भूस्वामीक जालफेरब मे आबि टांग सेहो खीचैत छैक आ संग नहि दैत छैक । एही उपन्यासक मध्य एक उपकथामे उच्चवर्ग तथा निम्न वर्गक युवक-युवतीक प्रेम-कथा सेहो सम्मिलित अछि जाहिसँ सामाजिक स्थितिक झलक भेटैत अछि ।

मैथिली साहित्यक अग्रगण्य, प्रगतिशील प्रौढ़ एवं लोकप्रिय कथा-उपन्यासकार ललित ओहि साहित्यकारक अगुआ छलाह जे समाजक तथाकथित निम्नवर्गक जीवनक प्रक्षेप अपन रचना द्वारा कयलनि । मैथिली साहित्यमे हिनक रचना एक अमूल्य निधि मानल जाइछ आ हिनक कृतित्वक चर्चा बिना मैथिली साहित्यक इतिहास छुछुने मानल जायत ।

मैथिली साहित्य मध्य समादृत पोथी 'पृथ्वीपुत्र'क तृतीय संस्करण प्रकाशित करैत अकादमी स्वयंकेँ गौरवान्वित अनुभव कए रहल अछि । विश्वास अछि ई पोथी अपना समाज मध्य पूर्ववत् प्रतिष्ठा अर्जित करत । एहि शुभकामनाक संग ।

पटना,
दिनांक : १७/११/०२

रत्नेश्वर प्रसाद सिंह
निदेशक-सह-सचिव ।

एक

पहर डेढ़ेक दिन उठल रहैक । साओनक चितकाबर मेघ चारूकात धुप-छाँही कयने रहय । अइखन एक अछार जोरगर बरिसल छल । मुदा आब आकाश साफ रहय आ तीख रौद उगि गेल छल ।

हऽरक लागनि दबने दहिनबरियाकेँ टिटकारलक सरुप । खेत कोनाह रहैक ।

मेघ गरजल ।

आकश दिस तकलक सरूप । आँखिमे तृषित पृथ्वी-पुत्रक याचना रहैक । पूबसँ सघन कारी मेघक एकटा टिक्कड़ एम्हरे भासल अबैत रहय । मन्द मन्थर गतिएँ ।

आइ फेर बरिसत अरियानङ्घान । अउल केहन छैक कयने । चारूकात गुम्म-चुप्प, सिकियो ने डोलै छैक । ई हाल रहलै त' चारिए-पाँच दिनमे धारो उमड़ि जयबे करतैकं । राति उत्तर दिश मेघ बड़ गरजल । पहाड़ पर मने खूब बरिसल अछि । आ पहाड़े पर बरिसने परमान धार चलत । काल्हि धरि मोसकिलसँ पटुआ गोड़' जोगर पानि रहैक धारमे । ठेहुन-छाबा मात्र । आइ भोरसँ मुदा धार जगजिआर भेल अछि ।

पानिक खातिर रहबो करै कतेक हाकरोस । चारूकात दूबि जरल । मलमलिआ धत्ता पर बालु उधिआइत । लोकक पटुआ खेतमे ओहिना ठाढ़ रहैक । त' फेर गोड़त कत्त ? एक चूरू पानिक दरस नै कतहु । सभक बीआ-बालि जरैत रहैक ।

लगैक अरदरा बिन बरखे जायत । लच्छन-क्रम सभटा रौदीक धऽ नेने रहैक । मुदा नै । चारिम राति खूब बरिसल । मुसराधार । भरि राति सुपानो झहरल मेघ । मुदा तँइ की ? कतहु लागत जे पानि भेलइए ! बालुक बितान, पानि सोखबामे राकस । हुँ ! धार अवस्से चलल । आ लोकक काज ससरबा जोगर भेलैक । यत्र-तत्र पटुआ गोड़बा जोगर पानि भ' गलैक ।

पटुआ काटि लोक धान रोपत । खेती सहजहिँ पछता भइए गेलैक अइ साल ।

धारक काते ई साबा तीन बिग्हा खेत रहैक सरूपक । अढ़ाइ बिगहाके आइ दू बरखसँ जोति-कोड़ि खेती जोकर बनओलक । अन्दाजन पन्द्रह कट्ठा निछक्का बालु रहैक । झड़-बैर, बबूर आ खयरक जंगलसँ भरल धार दिश नहुड़ैत ।

परसुए अपन पटुआ काटि धारमे गोड़ि चुकल छल । बेस लगलो रहैक । आब धान रोपत अहीमे । मोट दू फसिलक त' आस । सेहो सरग-असरा खेत । मेघक कृपा भेल त' बड़-बेस, ने त' धान बौके रहि जायत ।

एक चास जोतल भऽ गेल रहैक । रौद मगर बड़ तीख उगि गेल रहैक । बसात एकदम गुम्म । उसिनने जाइत रहैक । सरूपक चाकर श्याम पीठ घामे तीतल रहैक । रौदमे चक-चक करैत । घामक टघार कपारसँ नाकक नोक द' चुबै । भंरल-चढ़ल छाती पर घाम टघरि-टघरि चापत पेट पर बँहि डाँड़क धोतीमे सुखैल चलि जाइक । मोन एकदम महुरा गेल रहैक । मुँह लाल स्याह मुदा आँखि ओहिना निश्चल आ स्थिर रहैक । जतेक रौद तबतैक, जतेक घाममे नहा जायत, जतेक मोन माहुर हेतइ, ततेक आर मस्त भय हऽर जोतत । अपन घाम ओ रौदक माहुरमे मगन भय टिटकारलक छोट-छोट बड़दक जोड़ीकेँ ।

बबूरक बिना फारक हऽरसँ बलुआह खेत सुगमतापूर्वक जोतायल जा रहल छल । जतय दूबि कि पटुआक सीरमे ओझरा जाइक हऽर ततय लागनि उठा लैत रहय । पयरमे बलुआह थाल, पटुआक सड़ल डाँट-पात आ उखड़ल खुट्टी यत्र-तत्र अभड़इ । खटहट बड़दक जोड़ी सरूपक ललकार ओ टिटकारीसँ अनासक्त नापल डेगे चलय । चाहबो करी । हऽरक बड़द मन्द- मधुर चालिबला । हेङ्गाक बड़द तेज़, धपगर ।

मेघ दिस तकलक सरूप । धारक ओइपार बबुरबनीमे झिसि आइत रहय । एम्हर मुदा उबेर कयने रहैक ।

हाँजक-हाँज गिद्ध खयर-बनीमे हहा-हहा उतरि रहल छल । बड्ड माल मुइलइए अइ साल । आइए भोरमे हलखोरीक बड़द मरि गेलैक सोनित छेरि क' । बड़द खोलि क' प्राय: अहीठाम खयरबोनीमे छोड़ि देलकैए ।

पानपिआइक चङेरी माथ पर संतुलित धयने अबैत ता अपन भाउज पर नजरि पड़लै । पातर आरि पर भारी देहक द्वारे सम्हारि-सम्हारि डेग दैत । नाम-चाकर देहकेँ झाँपि बाँचल आँचर बसातमे उधिआइत । भाउजकेँ अबैत देखि हऽर ठाढ़ कयलक । बड़दक गरासँ मुन्ही छिटका देलकै । क्षणभरि निस्पन्द ठाढ़ रहि दुनू खयरबन्ना दिस टघंरल नहुँए ।

खेतक आरि पर एकटा कुबड़ाह खयरक गाछ तर बैसि गमछासँ मुँह ओ छातीक घाम पोछलक सरूप । कसल-कसल जाँघ धरि धोती उछेहने रहय । बाँहि आ पाँखुड़ भरल-पुरल रहैक । सभटा सीर जगजियार ।

सोझाँमे पनपिआइक चङेरी बेनी राखि देलकै । मकैक सोन्हगर मोट रोटी, चारि कच्चा काँच पिआजु, एक फाँक आमक अचार आ कनेक नोन । हरिअर मेरचाइ नै सह्य होइक सरूप कें । लोटाक पानिसँ हाथ-मुँह धो चङेरी आगाँक' लेलक । रोटीक एकटा पैघ टुकड़ी तोड़ि अँचारक मसाला मखा मुँहमे धयलक । एक फाँक पिआजु नोन लगा दाँत तर दबलक । झाससँ मोन भरि गेलैक । आँखि नोरसँ आ मुँह सेपसँ सिक्त भ' गेलै । बड़ी काल धरि अँचार ओ पिआजक झाँसमे रोटी चिबबैत रहल । मुँहक कओर घोँटि पानि पीबय लागल ।

अपलक आँखिए बेनी ओकरा दिस तकैत रहै । पानि पिबैत देखि बाजलि एना ढकर-ढकर पानि नइ पीबी खाली पेट मे । चारि कओर पहिने खा ली तखन ।

मुँह मे लोटा लगओने किंचित् मुसकी मारि भाउज दिस तकलक सरूप । फेर लोटा राखि दोसर टुकड़ी खाय लागल ।

–हऽर खोलि देलहक ? किंचिद् चुप रहि बेनी पुछलकै ।

रोटी चिबबैत हुँकारी भरलक सरूप ।

खयर-बनीमे मरल घासकें टोङैत बड़दकें देखलक बेनी । चुप्पे रहलि । फेर ऊँच आरिसँ घेरल अढ़ाइ बीघाक ओइ कोला दिस ताकि निसास छोड़लक ।

जेना राङ गला कानमे ढारि दइक केओ, तहिना भेलैक सरूपकें निसास सुनि । सोझे कोँढ़मे लगलैक । मकैक रोटी गरामे अटकय लगलैक । आइ बरख दिनसँ हजारो खेपी ई निसास सुनने होयत । जाँत-पिसैत काल, पटुआक कमैनी करैत काल, आ कि गुम-चुप ओसाराक खाम्हीसँ ओङठलि बैसलि बेनी एहने निसास छोड़इ ।

सँठिक छेहर टाटकें छेदि, अन्हार घरक अन्हरियाकें छेदि बीघाक-बीघा जजातिक ऊपरसँ लहराइत ई निसास बरोबरि सरूपक करेजा बेधि दैक । जेना बलुआह खेतकें बबूरक हऽर सुगमतापूर्वक छेदि दैत छैक । ताइ काल होइक सरूपकें जे मने-मन जरि क' सुड्डाह भ' जाय । चुप-चाप नहुएँ बरकिकऽ [illegible] उड़ि जाय आ कि कतहु पूब-पच्छिम चलि जाय जतय विषधर सन ई

निसास रहि-रहि एकरा नै कटै । ई निसास नै बहराइ बेनीक हृदयसँ ताहि लेल ओ किछु क' सकैत रहय । अपना हाथेँ अपना देहक खण्डी-खण्डी क' सकैत छल ।

अइ एके बरखमे कतेक एकर भाउज झामरि भ' गेलैए । कहन फुलायल रहै बेनी पहिने, इजोरिया सन । मुँहक गोरका चक्का थल-कमल सन बिहुँसै । छोट-छोट आँखि उल्लासेँ चक-चक करैत । ओइमे सदति काकुव्यंग्य आ बाल-सुलभ चंचलता भरल । से एतबे दिनमे जेना गहन लागि गेल होइक । शोक सन्हिया गेलै । जेना तरे-तर जरि-पजरि क' सुड्डाह भेल जाइत हो । मुँह झामर, आँखि धसल-सन्न । भरि दिन हेड़ायल भोतिआयल सन ।

एके साँसमे लोटाक पानि पीबि गेल । खेतमे पटुआक खुट्टी बिछैत भाउज दिस तकलक । फाटल नूआक तऽरसँ उड़ल-छीटक भटरङ आङी देखाइ ।

हठात् खुट्टीक बिछनाइ छोड़ि बेनी एकरा लग आबि बैसि रहलै । पुछलकै—अहीठाँ रहै लहास पड़ल ने ?

सरूपक सर्वाङ्ग जेना लोहाक तन्तु सन हठात् कड़ा भ' गेलैक । मोन तीत भ' गेलइ । आँखिमे क्रोधक लाल डोरी खिचा गेलै । बाजल—हँ ! अही बबूर तऽर, जइठाँ हम बैसल छी । सौंसे सोनितक धार बहल रहैक । बालु पर जमल । पाँच भाला लागल रहैक. भइआ के ।

क्षण-भरि दूनू चुप रहल । एक दोसराक मोनक भावक थाह लैत ।

फेर स्वर कड़ा क' कहलकै सरूप—की तोँ खाली ई सब सोचत रहै छऽ ?

—नइ सोचइ कहाँ छिअइ । अइठाँ आबि कऽ मोन पड़ि जाइ छइ । डूबल-भासल स्वरमे अन्यमनस्क बेनी बाजलि ।

—मोन पाड़ला सँ फायदा ?

पटुआक एकटा खुट्टी बेनीक हाथमे रहैक । ओकर नोकगर भाग के अपन दहिना तरहत्थीमे बरोबरि गड़ा रहल छल । सरूपक दिस ताकि बिहुँसलि । बाजलि—मोन लोक फायदा लेल पाड़इए आ कि जानि कऽ पाड़इए ? मोन पड़ा जाइ छइ ! आ फेर दीर्घश्वास फेकलक ।

निरूत्तर रहल सरूप । से ठीके मोन पड़ा जाइ छै । पुरुष भऽ कऽ जखन एकरो मोन पड़ि जाइ छै सोनितमे नहायल अपन भाइक निष्प्राण देह तखन बेनी त' सहजहिँ स्त्रीक जाति ।

बेनीक दुखक कारण बहुतो अंशमे अपनाकेँ बुझैत रहय । एकरे जिद्दक खातिर सभटा भेलै ने । बथान-सोधन भेल ई घरमे । कुल-कुड़हड़ि । बाप-माय के सोधि क' बैसल । बेनिओ त' ई कथा अवस्से सोचैत हेतैक ।

बेनी पुनः खेतमे पटुआक खुट्टी बिछैत रहय । सहटि क' सरूप ओकरा लग गेल । नहुँए बाजल भउजी । हमरे कारणेँ भइआ के ओना भेलइ । आ कि नै ? हरदम होइत रहइए जे ओ सभटा आ कि ओहूसँ बहुत बेसी भाला हमरे लागल रहैत । हमही बरू मरि गेल रहितहुँ जे तोरा एतेक दुख नै होइतउ ।

मूड़ी उठा तकलक बेनी सरूप दिस जे दीन-भावेँ एकरा दिस तकैत रहैक । बजबो छैक एकर अनमन गेनबा जकाँ । ओहने मोट आ भारी कण्ठ । आठ बरखक छोट रहैक गेनबासँ मगर उएह साँच-उतार । ओहने चाकर छाती, उएह बाँहि-हाथ, पिण्डश्याम, नाम मुँह, पैघ-पैघ उज्जर आँखि । चाकर कठमस्त देह । बेनीसँ दू तीन बरखक छोट हेतैक सैह की ? बीसम हेतैक सरूपके । मोछक पम्प करिया गेल रहै । अन-मन गेनबाक उतार छैक छँओड़ा । उएह चालि-ढालि, उएह बाजब-बिहुँसब ।

बेनी केँ भेलैक जेना गेना मरि कऽ जीबि गेल होइक आ एकरा आगामे चुक्कीमाली भेल बैसल एकरा दिस टुक-टुक तकैत होइक ।

फेर भक् टुटलैक । सरूपक व्याकुलता पर बड़ा ममता भेलै । ओहिना ओकरा दिस अपलक तकैत करुणाद्र स्वरेँ बाजलि—तोँ एहने बात सोचैत रहइ छह भरि दिन । छीः छीः ।

मोन जुड़ा गेलै सरूपक । आइ कतेको दिनसँ मोन अहुरिया कटैत रहै । आइ व्याकुलता बाहर भेलै । बेनी दिस कृतज्ञताक करुणासँ तकलक । ओहिना जेना कोनो स्तन-पायी शिशु माइक दुधसँ तृप्त भ' विभोर आँखिए माइक मुँह तकैत अछि । अश्वस्त भेल । बेनीकेँ एकरो मुइला उत्तर दुख होइतैक !

किछु काल चुप्प रहि पुछलकै—बिजली नै अयलै ? आ ने माय !

बिजली फुटलो आँखिए ने सोहाइक बेनीकेँ ! दूनू ननदि-भाउजमे तेतरि-केराबक लागि रहैक । काकु-व्यंग्य, विषदग्ध वाक्-वाणक आदान-प्रदान सदति होइत दूनूमे । यद्यपि एम्हर जहिआसँ गेनालाल मुइलैक, दूनूमे एक प्रकारक संधि जकाँ भ' गेल रहैक । घृणा अपन जगह पर छल मुदा ओकर अभिव्यक्ति दृष्टिपातसँ अधिक होइक, बाक्-बाणसँ कम ।

आँखि बेनीक सहजहिँ छोट-छोट रहैक । बिजलीक चर्चासँ आओर गेल भ' गेलैक । बाजलि—किएक् अनठाक' पूछइ छऽ । कलपू मीसर सङ्ग गोल अछि रङ्ग-रभस कर' । ओकरा कोन छैक भाइ-बापक मुइलाक दुख ! भोरे चमकि-दमहिक कऽ गेल अछि अपना इयार लग ।

कलपु-बिजलीक प्रणय-प्रसङ्ग यथेष्ट पुरान भय गेल रहय, गाँव-टोलमे जकर चर्चासँ ककरो कोनो प्रकारक उत्तेजनाक आनन्द नै होइक । तेँ बासि भेल घटाकेँ सह्य कय सब बिसरि गेल छल । सरूपक लेल कोनो नव गप्प नै रहै । भाउजक विरोधो कोनो नब नै । मुदा आइ कने केना दन लगलै । गुम्हड़ल—दिनेक ओकरा दू खण्डी क' काटि देबैक हम ।

भभा कऽ हँसलि बेनी । विषदग्ध हास । बाजलि— गे मइयो ! कहिया पुरुख भेलइ हमर देयोर ? बहिनिक सोझाँ त' तीतल बिलाड़ि बनल रहै छइक । जँ ओ कहइ त' ओकरा कान्ह पर चढ़ा कलपू मीसर लग क' द' अयबहक गऽ ।

बेनीक विषाक्त हँसी आ व्यंग-वाणसँ सरूपक पौरुषकेँ चोट लगलै । गुम्हड़ल—तौं तऽ भउजी आरो...........।

आगाँ किछु नै फुरलै ।

दू बर्ख पूर्व घरक नीक बेजायक जिम्मा सभटा एकरा बाप पर रहैक । एक बर्ख पूर्व धरि एकर जिम्मा गेनालाल पर रहैक । मुदा आब तँ एकरे पर छैक । पुरुख पात्र त' घरमे आब इएह टा बाँचल अछि । घरक मालिक आब त' इएह । एना नै चलतै । सभटा नीक बेजाय एकरे देखय पड़तैक ।

ताही क्षण दूहू माइ-धीक आगमन भेल । अपन नामक प्रतिकूल बिजली श्यामलाङ्गी रहय । छुरिया नाक, धनुखा भँउह आ अँउठिया केश । नामपातरि । बिजली नाम मगर आँखिसँ सार्थक होइक । आमक फाँक सन चीरल आँखि, पुतरी सदति चंचल । चक-चक करैत एकटा लाल नूआ आ पीअर छींटक कसल आङी पहिरने ।

एक नजरि भाय-भाउजि पर फेकि नूआ सम्हारि बेनीक लग बैसलि आ पटुआक खुट्टी ओलय लागलि ।

भ्रूकुंचित दृष्टिएँ तकलक ननदि दिस बेनी । बनलि ठनलि बेलज्जी । कलपू-मिसरक ओतय माथमे गमकौआ तेल पचओलक अछि । मह-मह करइए फूलक गाछ जकाँ बेलज्ली ।

पातर स्वरें बाजलि-कथी लेल हरान होइ छऽ ? खुट्टी गड़तऽ ।

—हमरा पर एतेक दरेग कहियासँ भेल' । एक-एकटा आखरके चिबा-चिबा बाजलि बिजली ।

एतबा काल धरि सरूप चुप बैसल छल अपन पौरुषक दर्पसँ दीपित । बिजलीक गप्प सूनि यथासाध्य गम्भीर स्वरें बाजल—कहाँ गेल रहें बिजुलिया ?. ....तोरे पुछइ छिअउ ?

चौकलि बिजली ।

भाउजक व्यंग्य साधारण-भावें सूनि नेन रहय । मुदा सरूपक स्वर आ प्रश्न एकदम अनचिन्हार लगलैक । पुछनिहार एकरासँ चारि बरखक छोट भाइ जकरा कोर-काँख नेने रहय । आश्चर्यित भ' भाइ दिस तकलक जे एकटा नवीन तेजसँ जरैत आँखिएँ एकरा दिस तकैत रहैक । एकर मतलब की ? प्रकटमे कलपू मिसरक ओतय गोबर-करसी करय गेल रहय ।

भाउज दिस तकलक । ओ चुप-चाप पटुआक खुट्टी बीछ'मे तन्मय रहय । क्रम-पात, हमर दोख नै । सोचलकं बिजली । एकरे सबटा किरदानी छैक, सुइ-मुँहीक । भरि-दिन हमरे अदगोइ-बिदगोइ करैत रहैए । सरूपाकें एखन खूब पिजा कऽ रखने अछि ।

माय दिस तकलक बेनी । सरूपाक मायक मुँह अनवरत भय आ दुख सहबाक कारणें एकदम भावहीन रहैक । तामक रंगसँ मुँहक चाम पर दुख ओ क्लेशक अनेक रेख रहैक । आँखि धूँआ सन सदति अर्थहीन । धीआपूताक गड़ामे ताधरि दखल नै दैत रहय जाधरि मारि-पीट किंवा गारा-गारीक स्थिति नै आबि जाइक । समस्त व्यापारकें चुप-चाप अनासक्त भावें देखि रहल अछि ।

फेर भाइ दिस तकलक बिजली, क्रुद्ध साँढ़ जकाँ जकर दूनू पूरा फड़कैत रहैक ।

बाजलि—हँ ! भउजी एतबा कालसँ बेकार नइँ बइसल रहए । सरूपाकें बेस पिजा कऽ रखने अछि ।

—फेर भउजी के किछु कहलही त' बूझि राख । कतऽ गेलि रहें ? जबाव दे । सरूपक हाथ हरबाही पेना पर रहैक ।

माय दिस स्थिर-दृष्टिएँ तकलक । सदति नाच' बाली पुतरी एकदम स्थिर

रहैक सरूप पर। आमक फाँक सन आँखि गोल भेल, मुँह पर व्यंग्यक भाव नहुँए पुछलकै—जबाव तलब कर' बला तों के रे ?

एकसरमे चारि-चोट मरबो कयने रहितै बिजली त' किछु बाजबाक साहस ने होइतैक। मुदा बेनीक सोझाँ एहि आघातसँ तिलमिला गेल।

हाथमे पेना नेने आधा उठल !

पाथरक मूरुत जकाँ बिजली ओहिना अचल रहलि। पपनिञो ने खसलै। अपन सहोदरक नवीन पौरुषकेँ व्यंग्य विद्रूपसँ देखैत रहलि।

खेतक कोनसँ माय सभटा देखैत रहैक। ताम्रवर्ण मुँह पर दू-चारि नव रेख बनलैक। आँखिक धुआँ कनेक गाढ़ भेलै। टोकलकै—सरूपा !

घरक हाइ-कमाण्ड एखन धरि इएह रहय। अइ टोकमे कोनो तेहन शक्ति रहैक जकरा नेनहिसँ मानबाक संस्कार जमि गेल रहैक। कोनो अनट-बिनट काज करैत काल, कोनो अनुचित करैत काल, इएह टोक नेनासँ सुनने रहय। आ तकर बाद फेर आगाँ किछु कहबाक आ कि करबाक साहस कहियो ने होइक। आइयो ने भेलैक। नवीन पौरुषक दर्प उतरि गेलैक। हठात् घोर लज्जा घेरि लेलकै। माइक सोझाँ अपन पौरुषक प्रदर्शनसँ बड़ संकोच भेलै। थस्स दऽ बैसि गेल।

थोड़ेक काल सरूपकेँ ओहिना देखैत रहलि बिजली। ठोर पर व्यंग्यक पातिर रेख पसरि गेलै। भाउज दिस ताकि बाजलि—एहन आर सिखब' पड़त' सरूपाकेँ।

—सिखा देबइ। धीरे-धीरे सिखतइ। ओहिना शांत स्वरेँ बेनी बाजलि।

आरि पर बैसलि माय घोपलकै बिजलीकेँ—गय, चुप ने रह अलगी !

—बुढ़ियो ! हम खूब चिन्हैत छिअह तोरा। बेटा-पुतहुक पक्छ त' लेबे करबह। हाथ चमका चिकरलि बिजली।

फेर बिहाड़ि जकाँ उठि बिदा भेलि। आङन दिस। डाँड़सँ नीचा लटकैत ओकर कारी केशक मोट जुट्टी क्रुद्ध सर्पिणी जकाँ लहराइत रहैक। बहिनकेँ जाइत देखलक सरूप।

मोन खिन्न भ' गेलैक। मालिक ने, सुथनी अछि ई ! ओम्हरसँ माय मोट ठोँठ ल' क' उठैत। ओम्हरसँ बहिन आँखि गुड़ड़ै। ओम्हरसँ भाउज व्यंग्य करै। एकटा फाजिल बड़द टा अछि ई। आर किछु ने ! आ भाग केहन भेलइ !

ने त' कोन फिकिर रहइ एकरा ? दू बरस पहिने बिसेखी; एकर बाप, जहलमे मरि गेलैक । बापोसँ बाढ़ि जेठ भाय गेनबा परुकाँ हसेरीमे मारल गेलै । एही खेतमे ।

उठल । हऽर कान्ह पर टाङि पयनासँ आस दैत घर दिस चलल ।

मेघ डबकल आबि रहल छलैक । खयरबनीमे मऽरी खाय काल गिद्ध सभ लड़ाइ करैत छल ।

दू

जिला पूर्णिञा । मौजा जितपुर–टोल बबुर-बन्ना ।

एकर नाम टोले बबुर-बन्ना किएक पड़लै, कहनाइ कठिन । खयरबन्ना नाम सेहो पड़ि सकैत रहै, कारण, चारूकात खयरक बड़ जंगल रहैक । बबुरक काँट पैघ होइछ, नाम-नाम, उज्जर । सहजेँ दृष्टि आकृष्ट क' लै । तेँ प्राय: खयरक संख्या अधिक रहलो उत्तर नाम रहैक बबुर-बन्ना ।

परमान धारक कछेड़ पर बसल रहय ई टोल । ई धार कोसीक छाड़नि थिक । कहिओ एहि बाटेँ कोसिका महरानीक सम्मुख धार रहनि । मुदा आब त' दस-बारह कोस पश्चिम हँटि गेल छथि । धार बेस उत्थर अछि । किछेड़-किछेड़मे ठाम-ठिम लोक जजातिओ उपजा लैछ । गरमीमे एकदम सुखा जाइत छैक । मुदा वर्षा होइत देरी उमड़ि जाइछ । टोलक दक्षिण धारमे एकटा मोनि रहय, विराट्काय, माछसँ भरल ।

टोलक चारूकात पट-पट समतल बाध सब–बालुसँ जकरा भरि कोसी हँटल रहथि । दूर-दूर धरि समतल मैदान क्षितिजसँ ठेकल । इएह थिक मलमलिया धत्ता जाइ पर बालुक चानी पीटल अछि, जे मल-मल जकाँ रौदमे चक-चक करैछ ! समतलक एहि विराट प्रसारमे यत्र-तत्र खयर बबुरक झोप-सब छिड़िआयल । ठाम-ठीम आमक कलम-बाग भेटत, मुदा सब नवगछुली । दस बरखक भितरेक लगाओल । पुरान गाछी-बिरछी नै भेटत । कोशीक विनाशकारी बंध्या बालु पोखरि इनारकेँ मथि देने रहैक । बबुरबन्नासँ सटले उत्तर छल जितपुर आ तकर पश्चिम छल झँगड़ाही । झँगड़ाही माने आदिवासी झाङड़ लोकनिक टोल ।

सप्ताहमे दू दिन लागयबला परबाहा हाट दू कोस पूब छल । आ फारबिसगंज रेलवे पड़ैक पाँच कोस पक्का ।

ो जमींदारी उन्मूलन भेल । पूर्णिआमे सर्वे आयल । आ पछिला सर्वे
ामसँ थोड़ बहुत खेतक खाता खुजलै । अपन-अपन बास-भूमि भेलै ।
तीन बीघा क' खेत सभकें भेटलैक ।

न स्वामित्त्व भेला उत्तर पहिल बेर भूमिसँ ममता आ सम्बन्ध भेलैक एहि
परिवार सबकें । परती-पराँटक छाती चीरि चीरि मकइ, कुरथी, चना
कि पापड़ मूड़ी उठओलक ?

क एकदम पुबरिया छोर पर घर रहैक बिसेखी पासमानक । दलान पर
दमक नवगछुली रहैक । पातर धऽड़, उपर एकाएक छत्ता जकाँ ! गाछ
क खाम्ही आ पातर-पातर बातीक मचान बान्हल । उठइ-बैसइ लेल

लुकझुक करैत छल । गाछतर अन्यमनस्क भेल बिसेखी बैसल रहय
छु खसल रहैक । क्रम पात कोनो वस्तु हड़ाय गेल होइक ।

खी अइ इलाकाक माशूल चोर रहय । सेनिअर चोर, सी क्लासक बी०
। अर्थात् 'बैड कैरेक्टर' । जकर नाम थानाक बी० सी० लिस्टमे रहैक
रियामे बीटक सिपाही जकर हाजरी लैक । आस-पास चोरी भेला पर
ल जाय संदेहमे; फेर छोड़ल जाय गबाहीक अभावमे ।

-काठसँ सक्कत, मजगूत । पचपनक धकमे पहुँचल । छोटे काठीक
जवान । चनैल, मुदा चारूकात घनगर केशक मगजी । श्यामवर्ण
कुइर आँखि, बिलाइ जकाँ स्थिर, अचंचल आ क्रूर ।

मे तमाकूक टिकिया रहै । रखले रहलै बड़ी काल धरि ।

टोकलकै—काका, ...हओ काका !

रे ? जेना भक् टुटलै बिसेखीक । तमाकूक कारी टिकिया बढ़ा
, चुना ।

ओकर अन्यतम चेला छलैक । प्रिय-पात्र । दहिना हाथ । पातर-कारी,
छत्तर बिसेखीक कृपासँ सिद्धहस्त चोर भय सकल छल । काग सन
बिलाइ सन निःशब्द पदचाप, गिद्ध सन दिव्य-दृष्टि, सेन्ह काटक
, मोट्रा लादि भागऽमे फुरती, आ सबसँ पैघ मुँह पर भय ओ आशंकाक
ाव । बिसेखीक अपन चेला पर बड़ गर्व रहैक । ने गेनबा पर सिनेह
सरूपे पर । बिजलियोकें प्राणसँ बढ़ि मानय मुदा अपन कलाक
उत्तराधिकारी छलैकें बुझय ।

बबुर-बन्ना तीस-पैंतीस घरक छोटे टोल रहय । बीस घर दुसाध लोकनि रहथि, दस घर मुसहर ।

कनेक फराक हँटि क' तीन घर यादव-बन्धु । जेना एके कंतोड़क तीनटा फूट-फूट खाना होथि । खीराक जेना तीनटा फाँक होथि, ऊपरसँ एक मुदा भीतर-भीतर तीन फूट खण्डमे विभाजित । एकसँ दोसरकेँ कोनोटा सम्बन्ध नहि । अपन-अपन संस्कार ओ सामाजिक मान्यताक लक्ष्मण-रेखामे घेरल ।

एकोटा घर पक्काक नै रहै टोल मे । सब फूसक । संठीक टाटसँ घेरल आङन, ओइ पर लतरल सीम, सजमनि, आ कि परोड़क हरियर-हरियर लत्ती।

आस्था ओ विभाक अनुकूले घरक ऊँचाई कि सरंजाम । यादव-बन्धु लोकनिक घर बेस ऊँच । बास-भूमि बेस अइल-फइल । सखुआक निस्सन मोट-मोट खाम्ह, बाँसमँ सीटल जाफरी, मोट खढ़सँ छारल । चौखरा दलान, बड़दक गोही, रहबाक पैघ-पैघ घर । बाँसक जाफरीक एतेक विलक्षण कारीगरी अन्यत्र भेटनाइ कठिन । ई एतुक्का विशेषता थिक ।

दुसांध लोकनिक घर खट-हट । छोटे-छोटे मुदा चिक्कन-चुनमुन बाड़ीमे केरा, एक बीट बाँस, कि एकाध-टा नवगछुली आम ।

मुसहर लोकनिक घर एकदम बाओन । छोट-छोट घर । बाँसक फट्टक लागल । ने बाड़ीमे तऽर-तरकारी ने आङनक टाट पर घेरा-सीम-झिमनीक लत्तीक हरियरी ।

ई टोल जितपुरक जंगबहादुर बाबूक जमींदारीमे रहय पहिने । यादव बन्धुकेँ छोड़ि समस्त टोल भूमिहीन रहय पहिने । दुसाध-मुसहर लोकनि मालिकक जऽन बनिहार रहय । मालिक सबमे जखन् आपसी बाँट होइक त' सम्पत्तिक संग जऽनोक बाँट होइक । लोकक जीविकाक साधन रहैक मजूरी आ चोरी । एहि टोलक चोर परोपट्टामे प्रसिद्ध रहथि । दूर-दूर धरि जा' क' चोरी करथि । कौखन यत्र-तत्र बटाइओ करथि । खेती जोग भूमि रहबो करइ बड़ थोड़ । खेती बड्ड महनतिया । खढ़सँ भरल बलुआह खेतमे जजाति उपजओनाइ बालुसँ तेल पेरनाइ सन । खढ़क सोर पताल ठेकल । एहि साल उपटा दियऊ फेर दोबरी दोसर साल जागि जायत एहि भूमिहीन परिवार सबकेँ अपन बासडीहो नहि रहनि ।

मुदा जमींदारी उन्मूलन भेल । पूर्णिआमे सर्वे आयल । आ पछिला सर्वे सभक नामसँ थोड़ बहुत खेतक खाता खुजलै । अपन-अपन बास-भूमि भेलै । दू-बीघा तीन बीघा क' खेत सभकेँ भेटलैक ।

अपन स्वामित्व भेला उत्तर पहिल बेर भूमिसँ ममता आ सम्बन्ध भेलैक एहि भूमिहीन परिवार सबकेँ । परती-पराँटक छाती चीरि चीरि मकइ, कुरथी, चन्ना, पाट आ कि पापड़ मूड़ी उठओलक ?

टोलक एकदम पुबरिया छोर पर घर रहैक बिसेखी पासमानक । दलान पर एकटा कदमक नवगछुली रहैक । पातर धऽड़, उपर एकाएक छत्ता जकाँ ! गाछ तर बाँसक खाम्ही आ पातर-पातर बातीक मचान बान्हल । उठइ-बैसइ लेल

बेर लुकझुक करैत छल । गाछतर अन्यमनस्क भेल बिसेखी बैसल रहय । मोन किछु खसल रहैक । क्रम पात कोनो वस्तु हड़ाय गेल होइक ।

बिसेखी अइ इलाकाक माशूल चोर रहय । सेनिअर चोर, सी क्लासक बी० सी० रहय । अर्थात् 'बैड कैरेक्टर' । जकर नाम थानाक बी० सी० लिस्टमे रहैक . आ अन्हरियामे बीटक सिपाही जकर हाजरी लैक । आस-पास चोरी भेला पर जे पकड़ल जाय संदेहमे; फेर छोड़ल जाय गबाहीक अभावमे ।

हाड़-काठसँ सक्कत, मजगूत । पचपनक धकमे पहुँचल । छोटे काठीक कठमस्त जवान । चनैल, मुदा चारूकात घनगर केशक मगजी । श्यामवर्ण । गोल-गोल कुइर आँखि, बिलाइ जकाँ स्थिर, अचंचल आ क्रूर ।

हाथमे तमाकूक टिकिया रहै । रखले रहलै बड़ी काल धरि ।

छत्तर टोकलकै—काका, ...हओ काका !

—की रे ? जेना भक् टुटलै बिसेखीक । तमाकूक कारी टिकिया बढ़ा बाजल—ले, चुना ।

छत्तर ओकर अन्यतम चेला छलैक । प्रिय-पात्र । दहिना हाथ । पातर-कारी, नाट, एकाक्ष छत्तर बिसेखीक कृपासँ सिद्धहस्त चोर भय सकल छल । काग सन सतर्कता, बिलाइ सन निःशब्द पदचाप, गिद्ध सन दिव्य-दृष्टि, सेन्ह काटक हस्तलाघव, मोटा लादि भागऽमे फुरती, आ सबसँ पैघ मुँह पर भय ओ आशंकाक सर्वथा अभाव । बिसेखीक अपन चेला पर बड़ गर्व रहैक । ने गेनबा पर सिनेह रहैक आ ने सरुपे पर । बिजलियोकेँ प्राणसँ बढ़ि मानय मुदा अपन कलाक एकमात्र उत्तराधिकारी छत्तरेकेँ बूझय ।

गेनबा सहजहिँ बकलेल भेलैक । पाँच-हाथ नम्मा, तेहने बिशालकाय । एकदम शुद्ध । छओ-पाँचसँ कोनो मतलब नहि । पाड़ा जकाँ खटयवला । सरूपा महाग उदण्ड । बिसेखीकेँ सन्देह होइक जे चौदह बरखक ई छँओड़ा ओकरासँ मने-मन घृणा ने करैत होइक ! चोरीक वस्तु-जातक प्रतिएँ घृणा ओ चोरीक आयोजनक नि:शब्द विरोध देखि बिसेखीक मन छोट भय जाइक । कोना अइ दूनूक गुजर चलतै बिसेखीक परोक्ष भेला पर तकर चिन्ता घेरि लैक। हँ, बिजलिआ जँ बेटा रहितैक त' अबस्से एकटा आशा रहितैक । मुदा धी-बेटीक कोन आशा, अनकर लोकबेद ।

मुदा आइ अहू सभहिक चिन्ता नै रहैक । अपन जीविकाकेँ तिलांजलि दइए चुकल छल आइ ।

तमाकू बढ़ा पुछलैक छत्तर-की सोचै छहक काका ?

मुसकीक लहरि आँखिक गम्भीरताकेँ धो-पखारि देलकै । बाजल-कहाँ किछु रे !

आइ बिसेखीक नाम थानाक बी० सी० लिस्टसँ कटल रहैक । सिनेमाक रील जकाँ आजुक घटना सभटा मोनमे घूमि गेलैक ।

गाममे मिडिल स्कूलक हातामे बड़का समिआना टाङल गेल रहैक । चौकी, जोड़ि-जोड़ि मचान बनाओल गेल रहैक । ताइ परसँ बरहत्था सतरंजी, जाजिम । ताहू परसँ टेबुल-कुरसी सजाओल ।

समिआनामे चारू कात झंडी पताखा बान्हल । स्कूल फाटक लग अशोकपात सँ सजाओल एकटा मेहराव रहैक । चारि दिनसँ मालिक अपस्याँत रहैक । कोना ने ? गाममे पहिल बेर इसपी साहेब अबैत छैक । दरोगाजीक कड़ा हूकुम रहैक। फोनू-गिलासमे बड़का भोंमा लगाक' स्कूलक चार पर बान्हल रहैक । भोरसँ रेकट गनगनाइ । दस रुपैआ घंटा पर फारबिसगंजसँ मालिक मँगओने रहैक । आइ इलाकाक बी० सी० सभक परेड हेतैक । बूढ़ आ बेकार बी० सी० सभक नाम इसपी साहेब काटि देतैक । आब अन्हरियामे ओकरा सभक हाजरी नै हेतैक ।

सौंसे थानाक बी० सी० सब जुटल रहय । घूरन दुसाध, मंगर पाण्डे, खख्खन जट्ट, रौदी खलीफा, बुच्ची झा । गामक बाबू-भइया सब उपस्थित रहथि । इलाकाक लोक तमाशा देख' लेल उपस्थित रहय । लाल-लाल मुरेठा बन्हने दफेदार सब, नील मुरेठा आ हाथमे लाठी नेने चौकीदार सब चारूकात ठाढ़ छल ।

पुरनिआसँ इसपी साहेब अयलैक । परबाहा हाट धरि अपन मोटरगाड़ीसँ आ तकर बाद महिन्दर बिराजीक हाथीसँ ।

पहिने हरमुनियम पर तीन टा छँओड़ा गाना गाबि इसपी साहेबकेँ माला पहिरओलकै । फेर मालिक भोँमा पर बजलै । उचिती-मिनती केलकै ।

तकर बाद इसपी साहेब भासन केलकै जे चोरी केँनाइ खराब काज थिक । लोकक जनम भेलइए काज-उद्यम क'क' गुजर करबा लेल, ने कि अनकर धन-माल हरन करबा लेल । इमानदारीसँ खेती-बेबसाय क' जीवा लेल । जँ काज-उद्यम छोड़ि सभ चोरी-डकैती करय लागत त' चोरि करबा जोगर चीज कतय भेटतैक ।

से की सटीक गप्प कहलकै । बाह रे बाह ! तकरा बाद पुकार भेलइ खब्खन जट्टक । बूढ, झूकल डाँड़ आ पाकल केशबला खखना हाथ जोड़ि इसपी साहेबक सोझाँ ठाढ़ भेल मुदा इसपी साहेब ओकरा अपना लग राखल एकटा खाली कुर्सी पर बैसा लेलथिन ।

फेर लोक दिस ताकि बजलाह–देखू, ई अहाँ लोकनिक सोझाँ खख्खन जट्ट छथि । आइ तारिखसँ नीक लोकक जीवन बितयबाक प्रतिज्ञा करैत छथि । अहाँ लोकनिक कर्त्तव्य थिक जे हिनका जीवन बितयबामे सहायता करिअनि । फेर खख्खन ठाढ़ भेल । लोक दिस हाथ जोड़ि बाजल–हम अहाँ लोकनिक आगाँ सपथ खाइत छी जे आइ दिनसँ भला आदमीक जीवन बितायब । कोनो गैर-कानूनी नै करब । ईश्वर हमर मदति करथि ।

एके साँसमे रटलाहा कहि गेल खखना । एक पतिआनीसँ बैसल बी० सी० सब मने-मन हँसल छल । ई खखना बड़ तेज । डाँड़ केना धुत्थूड़ बूढ़ जकाँ झुका लेलक अछि, आ आँखि जे मिलमिलबैए जेना नै सुझैत होइक ।

तकरा बाद घूरन दुसाध, मंगर पाण्डे आ रौदी खलीफा सपथ खयलनि ।

एकर बाद पुकार भेलैक–बिसेखी पासवान । चौकीक बनल मचान पर जखन चढ़य लागल बिसेखी त' टाङ थरथरा गेलैक एक बेर ।

फेर इसपी साहेबकेँ लऽगसँ देखलक । गोर-नार । खाकीक उरदी । टोप आ डंटा टेबुल पर सरिआ क' राखल । कारी-कारी थकड़ल बाबरी । मोछ-दाढ़ी चिक्कन । पैघ आँखिमे दया आ अक्लिमन्दी । टुक-टुक बिसेखी दिस तकैत । बड़ दीब लगलै मुँह । आइ धरि इसपीकेँ सोझाँ-सोझी एना नै देखने रहय । नाम

सुनि सदति एकटा अव्यक्त भयक संचार होइक । बड़ा भयंकर मोँछ-युक्त क्रूर आकृतिक कल्पना कयने छल । इसपी शब्दक स्मरणसँ एकरा बरोबरि तरुआरिक चमकैत धार कि बन्दुकसँ छूटल गोली मोन पड़ि जाइक । किछु दुर्दान्त, किछु भयावह ।

मुदा आइ लगसँ देखला पर आनन्द आ आश्चर्य भेलै । एकोरत्ती डेराओन मुँह नै, डेराओन मुँह त' रहैक जमेदार साहेबक । बयसो त' थोड़े रहैक । बड़ बहुत त' अठाइस-तीस । गेनबेक बतारी तँ हेतै ।

जखन शपथ खयबाक बारी अयलैक त' ठाढ़ भेल आ लोकसब दिस तकलक । चारूकात मूड़-पर-मूड़ । सभक आँखि एकरे पर स्थिर । सहस्त्र आँखिक निश्चल तेजसँ बिसेखी हतप्रभ भ' गेल । जन्मजात रतिचर रहय । तिन्द्रा निमग्न मूनल आँखिबला मुँहक सहज भावसँ अभ्यस्त रहय । मुदा ई दिन-दुपहरिया एतेक-एतेक जाग्रत मुँहक सचेत आँखिक आगाँ भय-जड़ित भ' गेल ।

देह सिहरि गेलैक । कण्ठ सुखा गेलैक ।...........हम शपथ खाइत छी ....। आगाँ बोल नै फुटलै ।

निट्ठाह बिसरि गेल । माथ पर घाम चुह-चुह गेलैक । कातमे ठाढ़ दरोगाजी पर नजरि पड़लै जे भ्रू-कुंचित दृष्टिए एकरा तकैत रहथिन ।

हठात् दीन भावे कोमल मुँह बला इसपी साहेब दिस तकलक । हुनक मुँह पर सहानुभूति रहनि ।

मृदु स्वरे बजलाह–घबड़ाउ जुनि । कथीक शपथ लैत छी से बाजू ।

जनसमुदायमे हंसीक लहरि दौड़ि गेल । बिसेखीक दीनता आहत अभियानमे बदलि गेलै । मुँह तमतमा गेलै । सब एकरे पर हंसइ छलै । नीचामे बैसल सरुपा पर नजरि गेलै जे कठ-हँसी हँसि एकरा दिस ताकि रहल छलै । हठात् क्रुद्ध भेल ।

आत्माक समस्त शक्ति समेटि स्थिर स्वरेँ बाजल चिकरि क'–आइ तारीखसँ चोरि नइ करब सूनि राख' लोक सब । जानय कोसिका महरानी ।

मोनक सत्यसँ प्रेरित एहि अटपटाह शपथक अत्यन्त मार्मिक प्रभाव पड़ल । हँसैत समुदाय हठात् स्तब्ध भेल । एहि माशूल चोरक स्पष्ट प्रतिज्ञा विस्मित भ' सब सुनलक । साफ-साफ कहलकै, आइ दिनसँ चोरि·नै करब ।

एक क्षण सब चुप रहल ।

बिसेखीक मुँह पर गर्वक दीप्ति रहैक । सरूपा दिस तकलक जे प्रफुल्ल भावेँ एकरा दिस तकैत रहैक आँखिमे आदरक नवीन भाव नेने ।

एकर पीठ पर हाथ राखि इसपी साहेब कहने रहथिन–हमरा पूरा विश्वास अछि, अहाँक शपथ सभसँ पक्का अछि ।

आ तकरा बाद जन समुदायक थपड़ी । तड़-तड़-तड़ । ककरो शपथमे लोक थपड़ी बजा हर्ष नै प्रकट कयने छल ।

फेर बेटा दिस तकने रहय बिसेखी जे एकरा मुग्ध आँखिएँ देखैत रहैक । जीवनमे पहिल बेर भेलै जेना ककरो ई बाप रहय ।

मने छतरो इएह सिनेमा देखि रहल हो । बाजल–कका । तोरा कोना बिसरि गेलह ? रास्तामे तो ओतेक बेर सुना देने रहह ।

संकोच भेलै बिसेखीके । बाजल–कि जान' गेलियै । रे, ओइ मचान पर ठाढ़ भेला पर मोन घड़बड़ा गेल; टाङ थरथरा गेल । कण्ठ सुखा गेल । मने केओ फाँसी घिचने जा रहल हो । हमरा त' अक-बक लागि गेल रहय । सरूपाकेँ नइ देखितिअइ त' हमर बोली नै फुटैत । अइ छँओड़बाक मुँह देखलिअइ त' आर लाज भेल । एकर कठायल मुँह देखि बड़ तामस भेल ।

फेर कने चुप रहि बाजल असलमे पूछ' त' मोनसँ इयाद नइ केने रहिअइ । थाना पर आठ-दस दिन पहिनेसँ दरोगाजी रिहलसल केने रहइ । मुदा हम सोचिअइ, धुत् ओहिना सपथ खा लेबइ । ई बी० सी० सँ नाम कटय आ अन्हरिआक हाजरीसँ बाँची, धंधा त' चलबे करतै ।

छत्तरके औखन इएह विश्वास रहैक । बाजल–हँ, से त' चलबे करतैक ।

चौँकल बिसेखी । छतरा दिस आँखि गुड़ाड़ि तकलकै । फेर बाजल–खबरदार ! किरिया जे खेलिअइ से की ?

अध-रौदमे बैसल सरूपा सुतरी बँटैत रहय । बापक प्रतिज्ञासँ आइ मोन प्रसन्न रहैक । मुदा छत्तर पर बरोबरि क्रोध रहैक अकारण । देखू, एखनो मेहिया-मेहिया गप्प करैए । फेर बाबूकेँ कहुँ ने ल' जाइ अनट-बिनट काजमे।

एतबा काल छत्तर गुम्म-चुप्प रहय । हठात् उत्साहित भ' बाजल– बेस, तखन आइ तारीखसँ हमहूँ कान-कनैठी लैत छी ।

सरूपक मोन हर्ष नाचि उठलै । ठीके बाबू कहै छै जे छत्तर हमर पकिया चेला थिक । से बाबू छोड़लकै त' इहो तेयागि देलकै । ई त' कोनो सपत नै खयने रहय ।

सुतरीक लटबा जोरसँ नचा बाजल– बाबू हओ, तोरा जखन बिसरि गेलह, हमरा बड्ड लाज भेल । तामसो भेल तोरा पर । मोनमे भेल जे तोरा सती हमही ओत' जा क' सप्पत खा लिअइ ।

बिसेखी किछु नै बाजल । ओहिना सरूपा दिस तकैत रहल । छत्तरा हँसल ।

फेर सरूप बाजल–एँ हो तोरा सती हम जे सपथ खइतिअइ त' से मानितइ इसपी साहेब ?

–कि जान' गेलिअइ ? बाजल बिसेखी ।

– आ तो मानितहक बाबू ? माने जँ हम सपत खा लितिअइ ओइठाँ तोरा लेल त' तो ओकरा सपत मानितहक ? शंकित स्वरें पुछलक सरूप अपन बापकेँ ।

एतबा काल बेटा दिस प्रेम विह्वल आँखिएँ तकैत रहय बिसेखी मुदा आब नै ताकि भेलै ओकर चक-चक करैत आँखि दिस । नजरि फिरा लेलक । किछु जबाब द' छँओड़ाकेँ परतारबाक मोन नै भेलैक । ठीके ने पुछलकै–ई मानितइ ? मुइलाक बाद बेटा श्राद्ध करैत छैक । पिंडा पाड़ै छै जे बापकेँ सद्गति होइ । जिबितो मे बापकेँ सद्गति देबाले' जे नीक सपथ खयतैक से बाप किएक ने मानितै ?

सरूप दिस तकलक । कुइर आँखि शांत ओ स्थिर रहैक । गम्भीर स्वरमे बाजल–हँ, मानि लितियैक ।

सरूपक प्राण जुड़ा गेलै । सुतरीक लटबा जोरसँ नचा बाजल–त' आब त' साढ़े तीन बिगहा अपन खेत भेलैक । पड़तीकेँ तोड़ि क' अपन लोक लागत । गुजर करत ।

भभा क' हँसल बिसेखी–रे, पचास बिगहा बला के त' पहिने साल भरिक खरची जुटि जाउक अइ गाममे ।

सरूपक उत्साह नै टुटलै, बाजल–इह देखहक त' जगरनाथी काकाके कतेक चन्नी लागल छैक एक बिगहामे । आइए कटलैए । हम कहैत रहियै, अपना खेतमे अइबर चन्नी बुनि दहक त' भइया नै केलकै ।

छत्तर बाजल–हँ, चन्नी-पाट त' कमजोरो माटिमे हेतैक । धारक कातबला खेतमे चन्नी हेतै खूब ।

गम्भीर भए बिसेखी बाजल–अरे एखन कोन छैक ओइ जमीनक ठूआ-ठेकान। लड़ाइ चलिते छैक । सुनलिअइए जे सभ पर मालिक अदालती नालिश करतै। आ कहाँदन मुसहरीमे सुनै छियै सब जमीन सुपुर्दी करबा लेल मालिकके तैयार भ' गेलैए ।

–झुट्ठ हओ, झुट्ठे ! सभटा हल्ला छैक । मालिकक सभठा पओलीसी छै जे मुसहरीक नाम सुनि दुसधटोली सुपुर्दी कय देत जमीन । के सुपुर्दी करतै ग' जमीन । सर्वेमे जखन सभक नामे खाता खुजलैए त' केओ जजातिओ ने बाँटि देतैक । देखिहअक ।–सरुपा सरोष बाजल ।

देखा चाही की-की होइ छै । एखन त' जै रंगक मुँह तै रंगक बात । दीर्घ-श्वास ल' छत्तर बाजल । ओकरा डेढ़ बीघा 'सीकमी-बटाइदार' दर्ज भेल रहै सर्वेमे ।

बिसेखी पुछलकै–गेनबा नै एलउए ?

–नै, कलपू मिसरक पटुआ कटइ छइ ।

ता आङनसँ कानब सुनलक । समवेत स्वरमे । साकांक्ष भेल बिसेखी । अकानि देखलक ।

बिजलीक कानब रहैक ।

फेर भागि अयलै मने ई छँउड़ी सासुरसँ । ई तेसर खेपी भगलैए छँउड़ी तीन बरखमे ।

सरूपा बाजल–बिजलिया एलै । आ दौगल आंङन दिस ।

छत्तर कहलकै–काका, बिजलियाक बास नै हेतै ओइ घरमे । अइ हर-हर खट-खटसँ हमर विचार जे छौ-नौ भ' जाइ ।

नै किछु बाजल बिसेखी । चुप्पे रहल । माथ पर चिंताक रेख पड़ि गेलै ।

चुप-चाप उठि माँझ आङनमे ठाढ़ भेल । पुतहु खाम्हक ओट भ' गेलै माथ पर नूआ खीचि ।

माइक गरा ध' कनैत रहय बिजली । कारी झामर मुँह रहैक । मैल-फ़ाटल एकटा नुआ पहिरनमे । आठ कोस पैदल चलबाक झमारसँ आँखि धसल । ठोर पर फिफरी पड़ल ।

बापकेँ देखि दौगलि ।

भरि पाँज ध' कानय लागलि हिचकि-हिचकि ।

नि:शब्द ।

संसारमे सभसँ प्रिय अपन बेटी बिजली रहैक बिसेखीके । ओकर देहक दशा आ आँखिक नोर देखि आँखिमे सोनित जमा भ' गेलैक ।

बिजलीक रुच्छ, ओझरायल केश पर नहुँए हाथ फेरैत बाजल–बिजो....... बिजो.............बिजो बेटा ! आ अपनो आँखि भरि गेलैक ।

बिजली चूप भेलि । हिचकी मुदा जारी रहैक ।

डेउढ़ी पर टोलक स्त्रीगण सब जमा भेल जाइत रहय ।

तीन

बिजलीक आगमनसँ घरमे एकटा नव परिस्थिति आयल । परिवारक सहज स्वच्छ प्रवाह, क्रमपात, भउरी देमय लागल हो । सभक मुँह पर गम्भीरता ओ आशंका रहैक । तीन बरखक सासुरबासमे ई तेसर खेपी भागि-पड़ा क' नैहर आयलि रहय ।

बिसेखी गम्भीर रहय । बिजलीक माय गुम-सुम चिंतातुर । एक बेर उन्नैस बरखक अपन बेटीकेँ देखय जे वयसक बाढ़िमे भरल -उमड़ल परमान धार सन लगैक । फेर टोल पड़ोसक स्त्रीगणक आँखि दिस ताकय जकर आँखिमे व्यंग्य रहैक, उत्सुकता रहैक, निष्क्रिय दर्शकक क्रूरता रहैक ।

मने, मन पजरि रहि जाय । ने धूआँ होइक नै धधरा । एहन दिन भेलै छँउड़ीकेँ । केहन भरल-पूरल सासुर छैक । साँय कमौआ । रेलवीक सरकारी नोकरी । एक मुट्ठी अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रक दुख नै छैक । मुदा तइओ ई कलपुआ कोढ़िया खातिर अपन सासुर तेयागि बाप-मायक नाक कटबैए । मुदैआ सभहक छाती जुरबैए । एकर कोन उपाय ।

बेनी किछु ने बाजय । ओ घरमे अन्य पुरुष रहय । तेहल्ला जकाँ । जे बुढ़बा-बुढ़िया करय । ने त' एतेटा जी-उपरी काज ! एनाक' पड़ा अओतइ ! झोंट काटि एकरा चारि लात मारै आ बइला दै । तखन बुझतै जे साँय की वस्तु थिक आ इयार कोन चीज । से त' जखन एकरा होइ छै जे किछु क' क' जायब माय गरा लगा कनबे करत, बाप हाथ फेरि चुचकारबे करत, तखन कोना ने भागि-भागि आओत । बेनी सोचय । सोचि क' जरि जाय आ जरैत नजरिञे ननदि के ताकय । ओकरा की अइ घरमे कम दुख होइ छै । कइए साँझ अन्नक कटमटा होइ छै । भरिदेह वस्त्र नै । भरि पेट अन्न नै । मगर तइयो विराटकाय गेनबाक मुँह देखि सभटा बिसरि जाइए । कहिओ जीह नै हिलओलक । खैर, जे-से । जे अपन मोन होइत जेतै । एकरा को ।

गेनलाल बापक अति आज्ञाकारी । सोचबाक चिंतासँ सर्वथा मुक्त रहय । बिजली एलै बड़ बेश । गेलै बड़ वेश । एकरा अपन हऽर, हरबाही, पटुआक कटनी, धोनी, गोड़ी ल' क' बजार-हाट कयनाइ सँ मतलब । जाने बाबू । जाने माय ।

मुदा आक्रोश ओ गम्भीरताक एहि मेघओन वातावरणमे बिजली मगन रहय । नीक-बेजाय सोचि, जी-जान अवधारि ओ एहि खेपी पड़ायल छलि । अन्हार रातिमे रेलवी क्वाटरक छहरदबाली फानि । मोन मगन रहै एतय । फैल सँ साँस ल' होइ । एहि ठाम बाप रहैक । माय रहैक । सरूपा सन सहोदर भाइ रहैक । अपन चिह्नल-जानल घाट-बाट रहैक । बारीमे अपना हाथे रोपल अत्ताक फड़ैत गाछ रहैक । कुम्हरा पाटक ढेकुलबला छोट कूप रहैक । आ सभसँ बढ़ि क' कलपू मीसर रहैक जकर बिना एको छन पहाड़ लगैक ।

कल्पनाथमिश्र उर्फ कलपू मीसर तीस बिगहाबला निट्ठाह गृहस्थ रहथि । चारि हऽरक सम्हरल गृहस्थी रहनि । पितामह रहथिन बिकौआ । एगारहम विवाह रहनि जितपुर । कलपूक पितामही कन्यादानी रहथिन आ बाप भगिनमान । खोरिसमे तीस बिगहा मातृकसँ भेटल रहनि ।

नेनहिमे टूअर भेलाह । माय-बाप मलेरियामे बेरा-बेरी मुइलथिन । घरमे एकमात्र पीसी रहथिन । माय बूझू त', बाप बूझू त' ।

बिसेखी रहनि हरबाह आ बटेदार । अपना माइक संङ्ग बिजली अधिककाल गोबर-कड़सी कुटिआक-पिसिआमे लागलि-भिड़लि एहि आङ्गनमे रहैत छलि ।

आरम्भहिसँ बिजली प्रतिएँ स्नेह रहनि । काल-क्रमे विवाह भेलनि । मुदा स्त्री प्रथम पुत्रक प्र[illegible] मरि गेलथिन । आ तखन एहि श्यामलाङ्गी बिजली

सँ मोन ठेसि गेलनि । अपन अवस्था ता रहनि पचीसक आ बिजली चौदहम-पन्द्रहममे रहय ।

कलपूक परिवारसँ प्रचुर सहायता होइक । मोनक एकनिष्ठ प्रेम संक्रामक होइछ । गोर मुँह । पानसँ रङ्गल ठोरबला । नाम आ पातर, सहृदय कलपू बिजलीकेँ बड़ नीक लगै । सदति होइक देखिते रही । ओकर उदास आँखि हेड़ायल-भूतिआयल सन बड़ नीक लगै । कलपू सभ किछु बिसरि गेलाह । पीसीक क्रोध, भर्त्सना, लोक-लज्जा, सभ किछु । सदति मोनमे बिजली रहनि । नूआ, आङी, गहना सभ किछु आनि क' देथिन बिजलीकेँ जखन फारबिसगंज जाथि किछु ने किछु अवश्य आनथि बिजली लेल । गमकौआ तेलक शीशी, अलताक डिब्बा, बिन्दी ।

बिजलीक माय देखय-बूझय । अनठा दिअय । खाय खेलयबाक बयस छैक । चारि दिनुक बाद फेर अपन सासुर जायति । जखन-तखन बेटीकेँ तरबिठुआ काटय ।

बिसेखी गमलक । क्रोध भेलैक । घरबाली पर हुमड़ल । बरिसल । बेटीकेँ डटलक । आँखि गुड़ारलक । एक दिन एक चाट मारबो कयलकै ।

मुदा ताइ सँ ? बिजली चुप भ' जाय । कान' लागय । अन्न-पानि तेयागि दिअय । नजरिक अऽट भ' कलपू ओतय प्रस्तुत । एकदिन देखना होइक त' मोन कचोटै । सरुपा देया समाद दैक । भेटघाट बन्दी रहैक तइओ टाका-पैसाक जखन जे खगता होइक, मेला घुमबा खातिर कि किछु किनबा खातिर, मुक्त हस्ते कलपू सरूपा मार्फत पठा दैक ।

कलपू पर कस्तन भेल ।

पिउस कहलथिन, हम जहर-माहुर खा लेब कि बरु डूबि मरब । एहन अनाचार एतेक खुल्लम-खुल्ला सहल नै जाइए । गामक प्रतिष्ठित समुदाय जातिच्युत करबाक अल्टिमेटम देलकनि ।

कलपू बाजय किछू ने । चुप रहय । निरुत्तर । कते गोटाकेँ कतेक जबाब देत । ताहिसँ सुलभ चुप्पे रहनाइ । मुदा बिजली प्रतिएँ आकर्षण बढ़ले जाइक । विवाह करबाक सभ प्रयत्न लोकक विफल भेल ।

घरसँ पूब कलपूकेँ एकटा कलमबाग रहनि । पक्का इनार, पक्का चबुतरा आ एकटा छोट दलान । बाप त्रिपुरसुन्दरी भगवतीक उपासक रहथिन । अहीमे अधिक काल रहि जप-पूजा-होम करथिन, त्रिपुराक आराधना करथि ।

कलपुओ अधिक काल अहीमे रहथि । पिउसक नेम-टेमसँ फराक, गामक लोकक जिज्ञासु-चक्षुक परिधिसँ बाहर, श्यामलाङ्गी हँसमुखी बिजलीक अर्चना-आराधनामे सुविधा होइन । एही आभ्रकाननमे दुहुक प्रणय अवाध गतिएँ चलय ।

गप्प जखन अधिक पसरल, मानिजन बजा क' कहलकै--बिसेखी, समर्थ बेटी घरमे राखि तोरा जकाँ कानमे तूर-तेल द' नै केओ सुतैए । दस गोटा दस तरहक गप्प बजैए । क' दही दुरागमन । अपन घर जेतै । जकर लोक छैक से ल' जेतैक ।

नीक विचार । ठीके त' कहै छैक मानिजन । बेटी की स्वर्गे नीक कि सासुरे । सोचलक बिसेखी ।

बिजलीक द्विरागमन भ' गेलैक ।

पति हीरालाल रहैक रेलबीमे पेटमेन । नाम पातर । कारी । छोट-छोट सुगरकेसा एकदम ठाढ़ । बड़की टा नाक । चक-चक करैत दाँत । छोट-छोट आँखि । हाथ-पयर सक्कत । एकदम हड़ाठी-फराठी जकाँ ।

स्वभावसँ किन्तु अत्यन्त कोमल आ प्रणयी । पसिन्न नै भेलै बिजलीकेँ ।

रेलवी क्वाटर पिजड़ा जकाँ लगै । पथरकोइलाक धुँआँसँ होइ केओ भकसी झोंक़ने जाइत होइक । साँस बन्द लगै । सदति रेलक आवाज लगै जेना जमपुरीमे केओ रखने होइक ।

जेना पाकल आम सक्कत शुष्क भूमि पर निरुपाय खसि पड़ल हो ।

मोन नै लगै । मोनमे बसल रहै गोरका चक्काबला कलपू । लाल ठोर बला कलपू । भरि दिन एकर मुँह ताक'बला कलपू । नीक-नीक वस्तुक उपहार देमयबला कलपू । कहाँ देवदारु सन ओ आ कहाँ खयरक कुबड़ाह गाछ सन ई ।

हीरालाल बड्ड मान करै । सदति तरहत्थ पर रखने रहै । एकबेर टेन पर चढ़ा पुरनिआ ल' गेलै सिनेमा देखाब' । मगर जे पसिन्न नै होइ छैक तकर प्रेम आर कष्टदायी होइछ ।

आठ मासमे पड़ा आयलि पयरे । माय डटलकै । टोल-परोसक स्त्रीगण ए-छी केलकै । भाउज पुछलकै त' कहलकै--एकोरत्ती रस नै छै मोनसाक देहमे । जेहने बगय छैक सुगर जकाँ तेहने सोभाव्रो छैक बेलस ।

मुदा हीरालाल आयल पिठियाठोक । बड्ड कहला-सुनला उत्तर सासुर गेलि दोहरा क' ।

हीरालालकेँ अपन पत्नीक प्रणय-व्यापारक पता लागि गेल रहैक । बिजली प्रतिएँ निठुरता बढ़ि गेलै । बात-बात पर गारि द' मारय छूटै । प्रेमो करैत काल जेना प्रतिशोधक क्रूरता रहै ओकरामे । बिजली आँखि मुनि लैत रहै । हीरालालक कठोर हाथ पैर आ क्रूर व्यवहारकेँ सहन करैत काल कोमल प्राण कलपूक सरस स्पर्शक कल्पना क' लैत रहय । मुदा जीवन असह्य भ' उठलै । कलपूक कल्पनाक छल नै कयल पार लगै बेसी । आ हीरालाल जखन रातुक ड्यूटीमे रहै त' बरख दिनुका बाद बिजली फेर पड़ायलि ।

मुदा बाप-भाइक तामस पर, मायक बुझौला पर गेलि फेर सासुर ।

हीरालाल आक्रोशक माहुरमे मातल रहय लागल । एहन नककटाओन भेलै स्त्री । जकरा जान-प्राणसँ एतेक मानलक से एहन भेलै सतखेली । लोक की कहैत हेतै जे मौगी किएक पड़ाई छै । बदनामी फराक । खर्च आ हुज्जति फराक । दूरि कयल छैक बापक । दुलारे सत्यानाश क' देलकै ।

बड़ सतर्क रहय लागल । ताला ठोकि क' जाय ड्यूटी पर । क्रूरता बड़ बढ़ि गेल रहैक । बात-बात पर सनकूट क' मारै । अकारणो शंका होइक । एम्हर तकलक । ओम्हर तकलक । बात-बातमे ठोकि दैक ।

ओइ संध्याकाल हीरालाल ताला खोलि डेरा आयल । खिड़कीसँ बाहर मुनहारि साँझक मैल आकाश तन्मय भेलि बिजली देखि रहल छलि । दूर लोको-रोडसँ इन्जिनक नाना-विध कोलाहल अबैत रहैक ।

ओहिना तकिते रहलि बिजली खिड़कीसँ बाहर । ऊँच रेलबी सड़क । ओकर काते-काते तार-खजूरक गाछ । पाछाँमे डूबल सूर्यक आभा नेने रक्ताभ मेघ ।

क्रुद्ध स्वरेँ पुछलकै हीरालाल–ककरा तकै छैँ ? इयार मोन पड़लौ ? कलपुआक सार !

मूड़ी घुमा तकलकै बिजली । कारी पेन्ट, कारी हाफ पहिरने स्वामी दिस तकिते रहलि । नहि किछु बाजलि ।

–सोझे लाठी द' क' मारि देबौक ।

व्यंग्यक हँसी हँसलि बिजली । बाजलि–तोरा लग अपन हीआ जारिए रहल छी । ओकरा मोनो पाड़िक' त' जीबी ।

क्रोधान्ध हीरालाल आगा बढ़ि बिजलीक झोंट ध' क' खिचलक आ नीचा खसा लातसँ मारय लागल । निष्प्राण बिजली पड़लि रहल । चुप-चाप एकर लात सहैत । अपना इच्छे ओकरा डेङा हीरालाल असोथकित भेल । हठात् बिजली तुमुल-स्वरमे हाकरोस कय उठलि ।

—खून कयलक हओ बाप । जान मारलक । कलोनीक लोक आङनमे पिठियाठोक जमा भ' गेल ।

—नारायण-नारायण । रहनाइ मोश्किल भ' गेल अइ क्वाटरमे । राक्षस थिक ई । एना कतहु डेगायल जाइत छै निछोह । बगलक क्वाटरमे रहयबला भभीछन फोरमेन बाजल ।

—नम्बरी चण्ठ अछि । माल-जाल जकाँ ताला ठोकिक' रखै छै । छी: । छी: । दोसर गोटा बाजल ।

चारूकातसँ छी: छी: धूआँधार वर्षामे हीरालालकेँ भेलै जे भोकासी पाड़ि कान' लागय ।

चुप-चाप क्वाटरमे ताला ठोकि विदा भेल ।

ओहिना बड़ी काल धरि पड़लि रहल बिजली । नि:प्राण । देहमे चोट नै रहै । मोनमे बड्ड चोट रहैक ।

खिड़की बाटे आकश दिस तकलक । इजोरिया उगि गेल रहैक । नै । एतय ई नै रहि सकैए । रहि क' जीबि नै सकैए । मरि जायत कुहरि-कुहरि । ज़िबैत रहब पहिने जरूरी छैक संसारमे । तखन लोक-लाज । नीक-बेजाय । सभटा अवधार छैक ।

नवीन संकल्पसँ मोन उद्भासित भ' उठलै । उठल । नूआ फेरलक । मुँह-हाथ धो टीनक टुटलही कुरसी छहरदेवाली लग रखलक । छहरदेबाली फानि बहार भेल । चारूकात निस्तब्ध रहैक । एक बेर क्वाटर दिस ताकि निसास छोड़लक आ टहाटही इजोरियामे विदा भेलि ।

भौजी लग बैसलि रहय बिजली । बेनी खोधिआ-खोधिआ सभटा हाल पूछै ।

—किए तोरा एना सनक सबार होइत छहु ? क़िए एना पड़ा-पड़ा अबैत छैक ? पुछलकै ।

—कि जान' गेलियै हे । होइयै कण्ठ मोकने रहय । दम्म जेना बन्द हो । केओ भकसी झोंकने जाइत हो । बड्ड मारैए । दस दिन रहि क' देखि लहक ने । बिहुँसि बाजलि बिजली ।

चारिए दिनमे रंग पलटि आयल रहै । श्यामता रक्तिम भ' गेल रहै । आँखिक चंचलता, हाथक चमकी । ठोर कोँचिआ क' बाजब । देहक लोच। सभटा पलटि गेल रहैक ।

देह लहरि उठलै बेनीक । एहन दिदगरि । ने लाज ने संकोच । व्यंग्य कयलक–कलपूसँ भेंट नै कयलह ?

व्यंग्यक मर्म बुझबाक लेल एक क्षण भाउज दिस गोल आँखिए तकलक । फ़ेर मुँह बिचका क' बाजलि–आब जेबै । कने साँझ होइ छै ने । सिन्नुरटिकुली क' लियै । देखै नैं छहक केहन फूल-पत्ता काटि क' केस बन्हलियैए ।

देह सुड्डाह भ' गेलै बेनीक । भेलै एकर बान्हल केस उजाड़ि दै । झोँट काटि मुँहमे कारिख पोति दै ।

घृणासँ जरैत कण्ठेँ बाजलि–जा बाप-मायक नाक कटा क' रभस कर' ग' ।

–तोरा जरला-पजरलासँ की हेत' ? करबे करबै जे फुरतै । जकर नाक बड्ड पैघ होइक से कहि दै चिकरि क' लोककेँ जे ई हमर बेटी नै, ई हमर बहिन नै । हम अपन संसार देखब ।

फेर कनेक काल चुप रहि बाजलि–ककरो केओ जान-परानसँ मानै से भाग सबके होइ छैक ?

चुप्पे रहलि बेनी । एकरासँ उतराचौरी निरर्थक । बिजली उठलि । डेउढ़ी लग जा सोर पारलक–सरूपा ?

सरूपा आबि बहिन लग ठाढ़ भेल । नहुएँ पुछलकै बिजली–ओम्हरो गेल रहँय ? ओम्हरसँ तात्पर्य कलपू मिसरक कलमबाग दिस ।

–हूँ ! मूड़ी निहुड़ा बाजल सरूप–कलपू मालिक रहै दलान मे । पुछै छलै।

सरूपक मुँह सिनुरिया गेल रहैक । देखलक बिजली । आब छँओड़ा छेंटगर भेलै । एहि सभ गप्पसँ संकोच होइत छैक ।

केश बान्हल रहै । घर गेलि । भाउजक एकटा नूआ पहिरल गुलाबी। ललाटपर ठोप कयलक । एकटा पीअर छीटक आड़ी पहिरलक भाउजक ब्लाउज ढील भेलै सीना-पेटमे । मुदा निरुपाय रहय । ओढ़ि पहीरि बिदा भेलि । एक क्षण भाउज लग ठाढ़ि भेलि ।

विहुँसि बाजलि–केहन लगै छियै ? ओकरा पसिन्न हेबै ? आ कि तोरा नूआ-आड़ीक सोच धयने छह । निफिकीर रह' ।

[illegible] आँखिए चुप-चाप ठाढ़ि रहलि बेनी ।

चारि

कलपूक कलमबागमे पहुँचलि त' बेर लुक-झुक करैत रहैक । पछबा तेज छल । हाड़ कँपबयबला ।

असोराक कड़नी पर एकर बाट तकैत रहथि । बिजली आबि चुप-चाप ठाढ़ि रहलि । कलपू दिस एकटक तकैत ।

थोड़ेकाल बोल नै फुटलनि कलपूक ।

–परसूए अयलें ? अवरुद्ध कण्ठें पुछलथिन ।

–हँ । मुदा अेयबाक पलखति नै होअयं ।

फेर ओसाराक खाम्ही लगा बैसि गेलि । कलपू ओहिना ठाढ़ रहलाह । बिजली दिस तकैत । कतेक दुब्बरि भ' गेलि अछि । हाड़-हाड़ जागल छैक । दुख कटला सँ आँखि गम्भीर आ चेतन लगै । आङी कतेक ढील छैक । बाँहिमे ढ़ील, पाँखुर पर ढ़ील । । ढल-ढल करैत ।

हँसलि बिजली । कलपूक आँखि परखि ।

बाजलि–भउजीक छै । तँइ ढील होइए । खाली पहिरनाक नूआआङी ल' क' चललिअइ ।

–कतेक दुब्बरि भ' गेलेहें तोँ । कहाँदन बड़ मारैत रहौ । ठीके ? वेदना-विह्वल स्वरें पुछलथिन कलपू ।

ऊपर-नीचा मूड़ी डोलओलक बिजली । बाजलि–बड्ड डेङबै छल । मकइ जकाँ निछोह ।

सहटि क' ल'ग अयलाह कलपू । एकदम ल'ग । माथमे बदाम तेलक गमक लगलनि । कहलथिन–बीजो । ई एना कतेक दिन आर चलि सकत । कइक खेपी कहलिअउ तोरा, चल एतयसँ । हमरा सङचल । गाम छोड़ि झोँट ध' घिसिआ क' ल' जेतौक । तोहर मारिक कल्पना करैत काल लागय अपने देहमे दोदरा फूटल जाइत हो ।

एक क्षण कलपूक अत्यन्त गम्भीर मुँहक दिस विह्वल नजरिऐ तकैत रहलि बिजली । फेर भभाक हँसलि । कलपूकेँ हाथसँ ठेलि देलक । बाजलि–हमरा सङे भगबऽ ? एत' कथीक डऽर होइत छइ ? ककर डऽर होइत छइ ?

सोचबाक पलखति कहाँ रहैए ? तोरे सोचैत-सोचैत

—डर ? डर दिस सोचबाक पलखति कहाँ रहैए ? तोरे सोचैत-सोचैत दिन-राति बीतल जाइए । सासुरमे तोहर मोन लागि जइतउ, सुख होइतउ त' अपनो मन मना लितहुँ । मगर............। हठात् चुप भ' गेलाह ।

बिजलीक मोन गलल जाइक । प्राण जुड़ा गेलइ । ककरो ओकरा खातिर एतेक दरेग छैक । व्याकुलता छैक । ककरो मनक चैन आ आँखिर नीन एकरा लेल हड़ा गेल छैक । श्याम मुँह पर परम तृप्ति ओ शान्तिक भाव रहैक । आखि चमकैत, मुँह हँसैत । कलपूकेँ भेलनि जेना हजार-हजार श्याम अपराजिता एके बेर फुला गेल हो ।

दृष्टि नीचा भ' गेलै बिजलीक । सोझा-सोझी ताकल नै पार लगलै । बाजलि—हमहूँ तोरे मोन पाड़िक' ओतुका दुख खेपि ली । तोँ ज' मनमे नै रहित' त' ओतेक दुखमे बेरा-बेरी चारि खेपी मुइल रहितहुँ ।

दीर्घ श्वास लेंलनि कलपू । पुछलथिन—फेर त' ल' जाय खातिर अयबे करतउ ? की, बिसेखीक की विचार होइ छै ?

—अइ बेर नै जेबइ । कोनो हालते नै । खाहे खण्डी-खण्डी काटि देतइ तइओ नै ।

—जँ बलजोरी ल' जेतौक तखन ?

—तखन भागि क' तोरा लग चलि आयब । हठात् विश्वास नै भेलनि कलपूकेँ । ओकर आँखिमे दबल हँसी रहै । बाजल—डेरा गेला तोँ जे चलि आयत त' कोन उपाय करब ?

—लोक-लाज । हमरा आब बाँकिए की रहल ? आ तोरा खातिर सभ तेयागि देलहुँ । प्राण टा अपन सकमे नै अछि ।

—भक । कृत्रिम क्रोधेँ बाजलि । जान-प्राणक गप्प हरदम नै करी । हम नै जयबै । तोँ विश्वास राखह । एतहि रहबै । तोरे आँखिक सोझामे ।

कलपूक मोन गद्‌गद् भ' गेलनि । मोन पड़लनि । काल्हि फारबिसगंजसँ बिजली खातरि नुआ, साया, आङी आ बाडीस अनने रहथि । कहलथिन—काल्हि फारविसगंज गेल रही । तोरा नूआ नै हेतउ । घरमे सन्नुक पर राखल छैक ।

आ भितरी जा क' कागतमे बान्हल दूटा बण्डिल आनि देलथिन ।

दूनू हाथे कागतक बण्डल खोललक बिजली । तऽरसँ फर्दी साड़ी, साया, ब्लाउज बाहर कयलक । नाक लका जोरसँ सुँघलक । नऽब कपड़ाक गन्ध ओकरा बड़ दीब लगै । से कलपूकेँ बुझल रहनि ।

हँसलाह ।

–ई त' बड्ड महग हेतै । मोट-सोंट ल' लित' ने । ई हमरा देह पर कय दिन टिकत ?

कलपू चुप रहलाह । अपन फजूलखर्ची पर ई उपालम्भ आदियेसँ प्रिय रहनि । जानि क' कौखन दामी आ मेही वस्तु आनथि । आ ओकरा फेर क' मोट कपड़ा आनक खातिर बिजलीक तर्क सुनैत विभोर भ' जाथि । आब तुरत फेरबाक चर्चा शुरू करत ।

–उपरका कागत फाड़ि देलियै । फेरतै नै आब की ? अबस्स फेरतै । कपड़ा त' नै ने पहिरल छैक । एकरा फेरि क' एकटा ननगिलाट ल' लिह' । साया की हेतै अनेरे । डेढ़ीक कपड़ा ल' लिह' । ई ऊनी स्वीटर ल' क' की करब । अनेरे । एकदम फेरि दहक ।

गंभीरतापूर्वक बिजली बाजि रहलि छलि ।

–कागत बेकारे फारि देलही । आब कतहु फेरइ । कागत पर दोकानक नाम रहै छापल । आंगुरसँ ओकरा देखा कहलथिन–देखही ने, लीखि देने छैक जे फेर-फार नै हैत ।

बिजली ओइ मोट-मोट छापल आखर दिस तकैत रहलि । अक्षर नै चलै कोनो । बड़का दोकानमे कीनि लेलकै मने । ओह ! एकरा सब ठकि लैत छैक। बलेल-ढहलेल जानि । ई त' बनिआक जबरदस्ती भेलै ने । फेरतै ने कोन सुप्पतमे ?

बाजलि–हम की पढ़बै । तोरा सब ठकिये लैत छह । जऽन-बोनिहार, बटेदार, सभ । पैसा एकदम कुट-कुट कटैत रहै छ' । अइ सबमे एक कौड़ीसँ कम नै लागल हेत' ।

एक कौड़ी टाकाक कल्पना बिजली खातिर बड्ड । अपराधी भावेँ कलपू ओकरा दिस ताकैत रहलाह । माय-बापक कोरा छाहरिसँ हीन, नीक-बेजाय खातरि डाँटयबला नै केओ रहनि । एहि शासकक चरणमे आत्मार्पण कय चुकल रहथि ।

चौबीस टाकाक खाली स्वेटर रहैक । कहलथिन–नै उनैस टाकाक छैक । एक कम कौड़ी ।

थोड़ काल दुनू गोटा चुप रहलाह ।

जाड़क मलिन साँझ पसरल आबि रहल छल । बाधसँ अबैत गाइक घंटी बाजि रहल छल । दलानक सोझाँ बाँसक बहुत असगनी बनल रहैक । ओइ पर

चन्नी पाट सुखाइत छल । ओकर दुर्गन्ध चारूकात भारी रहय । पछबा तेज रहय । बिजलीक देह भुलकि गेलै । दूनू हाथ घोकड़ी लगा लेलक ।

—अन्हार भ' जेतउ फेर ।

—हँ, जाइ छिअइ ।

असगनी पर राखल सूती दोहरी खीचि कलपू बिजलीक देह पर फेकि देलथिन—बाटमे जाड़ हेतउ । ओढ़ि ले ।

—नै-नै । हमरा नै जाड़-ताड़ होइए । रह' दैह । अपने की ओढ़बह ? चारि डेगमे हम पहुँचि जायब । आ चौपेतल दोहरि मोड़ि क' टार' लागलि ।

—कहै छिओ, लेने जो । भरि राति जड़यबेँ तो । नीक जकाँ ओढ़ि ले । आ कि मोन छौक, बलजोरी ओढ़ा दियौ ?

हँसि क' कहलथिन ।

हँस' लागलि बिजली । बाजलि-तोरा सङ्ग कुश्तम-पटकममे डाँड़ त' नहिए हैत हमरा । कान लाल भ' गेलनि कलपूक । इह ! कोनो लाज-धाख नै एकरा ।

आ धूमिल संध्यामे जाइत बिजलीकेँ एकटक देखलनि । गाछक अऽढ़ भेलि, फेर नजरि आयलि । फेरि चन्नी पाटक काते-कात जा रहलि अछि । आगाँ जा झल-फल साँझमे एकाकार भ' गेलि ।

बड़ी काल ओहिना ठाढ़ रहलाह । भावहीन । दूर धारक कात खयर-बबूरक जंगलमे अंधकार धनीभूत छल ।

लालटेन लेसि ओरियानीक बातीसँ टाङि देलथिन । महगू फारबिसगंजसँ पटुआ बेचि नै आपस भेल रहय । अबिते होयत आब ।

विदेह मिसरक ठकुरबाड़ीसँ घड़ी-घंटक स्वर आबय लागल ।

भानस क' क' पीसी आङनमे बाट तकैत होइथिन ।

पाँच

आ ठीके हीरालाल पिठिया-ठोक पहुँचल । बिसेखीक हृदयमे रहैक, जहिना आन बेर कहला-सुनला उत्तर चलि जाइत रहय तहिना चलि जायत । जमाइयोकेँ बुझा-सुझा देत । घरक सभ लोक इएह बिचारने रहय ।

मुदा बिजली क्रन्दनक स्वरे बाजलि--हम पोखरि-इनारमे डूबि मरब । अपना हाथे फाँसी लगा लेब । मुदा एकरा सङे नै जयबैक ।

माय बुझओलकै । भाउज बुझओलकै । दबल स्वरे गोंगिआ क' गेनबा कहलकै । मुदा बिजली टस्ससँ मस्स नै भेलि ।

बिसेखी अथ-उथमे पड़ल रहय । एक बेर बेटी दिस ताकय । एकबेर दलान पर बैसल क्रोधान्ध जमाय दिस ताकय । किछु ने फुराइ । की करओ । कोनो माल-जाल त' छै ने जे रस्सी-पगहा हीरालालक हाथमे धरा देतै । आ सेहो माल-जाल कौखन देह नड़ा दै छै । टारने ने टराइ छै । तखन ई त' बोधगर मनुक्खक गप्प ।

खसल मोने आङन आयल । स्त्रीके बजाय कहलक--की कहै छै बिजली दू दिन भ' गेलै पहुनाके अयना । लोक की-कहाँ बज छै ।

बिजली मायक आँखिक धूँआँ गरद भ' गेलै । पति दिस भरि आँखि तकलक । चुप्पे रहलि ।

दबल स्वरे, अ'ढ़सँ बेनी बाजलि--ओ त' एकदम जिद्द ध' नेने छैक । एहन तमासा देखने नै रहियै । सब एक दिस आ ओ एक दिस.........। मुदा सासुक ज्वलित नेत्रसँ प्रताड़ित हठात् चुप भ' गेलि ।

गेनालाल अइ परिस्थितिसँ अत्यन्त विकल रहय । बाजल--ने तँ एकटा कर' ने । एकाध-मास छोड़ि दहक । फेर मोन दोसर तरहक हेतैक एकरो त' अपन जयबे करतै ।

ई गप्प सभके पसिन्न भेलै । मुदा जखन अनुनयक स्वरे बिसेखी ई प्रस्ताव जमाय लग रखलक त' हीरालाल तरङि क' बाजल,--भ' नै सकैए । खाली हाथ लौटि ने सकै छी । हमर लोक सङ क' दय ।

बिसेखी कलपि क' कहलकै--एकाध मासक कोन गिनती छैक । दिन जाइत देरी लगतै ? छँउड़ियोक मोन त शांत हेतै । एखन जिद्द छैक धयने ।

मगर हीरालाल अड़ल रहल । आइ दू दिनसँ 'सिक-रिपोर्ट' क' एतय बैसल माछी मारैए । बिना विदागरीक जा ने सकैए । चाहे एम्हरुका चान ओम्हर उगि जाथु ।

टरि गेल बिसेखी । बाप लग जा सरूप ठाढ़ भेल । नहुँए पुछलकै-- अँय हओ बाबू! बहीन नै जयतै, ओकरा जयबाक मोन नै छैक त' फेर ई बलजोरी

किएक ल' जयतैक । जत्त' ओकर मोन हेतै तत' रहतै । ई सार एना बमकै किएक छैक ?

बेटा दिस ताकि बाजल–बेटी आनक धन होइ छैक । ओकर लोक भेलै । जेना राखउ । ल' जयतैक त' लोक की करतै ।

ई तर्क सरूपक सोझडँड़िया मगजमे नै बैसलैक । बाजल–नहिओ जयतैक तैओ बलजोरी ल' जेतै ?

–हँ रे । नै बुझबही । चुप्प । बेकूफ नहितन । फदर-फदर तखनसँ बजने जाइए । गेनबा डँटलकै ।

स्ररूपकेँ तामस भेलैक । ई बुझतै किछु ने, खाली जेठ होयबाक कारणेँ बात-बात पर डाँटि देतैक । मोचण्ड । महिसमोड़ नहितन । मुदा एखन क्रोध करबाक अवसर नै रहैक बिजलीक अनन्य-भक्त रहय । एकपिंठियाक सिनेह रहैक । बाजल–भैया, देखै नञि छहक, जखन क' भागि क' अबै छै तँ देह केहन गलल रहै छैक । खाइयो ने दै छै एकरा भरि पेट ई सार पेटमेनमा । आ हे, मारितो छै । काल्हि बहीन हमरा देखबैत रहय । पीठ पर हे इएह-इएह लीला मासा छैक ।

–रे चुप ने रऽह । विकल स्वरेँ बिसेखी बाजल । बेटीक दुर्दशा पर मोन होइ गलि जायत ।

फेर जमाय लग जा क' बाजल–की करिऔ ? सब बुझा क' हारि गेलै । ओ एकदम जिद्द ठानि देने छैक ।

कड़सीक घूड़ जकाँ हीरालाल धुँआइत रहय । इह ! एहन अन्हेर ! आइ दू दिनसँ एत' बैसल-बैसल कोड़ो-बाती गनि रहल अछि, एक झलक तक बिजलीक नै देखलक । भरि राति आसा-बाटी ताकि क' रहि गेल । बदमास-नङटा सब । अइ बेर खाली ताल ठोकलासँ नै काज चलतैक । सिकड़ीसँ बान्हि क' राखत । तोँ डारि-डारि, हम पात-पात । मौन विरूखे माहुर रहैक । भेलै भोकासी पाड़िूक' खूब जोर-जोरसँ कान' लागी । बिसेखी केँ सात पुरखाकेँ उकटि दीअय । मगर नै । थम्ह' हे मोन । धैरज राखह । कोनो तरहेँ एकरा झीकि क' ल' चलह । सोचलक ।

फुत्कार कयलक–नै, हम लैए जेबै ।

–से तोरा रोकै छ' केओ ? अपन लोक छ' ल' जाहक । गेनबा कहलकै।

–से जेना जेतैक, लैए.जेबै । हीरालाल बाजल ।

बहिनक आचरणसँ गेनालाल संकुचित रहय । दीन स्वरेँ बाजल–जा, ल' जाहक । बुझा-सुझा क' कि जेना मोन होअह । हम सभ तँ नै ने रोकै छिय' । अपन लोक छह । अपन ल' जाहक ।

–अच्छा बेस । कहि हीरालाल सरोष उठल । आङन दिस चलल । सरुपा पछोड़ धयलकै । बिसेखी डेउढ़ी पर ठमकि गेल । गेनालाल माँझ आङनमे ठाढ़ रहय ।

बिजली-माय जाँत पिसैत रहै । ओसाराक खाम्ही लागलि बिजली बैसलि रहय ।

पहिरनामे कलपूबला नूआ-आङी रहैक । पीठ पर कारी चाकर जुट्टी लटकल रहै । पुनगी पर लाल फीताक फूल । स्वामीकेँ क्रोधान्ध आङन अबैत देखि संदेह भेलैक । माथ पर नूआ खीचि उठबाक उपक्रम कयलक । मुदा एक्सप्रेस ट्रेन जकाँ हीरालाल ओकरा लग पहुँचि गेलाह ।

कड़कि क' पुछलथिन–गय, गय बेहया बेलज्जी, चलबेँ तोँ कि नै ?

भरि आँखि हीरालाल दिस तकलक । हरिअरका डोरिया हाफ, एकटा उज्जर धोती । आँखिमे मोनक समस्त माहुर, बड़की टा नाक तामसे फड़-फड़ करैत । तैखन मोनक आँखिमे बिहुसैत कलपू ठाढ़ भ' गेलै । परम शान्त भावेँ मूड़ी डोलाय अस्वीकार कैलक ।

क्रोधेँ हीरालाल हँपसि रहल छलाह । दाँत किटकिटा गारि दैत कहलथिन–झोट ध' क' ल' जयबो । घिसिआ क' ल' जयबौ ।

मूड़ी उठओलक बिजली । भरि आँखि तकलक हीरालाल दिस एक क्षण । आमक फाँक सन पैघ-पैघ आँखि घृणाक अङोर सन लह-लह करैत । फेर डेउढ़ी लग ठमकल बाप दिस तकलक, दुःख जकर आँखि रहैक । गेना दिस तकलक, ठकमक करैत माँझ आँगनमे ठाढ़ ।

आ फेर सरूप दिस तकलक । ओकर चढ़ैत छाती, धनुष जकाँ टेढ भरल बाँहि । आँखिमे क्रोधक लाली । दाँत पर दाँत बैसओने । बिजली दिस दू डेग सहटि आयलसरूप । जेना एकर आज्ञाक प्रतीक्षा करैत हो ।

एहि नाटकीय चुप्पी पर हीरालालक क्रोधाग्नि जरि उठलनि ।

लपकि क' बिजलीक जुट्टी पकड़ि खिचलथिन–उठ निर्लज्जी । नै त' झोँट पकड़ि क' ल' जेबौ ।

बिजली देह नड़ा देलक । ओसारा परसँ नहुँए नीचा टगि गेल । ओकर झोँट घीचि हीरालाल दू लात मारलनि पीठ पर गद्द-गद्द ।

डेउढ़ी पर ठाढ़ बिसेखीक आँखिमे सोनित जमि गेलै । सोनितक घोँटि पीबि चुप रहल ।

गेना अथ-उथमे पड़ल किछु ने सोचि सकल । मुदा सरूप एक डेगमे बहीन लग ठाढ़ रहय ।

हीरालालक पातर गट्टा ऐँठि पीठ पर उनटा देलकै । बिजली उठलि । ठाढ़ि भेलि भाइक बलिष्ठ पंजासँ ऐँठल बाँहि बला स्वामीकेँ देखलक ।

नहुँए बाजलि–तोड़ि दे कोढ़ियाक गट्टा, उनटा दे एकर बाँहि ।

–सरूपा । डेउढ़ी परसँ गरजल बिसेखी । आ समीप आबि जमायक बंधन-मोचन कयलक । फेर सरूपाक कान ऐँठि एक थापड़ मारलक–बदमाश, पाहुन पर हाथ उठबैए ? जमाय घरक देवता होइ छैं ! पाजी !

–बहीनकेँ मारै छलैए से किछु ने ।

–ओकर लोक छै । अपन जे मोन हेतै से करतै । खबरदार, प्राण हम ल' लेबौ ।

मुँह लटका सरूप ठाढ़ भेल ।

हीरालाल अपनाकेँ सुरक्षित बूझि गरजल–हम फउदारी क' देबै । खानदान केँ जहल कटा क' मारि देबै । ई सरुपा हमर गट्टा तोड़ैत रहय । एक बापक बेटा नै जँ हम नाकमे छन्ना-कौड़ी नै बान्हि देलियै ।

आग्नेय दृष्टिएँ तकलक सरुपा हीरालाल दिस । बापक डरेँ मुदा चुपे रहल ।

बिसेखी दुखी मोनसँ सभटा गारि-अपमान सुनैत रहय । जमायक सोँझा की बाजल जाय । गेना बहिनोइक दाढ़ी-हाथ धरैत रहय ।

अपमानित हीरालाल एको पल नै बिलमल । चारमे खोसल पनही उतारि लेलक आ तुरत बिदा भ' गेल ।

जाइत-जाइत बाजल—हम पंच आनब । देखा देबै अइ टोलबैआ के ।

से हीरालाल बैसैबला जीब नै । सात गामक पंच अनलक अछि बिसेखी पर ।

मनोरंजनक समस्त साधनसँ हीन बबुर-बन्नामे अइ प्रकारक घटनामे लोक बड़ मनोयोग दैछ ।

टोल भरिक स्त्रिगण-पुरुषे अही गप्पमे बाझल । सभक ठोर पर एकरे चर्चा।

आइ बुझतै बिसेखिया । ककरो बेगतिके राखि नेनाइ आसान नै छै बाबू । सेहो सरकारी आदमी छै । रेलबीक आदमी । आइ सरकारमे उजुरदारी देतै, तुरत उनटा बान्ह-बान्हि क' ल' जेतै बिसेखिआके ओइ छँउड़िओके । ओ ने बेचारा जतिआ-पंचैती अनलक । छतरक स्त्री आइ बड़ चंचल आ व्यस्त । अङने-अङने बूलल घूरल । टीका-टिप्पणी बाओग करैत । केओ नऽव-नवतरि झीक दैक—आ नै मानतै जतिया-पंचैती त' की हेतै गे काकी ? छत्तरक स्त्री आँखि नचा बाजय—नै मानतै ? एहन जीद ककर भेलैए । काल्हिसँ हुक्का-चिलम सब बन्द । ई छँउड़िया सभ करबै छै मिसरबा खातिर । जीब त' की-की ने देखब ।

सुबधी बाजलि नहुँएँ—गे काकी, सुनलिअइए जे कलमबागमे एकटा मचकी बन्हलकैए आ दीने-देखारे दूनू ओइ पर झुलैत रहैक । बिजलिआ सिनेमाक गीत गबैत रहै आ कलपू साथ दैत रहैक । तोहर किरिया, सत्तम बात । बुधनी अपना आँखिसँ देखलकै । बुझलें गे । ओइ दिन हमरा पर मटकी मारैत रहय कोढ़िया । आगिए हम ढारि दितिअनि कोढ़िएके ।

सुबधी बड़ कारी रहय । ओकरा साँय निरसि देने रहै । नैहरेमे रहैत रहय । आइ, आइ मचकीक मजा सभटा बहार करतै पंच । छत्तरक स्त्रीकें फुरसति नै । फेर दोसर आङन जयबाक छैक । फेर तेसर । तखन कने मुसहरिओसँ बूलि आयत ।

आङनमे बिजली पर नाना प्रकारक वाक्-वाण चलैत रहय ।

माय कहलकै—तोरे खातिर ई पंच बैसइ छै । आबो लाज कर । ई जनितउँ ने त' सोइरिएमे तोरा नोट चटाक' मारि दितिऔक ।

—किएक ने चटा देलें ? केओ मना केलकौक ? हँसि क' बाजलि । ननदिक चालि एकदम बेनी के नै सोहाइक । बाजलि—एक बेटी एहन होइए जे नहिरे-ससुरे घिनबैए । ओइ कलपू खातिर दाइ जे-ने-से करती ।

बूढ़ीकेँ पुतोहुक गप्प नीक नै लगलै । एकरा अछैत ओ बजनिहारि के ? धोपलक–चुप रह' । तोँ के बजनिहारि ? हमरा जेहने गेनवा तेहने बिजली । बूझब दू नै तीन बेटा ।

मने–मन हँसलि बिजली ।

सरुपा आबि बहिनक लग ठाढ़ भेल । पंचक नाम सूनि भयभीत रहय । कहलकै–बहिन गे । साँझमे पंच सभ कहि देलकै जाय लेल तखन की करबही ?

–किछु ने करबै । नै जेबैक ।

पंचोक बात नै मानतै । आश्चर्य लगलै सरूपकेँ । केहन निड्डर छैक एकर बहिन । आ अनेरे एकर प्राण सुखैल जाइत छैक । राम–राम । बाजल–त' ! पंचक डरेँ किएक जएबेँ ?

सरूपाकेँ इशारा क' बिजली कातमे ल' गेलै । फेर कानमे किछु कहलकै । सरूपा स्तब्ध बहिन दिस तकैत रहल । पुछलकै–ठीक ?

फेर बहिनिक हँसैत आँखि दिस ताकि बाजल–भक् । बदमास नहितन।

दलान पर गेलानाल बापक गम्भीर मुँह दिस तकैत रहय । अपने मन्द–बुद्धि रहय । शरीरसँ पहलमान मुदा बुद्धिसँ बौन । बाप दिस ताकि बाजल–बाबू, पंचैतीमे की हैतै ? सात टोलक पंच जुमतै साँझ खन । जरूर एकरा बिदा क' दहक ।

अपनो मोन रहै बिसेखीक उद्विग्न । सात टोलक पंचक आगाँ की बाजत ? की जाबब देतै ? मुदा उपाय की ? अपन सोनित मांसक सन्तानक प्रतिएँ ममता होइते छैक । कलपू सङ एना आन्हर भ' गेलै छँउड़ी । जरूर जहर–माहुर खा लेतै ई । आ की फाँसी लगा लटकि जयतै । अपना हाथेँ जानि–बूझि क' अपन सन्तानक हत्या कोना करत ? मुदा पंच के की जाबाब देतै ? बेटाकेँ किछु उत्तर नै देलक । दीर्घ श्वास छोड़लक ।

–ओह ! ई रछसनिआ नाक कटाब' पर लागल छैक । सगरे टोल एकरे चर्च छैक । दिनेक कलपूकेँ दू खण्ड हम काटि क' धारमे भसा देबै । क्रुद्ध भ' बाजल गेनालाल ।

बेटा दिस सचेत भ' तकलक बिसेखी । महा डेरुक छैक ई छँओड़ा । एतेक लोक–लाजक डऽर होइ छै एकरा । कौखन जिबैत रहबा लेल लोक–लाज त्याग'

पड़ै छै लोकके ँ । आइ बिसेखी लोक-लाजसँ डेरायल रहितै त' एहि पाँच प्राणीक परिवरिश भेल रहितै ? किन्नहु ने । कोशीक बाढ़िसँ मारल बाँझ धरतीके ँ चाँछक प्रयासमे कहिआ ने अन्न आ दवाइक बेत्रेक मरि गेल रहितै ई सब । पहिने जिबैत रहब जरूरी छैक । तखन पर-पंच आ कि लोक लाज । आ जीबाक अपन-अपन ढंग होइ छैक । बाजल--तोरा किएक एतेक लोक-लाज घेरि लेलकौ ? हमरा पर पंच अनैए ने । एखन हम जिबैत छी । तोहर नाक किएक कटतौ ? हम मरि जायब त' झाँ ट काटि बइला दिअही घरसँ ।

अप्रतिभ भेल गेना । चे: चे: । ओकर कहबाक से मतलब नै । बिजली कि केओ आन छैक । ओकरे सोनित छै ने । मुदा अपन घर रहबामे शोभा छैक । जे-से । अपन जे बिचार हेतै बाबूक ।

संध्याकाल पंच जुटल । कदम्बक विशाल गाछ तर छीतनक दलान लग । सातटा पंच रहय सातो टोलक । जतिया राजा कारीदास बीचमे मोथिक चिक्कन पटिया पर रहथि बैसल । ओढ़नामे एकटा मोट दोहरि रहनि । ऊपर चतरल कदमक पात पछवामे डोलय । कारीदास शान्त ओ गम्भीर रहथि ।

छीतनक आङनमे टोल भरिक स्त्रीगण रहय भरल । छीतनक स्त्रीक लग बैसलि बिजली घरक टाटसँ सटलि सूनि रहलि छलि ।

बिसेखी पर अभियोग-पत्र प्रस्तुत भेल । जमाय आयल रहैक । अपन बेटीके ँ बिदा नै करैए । पंचके ँ ओकर जमाय अनलकैए । एकरा पंचैती मान्य छैक वा नहि ? पंचके ँ ई मानैत अछि वा नहि ?

बिसेखी उठल । खखास क' गरा साफ कयलक । हाथ जोड़ि बाजल--पंच सभ ! देवता थिक । ओकर मुँहमे भगवान बसै छथिन । पंचसँ बाहर के रहि सकैए ? पंच निसाफ करै छै । पंचक जूता हमर माथ पर अछि । पंचक जे हुकुम हेतै हम माथ चढ़ा लेब ।

छीतनक आङनमे बैसलि बिजलीक कोँढ़ उनटि गेलै ।

पंच सभ प्रसन्न भेल । कारीदास गम्भीर नजरिजे तकलक बिसेखी दिस ।

--हए, चुप ने रहै जाइ जो । इह कतेक घोँघाउज करै जाइ छै । कने सूनऽ नै देत........। हए-हए कुसमौलबाली, अपन छँओड़ाके ँ चुप ने कर' । ई भोभाशंखके ँ ।...........। अहा-हा...........मारही नै गै । तखन आर छँओड़ा अनघोल करतौ । हऽ ! एखन त' खाली भूमिका बन्हलकैए । हँ-हँ । ......चुप-चुप । हे, उएह बीलटदास किदन बजै छै ।

बीलटदास बाजल—बाह, बहुत बहुत ठीक । अच्छा । एकर बेटी भागि क' एलै । एहिसँ पहिनो दू खेपी भागि क' आयल रहै । अइ बेर जमाय तीन दिन बैसि क' चलि गेलै । मुदा ई बेटीकेँ बिदा नै कयलक । एकर जमाइक बहनाम छैक जे ई अपन बेटीके फयदा दुआरे रखने अछि ।

...........की कहलकै ? फयदा द्वारे । बाह रे बाह । बड़ा मेहीसँ कहै छै । ठीके ने । फयदा त' छैक । ....हँ-हँ बड़ा उचितवक्ता छै । अपने तेसर विआहक बहु सम्हारमे नै छै आ अनका लै पंचैती । तेसराँ सर्बेक अमीन सङे भागि गेलै बहु । एकइस दिन पर जा क' अनने रहय ....। गय अलगी सब सङे भागि ने जाइ जो तहूँ सभ । छत्तरक स्त्री डँटलक सभकेँ ।..........

बीलटक अन्तिम गप्पक व्यंग्य बुझलक बिसेखी । माहुरक घोँट पीबि रहि गेल । पंचक सोझा की बजैत ।

मुदा कारीदास टोकलकै—बीलट, पंचैती जाइ लेल छैक, पंच खाली ओतबे पर विचार करत । बिसेखीक बेटी भागि क' एलैए । एकर जमाय जखन बिदागरी करब' एलै ते किएक ने बिदा करै छै ? पंच अही पर विचार करत । आर अण्ट-सण्टसँ ओकरा मतलब नै ।

बाह ! की सटीक गप्प कहलकै । लोक प्रसन्न भ' गेल । पाँचो पंच एकस्वरेँ बाजल—एकदम ठीक ।

मुदा कोनमे बैसल हीरालाल तड़ङल—नै । बीलटदास ठीक कहै छैक । ई अपन बेटीकेँ फयदा दुआरे रखने अछि । सिखा-पढ़ा क' ....।

—खामोश, खामोश पेटमेन साहेब । चिकरल गुंजा । पहिल वारमे मिलिटरीमे रहय । एखन पिलसुन पबैत रहय । पंचैतीमे बड़ा कड़ा ओ नियमक पाबन्द । बाजल—खामोश हीरालाल । ई रेलबेक पेटमेनी नै छै । ई जतिया-पंचैती छैक । बिना पंचक हुकुम के किछु ने बाजि सकै छह तोँ ।

मोन मसोसि क' रहि गेल हीरालाल । शान्त स्वरेँ बाजल कारीदास-बिसेखी पंचके जबाब दौक ।

हाथ जोड़ि बिसेखी बाजल—पंचलोकनि, ई ठीक जे हमर बेटी भागि क' आयलि अछि । इहो ठीक जे एहिसँ पहिने ओ दू खेपी भागि क' आयलि रहय। हमर जमायो बिदागरी खातिर आयल रहथि । मगर ई एकदम झूठ जे हम बेटीक बिदागरी नै क' दैत छियैक ।

पंचलोकनि, लाजेँ हम ककरो मुँह देखाब' जोग नै छी । बेटी की स्वर्ग नीक कि सासुरे । अइसँ दू खेपी पहिने जखन ओ भागि आयलि रहय तँ अपने ओकरा बुझाक'-समझाक' बिदा केलियै । अइ बेर सब एकरा बुझओलकै । माय-बाप, भाय-भाउज, मुदा ओ जिद्द लाधि देलकै । हम पहुनाके कहलियै हाथ जोड़ि क', एक मास छोड़ि दौक । बादमे ओकरो मोन दोसर तरहक हेतै। ल' जेतै अपन । मुदा इहो जिद्द ठानि देलक । हम कहलियै, जेना मन होइ लऽ जाउ, अपन लोक छै । तै पर हमरे सोझाँ ओकर झोँट ध' क' ओकरा दू लात मारलकै । खएर, जे-से, अपन लोक छै, खाहे मारलकै, खाहे पिटलकै । पंच सभ, हम बिदा कर' लेल तैयार छी । एकर लोक भेलै । एकर अधिकार छै। मगर जाय लेल जखन ओ राजी नै होइ छै, प्राण हत' पर बिर्त भ' जाइ छै, त' हम की करियै ?

एक क्षण सब चुप्प रहल । बीलट दास बाजल–मुदा एना जँ मउगीक मोनसँ भेलै त' सभक बहु भागि जयतै । आ फेर नै अओतै पलटि क' । बाज एत' । ककरा घरमे ककर बेगति नै दुख-सुख कटै छै । हम त' कहै छियै जे मउगीक मोन परसँ बनहेज हँटा लौक त' ककरो घरमे ककरो बेगति नै टिकतै । ई किएक ने जेतै छँउड़िया ? एकर एतेटा मजाल । तखन समाजी की रहि जयतैक । बान्हि क' ओकरा ल' जयतै । सुगरा-चौरान चौरि क' ल' जेतै ।

बीलटक कथा असह्य लगलै सरूपकेँ । पंच भेल त' जे मोनमे हेतै से बाजत । तड़पल–इह ! मजाल छैक जे हमर बहीनकेँ सुगरा-चौरान चौरि क' ल' जयताह । चल' त' मर्द बुझियऽ ।

–खामोश, छोकड़ा खामोश ! बिना पंचक हुकुमक किएक बजलेँ तोँ ? पंचके बेइज्ज्त कयलेँ ? तोरा दस बेर कान ध' उठ-बैठ कर' पड़तौक । बाजल गुंजा । फेर कारीदास दिस स्वीकृतिक लेल तकलक ।

मूड़ी डोलाय कारीदास स्वीकृति देलक आ सरूपकेँ दस खेपी कान ध' क' उठ'-बैस' पड़लै ।

बीलटक मोन प्रसन्न भेलै । पंच थिक कि ठट्ठा ?

कारीदास खखास कयलक । साकांक्ष भेल सब । बिसेखी के पुछलकै–ओकरा भरि पेट अन्नक दुख होइ छै ?

–नै ।

–पाँच हाथ वस्त्रक दुख होइ छै ?

–नै ।

–अन्न-वस्त्रक दुख नै होइ छैक त' फेर स्वामी सङे नै जयबाक की कारण छैक ? आखिर की ओजह छैक !

चुप्प भ' गेल बिसेखी । जाइ प्रश्नक उत्तर देबाक भय होइक से सम्मुख उपस्थित भेलै ।

सरुपा ठाढ़ भेल । हाथ जोड़ि बाजल–पंचसभ, हमरा हुकुम हो त' हम

सभ तकलक एकरा दिस । बिसेखी शंकित भेल । आब की बाजत ई ?

कारीदास एक क्षण एकरा दिस तकलक । कहलकै–बाज ।

–एकर, हीरालालक, चालि आ संगति अधलाह छैक । ई अवारा-गुण्डा दोस-महीमकेँ ल' डेरामे अबैए, निसा-पानी करैए । सब ओकरा तंग करै छै। ई अपन इज्जतिके इज्जति नै बुझैए । जखन ओकरा बरदास्तसँ बाहर होइ छैक त' भागि अबैए ।

सब चुप्प आ स्तब्ध रहि गेल । बिसेखी आँखि फाड़ि बकर-बकर एकर मुँह तकैत रहि गेल ।

कोनमे बैसल हीरालाल फानि क' ठाढ़ भेल आ चिकरल–हओ बाप ! इएह सरवा ओइ दिन हमर गट्टा उनटा क' बाँहि तोड़ैत रहय । आब ई झूठ इल्जाम हमरा पर लगा क' बेइज्जति करैए ।

.........छितनक आङनमे हठात् व्याप्त निस्तब्धता एकाएक भङ्ग भेल । ......हए . ...हए.......। आब खुजलै पोल । गे दैओ । कोना ने भागि अबौक छौँड़ी ? कोढ़िया ....मुँह-झौँसा । ....चुप-चुप । सभटा झूठ । ओइ छौँड़ियाक हालत के कहतै । ....कोनो बहाना चाही । गे काकी, मचकी कोना झुलतै ओत'.....।

सरूप एकदम गम्भीर रहय । बैसल त' नहूँए टोकलकै बिसेखी–सत्ते रे ?

–तोहर सप्पत ।

आ बिसेखीक देहक समस्त तन्तु लोहा जकाँ कड़ा भ' गेलै । जँ लऽगमे रहितै हीरालाल त' सोझे मुट्ठीमे ल' भरकूस क' देने रहितैक । पंच पर नजरि गेलै त' चुप्प भ' गेल ।

कारीदासक वृद्ध मुँह गहन गम्भीर रहैक । एक-एकटा रेख शांत-स्थिर, आँखि गोल-गोल, सरुपा पर स्थिर । पुछलकै--तोँ कोना जनलेँ ?

–एत्तऽ अबैत काल बहिन कहलक । कहलक जे पंच जखन जिद्द करै त' कहय लेल ।

सभ पंच चुप्प भ' एक-दोसराक मुँह दिस ताकय लागल । मुदा कारी दासक बृद्ध ओ अनुभवी आँखिमे हँसीक रेख आबि बिला गेलै ।

पंचमे विचार भेल ।

निर्णय भेल जे हीरालालकें बिजलीक तरफसँ जबाब भेटैक । नीक घर-बर ताकि बिसेखी अपन बेटीक सम्बन्ध करा देअओ ।

हीरालाल दिस ताकि कारीदास बाजल–बाउ, स्त्रीकें पालन केनाइ सीख'। पंच बड्ड त' तोरा स्त्री देया सकै छौ । ओकर मोन मिलाब'मे पंच कोन मदति करतौ ? ई लूरि त' आनइ पड़तौ अपनामे ।

ओम्हर अन्हारमे छीतनक पछुआड़मे सरूपक कान्ह पर मूड़ी दय बिजली कानि रहल छलि । सरूपक मुँह पर ओहने तेजक दीप्ति रहैक मने कोनो भारी समर विजय कयने हो ।

छओ

बिसेखीक नामे साबा तीन बिगहा रहै सर्वेमे खाता खोलि देने । दस डिसमिल घरोक फूट क' खोलि देने रहै खाता–बिसेखी पासवान पेसर जंगी पासवान, रकबा दस डिसमिल, कैफियत खानामे मकान-मय सहन दर्ज रहैक । कतेको गोटाके अहिना क' खाता खोलि देने रहै । छतरा मुदा सिकमी बटेदार भेल रहय ।

ओहिना मोन रहै बिसेखीके ।

भारी बदमास हाकिम रहै आयल सर्वेमे, मदरासी हाकिम । पिंडश्याम, पातर, नवतुरिया । आरिये आरि भेल घुरै । बदर चेक करैत । ककरो ओतय पानिओ ने एको घोट पीबै । लाख छटपटा क' रहि गेलथिन जंगबहादुर बाबू जे एकछन दुआरिपर बैसि लिअ' से नै बैसलनि । हाथी कसायले रहि गेलनि ।

मोन पड़लै । खयर-बन्नीमे हऽर जोतैत रहय । लगले पहुँचलै हाकिम । पुछलकै । किसका खेत है ?

मालिक पहिनेसँ सिखा क' रखने रहै । बाजल..........सरकार, जंगबहादुर बाबूक खेत छैक ।

–जोतता कौन है ?

–मालिकेक जोतमे छैक । हम ओकर जऽन छियै सरकार । ओकरे हऽर-बड़द छैक ।

–झूठ बोलता है । मालिक ऐसा सड़ा बैल रखेगा ? तुम बटेदार है ।

–नै सरकार.........

बैसाखक लहरैत पछबा । हाकिम एकरा हाथक पेना छीनि दू पेनाठ मारलकै–साला, अब भी झूठ बोलता है । नाम बोलो.........।

आ ओइ दिन भरि दुपहरिया टोपरे-टोपरे बउआ क' सभक नामे खाता खोलि देलकै । पित्तड़ मढ़ल दाँतबला हाथी ओहिना जंगबहादुर बाबूक बन्हले रहि गेल रहनि पाकड़ि तर ।

ई सभटा भूमि जंगबहादुर बाबूक बकास्त रहनि । समस्त बबुर बन्नाक लोक जऽन-बटेदार रहनि । सर्बेमे सभक नामे खाता खुजि गेल रहैक । तथापि जंगबहादुर बाबूक पुरान तेजसँ सभ अभीभूत रहय । सालो-साल जजाति बाँटि क' दैत रहनि ।

एहिबेर मगर मुसहरीक तीन घर आ दुसधटोलिक पाँच परिवार चुप्पे मकै काटि लेलक । पटुआ काटि लेलक । जजाति बाँटि क' नै देलकनि । खुलासा नै बाजय केओ । गोल-मोल उजुर-माजुर करय–मालिक, खा गेलियै । रीन सधा देबै ।

स्वामित्वक प्रश्न खुलासा नै होअय । जंगबहादुर बाबू अनुभवी लोक रहथि । सोचथि-बिचारथि । समय-साल देखथि । जन-बोनिहार फूजल ऊक भ' गेल अछि । हठात् संघर्षसँ बाचय चाहथि । मुदा एकदम छोड़ियो देला उत्तर नीक नै । तखन त' सभके देखाउसि लागि जेतै । आरो भूमि बचनाइ कठिन भ' जेतनि ।

दस गोटाक खेतमे चन्नी लागल रहैक । एखन फड़ल नै रहै । मुदा आब काटय जोगर भेल जाइत रहैक । सिपाही पठाय समाद देलथिन–जजाति बाँटि दे ।

बिसेखीक दस कट्ठामे चन्नी बेस जोरगर रहै लागल । छतरोक खेतमे रहै चन्नी । ई संघर्ष एकदम सोझाँ-सोझी रहै ।

बिसेखीक दलान पर छोट-छीन गोष्ठी जूटल रहय ।

छतरा पुछलकै–काका, की करबहक ? बाँटि देबहक पटुआ ?

–देखही की होइ छै । जे सभ करतै सैह हेतै ने । एकगोटाक कयलासँ त' किछु ने हेतै । गम्भीर स्वरेँ बिसेखी कहलकै ।

मोगला बाजल–हओ, सभक कोन चर्चा । अपनामे एक विचार रहै सभक तखन कोन गप्प छैक । से त' सभक सब रंग विचार होइत छैक ।

–आ एकटा गप्प सुनलहक । छत्तर निराश स्वरेँ हँसि बाजल–मुसहरीक बुच्चो, खखना आ फिरंगी आइ जा क' कहाँदन अपन जमीन सुपुर्दी क' देलकै मालिकके ।

चौंकल बिसेखी-धुत्, झुट्ठे । एहनो कतहु भेलैए ? बुच्चो आ खखना नामे त' खाता खुजि गेल रहैक । तखन किएक सुपुर्दी ? हँ, फिरंगियाके सिकमी रहै साबा बिगहा ।

हँ हओ, हमहूँ सुनलियै । बटोही कामति देखलक तीनूकेँ फारबिसगंजमे पूरी-मिठाइ खाइत । पुछलकै त' खखना कहलकै–कोन हमर बाप-दादा जमीन बला भेल जे आइ हम बनू ग' । आ मालिकके सङे के मोकदमा लड़त ? तिनिये तारिखमे हम सब लम्बा भ' गेलौं पुरनिञा दौड़ैत-दौड़ैत । मोगल बाजल ।

–छत्तर बड़ हतोत्साह रहय । बाजल–हँ, ठीके कहै छैक । फिरंगी पर चारि सालक वासलातक नालिश कयने रहै जे जजाति नै बाँटि दैत अछि । बुच्चो आ खखना पर टाइटिल सूट दायर क' देने रहै । आइए तीनू गेल रहै तारिखमे ।

मोगला बाजल–हँ । आ सभ बाजीदाबा लीखि देलकै जे जमीन मालिकक छैक, दखल-कब्जा ओकरे छैक । गलतीसँ सर्वेमे हमरा लोकनिक नामे खाता खूजल रहय ।

बाप लग चुप भेल बैसल रहय सरूप । बाजल–जखन अपने मोने सभ जा जा क' सुपुर्दो क' देतैक तखन कोन उपाय ? मुदा अपना टोलमे त' केओ ने एखन धरि सुपुर्दी केलकैए । आ हओ, मुसहरीक लोक बुते हेतै जमीन जोतल । भरि दिनुका खरची घरमे रहतैक त' बोनिञो ने जेतै कमाइ लेल ।

दीर्घश्वास लेलक छत्तर । ई सुपुर्दीक बाट खुजि गेलासँ आओर पराभव । दस गोटा पर केस देखि संतोख होइक । एकसर त' साहसो छूटि जाइ छै । बाजल-हओ काका, हमरो त' छै सिकमिए । बाँटि क' देबामे कोन हरजा ? मुदा रसीदत' मालिक देबे ने करतै । अरे फिरंगिया के की भेलै ? तीन बरख खऽढ़-खऽढ़ क' जजाति बाँटि देलकै । मुदा रसीद के माँगत मालिकसँ । आ

फेर तीन बरखक बाद बासलातक नालिस ठोकि देलकै बेचारा पर । हम की करिऔ से फुराइते ने अछि ।

बिसेखिओकेँ किछु ने फुरलै । एकर कोन उपाय ? मालिककेँ टाका छैक । बेटा पुरनिआमे ओकील छैक । पाइक खरच नै होइ छैक । मुदा बबुर-बन्ना त' पेरा गेल ।

सरूपा बाजल–नै बाँटि दहक तखन । अइमे सोचबाक कोन बात । नालिसे सँ रुपैया दिहक । जखन देलो पर नालिस आ बिन देलो पर, तखन देलासँ कोन लाभ ?

से त छँओड़बा ठीके कहलकै ने । सोचलक छत्तर । हँसल–से त' ठीके मुदा मोकदमाक तारीख ढोयबाक ककर सक छैक ? एक तारीखमे पेट बान्हि क' जाउ तैओ दस टाकाक खरच ।

बिसेखी ढाढ़स दैत कहलकै–देखही की होइत छैक । जमीन रखबाक अपन साध कोसिस करबे करी । बिना लड़ने एना खखना-बुच्चो जकाँ सुपुर्दी केनाइ ठीक नै ।

–से त' ठीके । मुदा मोकदमाक खरचो त' फेर जूटल ताकै ने । मोगला बाजल ।

सरूपा बाजल–से नहि । सभ गोटा मीलि क' चन्दा करै जाह । एक गोटा केओ सब तारीख पर जेतै । एनामे खरचो कम पड़तै । झंझटो कम हेतै ।

तीनू हँसल । बिसेखी, छत्तर आ मोगला ।

छत्तर कहलकै–मगर अइ टोलमे ककरो पर ककरो विश्वास छैक ? क्यो चन्दा नै देतै । हेतै सभके जे चन्दा खा क' मालिकमे मीलि जायत । ओकर हिसाब लेबा लेल फराक तकरार उठतै ।

–तखन कोन उपाय छैक ? बिसेखी पुछलकै ।

छत्तर मूड़ी डोलाय बाजल–कोनो ने । थोड़ेक काल सब चुप्पे रहल ।

फेर बाजल छत्तर–आइ भोला सिंह आयल रहै । कहि गेलै सभकेँ काल्हि भोरे पटुआ काटि क' बाँटि देबाले'।

भोला सिंह रहनि सिपाही, जंगबहादुर बाबूक ।

–की कहलही ? पुछलकै बिसेखी ।

–की कहबै ? किछु ने । कालिह भोरे हँसेरी हाथे पटुआ काटि लेतै । सएह कहि गेलै । तोरा कह' ले कहि देलकह ।

सरूपा साकांक्षा भेल । बाप दिस तकलक । बिसेखीक मुँह चिन्तित रहैक, आँखि गम्भीर ।

सरूपा बाजल–अँए हओ । कालिह ने कटतै हँसेरी ? इजोरिया राति छैक । राता-राती अपन पटुआ काटि ली । तखन देखल जयतैक कालिह ।

तीनू गोटा हँसल । हँसि क' गप्प टारि देलकै ।

अष्टमीक चन्द्रमा आकाशमे रहय । डेढ़ पहर राति बीतल छल । जाड़क कुहेस चारूकात धूनल तूर सन पसरल रहै ।

दूगोट छाया एहन समयमे तन्मयतासँ पटुआ काटि रहल छल । बिजली आ सरूप ।

–एक कट्ठा आर हेतौ अंदाजन ? पुछलकै बिजली ।

–ओहुसँ कम । एम्हर बड़ छहर छैक । सरूपक देहपर उएह दोहरि रहैक जे कलपू बिजलीकेँ देने छलै ।

सीत बर रहैक ।

–हे, तों त' एकदम भीजि गेलें, गे । हे, ले, दोहरि ल' ने ले ।

–नहि-नहि । हमरा नै होइए जाड़-ताड़ । ओढ़ने रऽह कलबल । कहि दै छिऔ ।

–इह । हमरा नै होइए ! अही दुआरे नै अनैत रहिऔ तोरा ।

–एकसर कोना आब' दितिऔ रे कोढ़िया । मूड़ी मचोड़ि दितहु पीपर तर ब्रह्म पिचाँस । काज करैत काल कतहु जाड़ होइक ?

पटुआ काटयमे तन्मय रहै बिजली ! छीप पकड़ि झुका दैक ओ जड़िमे कचिया भिड़ा काटि लैत रहै–कच्च । अनवरत । बाँहि-हाथ, केश-आङी एकदम भीजि गेल रहैक । पटुआ पर लटकल ओसकण झहरि जाइ । माथ पर, मुँह पर, केश पर । आँचर डाँड़मे कसि नेन रहै, नूआ जाँघ धरि उछहने ।

–इह धोन्हि केहन एलैए आइ । बिजली बाजलि ।

–हँ थोड़े कालमे आओर भ' जयतैक बेसी । अइ कातक छोड़ि दही बरू । थोड़बे त' छैको ।

हमहू सैह कह' लेल रहिऔ । बोझ आब बान्हि ले ।

–हूँ !

सरूप बोझ बान्ह' लागल । काटल पटुआ समेटि दै बिजली । सरूप गोलिआ-मोलिआ बोझ बन्हने जाय ।

–थोड़े छोटो-छोटो बन्हही । ओते-ओते हमरा नै उठत । बिजली कहलकै।

धुत् ! ढोयबाक कोन काज छैक ? एखन ओहिना घिसिआ-घिसिआ धारक कङनी परसँ खसा देबै नीचा झाँखुड़ तर, दू दिन बाद गोड़ि देबै ।

–से त' ठीके । चन्नी छै ने । मासो दिन सुखायल धत्ता पर रहतै तैओ खराब नै हेतै ।

दूनू भाइ-बहिन बोझ पकड़ि घिसिआ-घिसिआ धारक कछेड़ परसँ नीचा खसा दैक ।

बिजली हँपसि गेल रहै । एकदम थाकलि । सरूप कहलकै–हे, बैस तोँ। आब दसटा बोझ छैक बाँचल । हम फेकि देबै ।

आरि पर जा क' बिजली धप्प द' बैसि गेलि ।

बोझ खसा लौटल सरूपा त' देखलक बिजली निश्चल रहैक बैसलि । पाथरक मूरूत जकाँ । ठेहुन पर मूड़ी रखने । कौखन क' ई अहिना भ' जाइत छैक । जेना कतौ हरा गेल होइक ।

थोड़ेक काल ठाढ़ रहल सरूप, बिजली दिस तकैत । मुदा ओकर तन्द्रा नै टुटलैक ।

–बीजो.......नहुँए टोकलकै ।

बिजलीक तन्द्रिल मुँह चैतन्य भेलैक । आँखि जगलै । भाय दिस ताकय लागलि ।

–ओँघा गेलेँ गे ? सरूप पुछलकै ।

–नै रे । कनेक काल चुप रहि चारूकात अकानि क' बाजलि बिजली–राति केहन निसबद्द छैक । सन्न-सन्न करैत । हमरा होए रातिओ बजै छैक । एकदम चुप्प रहि क' बजै छैक ।

फेर कनेक काल चुप्प रहि बाजलि–ओ जखन क' रातुक डिपटीमे चलि जाइक त' खिड़की खोलि क' अन्हार दिस तकैत-तकैत एहने आवाज सुनाइत

रहै । सन्न-सन्न । रातिक सुर । एकदम मोन केनादन भ' जाइ छै ओ सुनि क' ।

सरूप बिहुँसल—पहुना मोन पड़लौए की ?

बिजलीक मुँह पर स्मृतिक छाया रहैक । डूबल-भासल स्वर । बाजलि कि जान' गेलियै । मउगीक जिनगी महाग विचित्र होइत छैक । ओकरा नीको मोन पड़ै छै या अधलाहो मोन पाड़ैत नीक लगै छैक । ओइ दिन मोन होअय जे भने ओकर गट्टा तोँ तोड़ि दितही । मगर फेर जखन पंचमे ओकरा जबाव भेटलै त' कहाँदन ओ बड़ हिचकि-हिचकि क' कनै । आब सोचै छियै जे ओ जेहन छैक ताहिमे ओकर कोनो दोख ने । हमहूँ जेहन छी तइमे हमरो कोनो दोख ने ।

—तोरा आब पछताबा होइ छौक की ?

बिजली हँसलि—नैरे पछताबा त' हमरा कोनो चीजमे नै होइए । बुझलेँ । पछतेनाइ बेकार थिक । लोक जे किछु करैए अपना जानि क' अपन नीक लेल जरूरी बूझि क' करैए । ओकर फल अधलाह कोना हेते ? बूझ तँ जे फल होइत छैक ताही द्वारेँ लोक कोनो काज करैए । अनका नजरिञे भने ओ अध लाह हौक मगर ओइ आदमीक मोनक जोगरे होइ छैक ।

—अच्छा.......आब चल ।

—बाबूकेँ त' नै कहने रही । हमरा द' की सोचैत हेतैक ।

जे तोँ आइ कलपुए ओत' रहि गेलही । राति कहिओ ने बितबैत रहै बिजली कलपू ओतय । घर-आङन अपन इएह बुझैत रहै । स्थायी । कलपू ओकर प्रणयक पात्र रहैक, कल्पनाक मधुर कुहेलिका, जीविकाक सम्बल नै ।

धोन्हिसँ मातल इजोरियामे बिजलीक श्याम ठोर पर हँसीक पातर रेख चमकि गेल ।

प्रातखन ।

हतप्रभ छत्तर बैसल रहै रौदमे बिसेखी लग । बिसेखीक मुँह गम्मीर रहैक। उदास ।

पुछलकै—हँसेरी पटुआ कटै छैक ?

सुखैल हँसी हँसल छतरा । बाजल—हँ । गोड़ तीसेक जऽन छैक । दसटा लठैत । भोलासिंहक हाथ मे भाला छैक । दनादन पटुआ कटा रहल छैक । मोगलाक खेत कटा गेलै । फगुनी काकाक आधा समाप्त छैक । रौदियाक तँ साते कट्ठा रहै । एके पलमे सुड़डि देलकै ।

—आ तोहर ?

पराजित भावें हँसल छत्तर । बाजल–एखनं हमरेमे हाथ लागल छैक । नै देखल भेल हओ काका, चलि अयलहुँ ।

–केओ रोक-छेक नै केलकै ?

–धुत् । रोक-छेक ? ककरा प्राण भारी भेलै । मोगला गेलै कह' लेल कनिञे, से रामसरूप सिंघक सिपाही एक लाठी ब्रह्माण्ड तका मारलकै । ओकर कपार फूटि गेलै । सुनै नै छैक, ओकरे बऽहु हाकरोस करै छैक ।

फेर थोड़ेकाल चुप्प रहि बाजल–की करितियैक ?

–किछु ने । बिसेखी बाजल । दसक आगाँ एकगोटा निरर्थक जान देब' जायत ।

–से त' ठीके । मगर......। मगर काका अपन हाथसँ रोपल, कमायल, सोनित-पसेनासँ पोसल जजाति, नजरि सोँझा केओ काटि लौक त' कतेक मोन केनादन कर' लगैत छैक ?

मगर बिसेखी जे सून' चाहैत रहै से नै कहने रहैक छतरा एखन धरि । एकरो खेत कटल हेतैक कि कटतैक । आ ताही दुआरे भोरे गाड़ी ल' क' सरूपाकेँ परबाहा हाट बिदा क' देने रहै । पाँच मोन पटुआ छलै भेल कलपू मिसरक बटैयामे तकरे बेचबाक लेल । महा उद्धत रहै सरूपा, कोन ठेकान निरर्थक मारि टंटा बेसाहि लैक ।

खखसल । मोन कड़ा कयलक । पुछलकै–आ हम्मर ?

बिहुँसल छतरा । ई त' वास्तव मे गुरुयै कयलहक काका । अपन पटुआ रातिएमे काटि लेलहक । कहलकै भने तोँ अपन राता-राती काटि लेलह । चौंकल बिसेखी–राता-राती काटि लेलह ? से की ? फेर मोन पड़लै । काल्हि साँझुक सरूपाक गप्प । अच्छा, त' राति खन ई दूनू पटुआ कटैत रहै ।

ओह ! राति एकरा बिजली पर कतेक आक्रोश भेल रहैक । ई सोचि जे आइ कलपू ओतय रहि गेलि । आ ओ बेचारी जाड़क रातिमे सीतसँ भीजल पटुआ कटैत रहै । छी: छी: ।

सोर पारलकै–सरूपा...........सरूपा.........।

बिजली उपस्थित भेलै, चंचल आँखिमे हँसी नेने । बाजलि–ओ तँ गेल परबाहा । अपने भोरे पठा देलहक ?

कड़ा स्वरेँ पुछलक बिसेखी–तोँ सभ गेल रहें पटुआ काट' ? बिना पुछने ?

–हम नै बाबू । सरूपा एकसरे बिदा भेल । एकसर कोना जाय दितियै ओकरा ? भैयाकेँ नै कहलियै । सरूपा बाजल जे ओ बाबूकेँ कहि देतै ।

छत्तर कहलकैँ–त' बेजाय कोन केलहक ?

भीतरसँ बिसेखी प्रसन्न रहै । मुदा बाजल नै किछु ।

सात

अपन पुरान वृत्तिकेँ बिसेखी तिलांजलि द' देने रहय । आमदनीक स्रोत सुखा गेल रहैक । घरमे कट-मटी होमय लगलैक । मुदा तैओ धैर्य नै छोड़य ।

भगवानक दयासँ ई तीनू बिगहाक झंझट मेटा जाइक । तखन छओ मासक अवलम्ब कोनो प्रकारे भ' जयतैक ।

कदम तर बैसल स'नक जउड़ बाँटि रहल छल । बड़दक पगहा-तेगुनिआ। गेनालाल ओसारा पर बैसल स'नक भीड़ी ओरिया-ओरिया ऊपर मचान पर ध' रहल छल । पुछलकै–बाबू, ओइ खेतमे मकइ बूनि दियै ए बेर ।

–हँ, मकइ बूनि दही आ बगहा धान । मकइ कटला उत्तर धान बिदाह कर' जोगर भ' जयतौक । धारमे अइ बेर उत्तर बान्ह पड़लैए । पानि एतै एम्हरो ए बेर ओंहासी ।

–हँ । से त' हमहू सोचलिअइए । सब मकइ करतै त' ओगरबाहियोमे सुविध । हेतै । आकि ने ?

–हूँ । डोरी केँ तेगुनिअबैत बाजल बिसेखी । तिनपखियाक बीया थोड़ेक बदलि अनिहेँ । जेठमे तोड़' जोगर भ' जेतौक ।

कनेक काल चुप रहि गेना बाजल बड़द एकटा आर भ' जैतै त' जोड़ी लागि जैतैक । छत्तर काकाक बड़दक भजारीमे ई नै सकै छैक ।

.....हँ । कान्ह नै मिलै छैक । छैको एकरासँ जब्बर । खैर, देखही भगवान की करै छथिन ।

कनेक काल चुप रहल गेना । बापक मोन टोइत फेर बाजल–फिरंगी अपन बड़द बेचै छैक । गोला बड़द । अपना बड़दक खूब जोड़ी लगतै । पौने दू सै कहै छैक । डेढ़ सयमे दय देतैक । पूर छैक बड़द । बेस तैयार ।

बिसेखी किछु ने बाजल ।

–बिचार होअह तँ ल' लियै । पुछलकै गेनालाल । एतबाकाल धरि अन्यमनस्क रहय बिसेखी । आश्चर्यसँ पुछलकै–अँय ? टाका कत'सँ एतौ ?

धखाइत-धखाइत कहलकै गेनालाल–बिजुलिया दै छैक ।

आँखि निड़ाड़ि तकलक बिसेखी बेटा दिस । पीत आँखिक विस्मित दृष्टि। भौँह घोँकचि गेलै ।

सोचलक–तखन त' हीरालाल ठीके ने पंचैतीमे कहलकै जे बेटी के फयदा दुआरे रखने अछि ।

धीरे-धीरे क्रोध होमय लगलै बेटा पर । पीत-आँखि विस्मित नै रहै । क्रुद्ध रहैक । कलपू मिसरक टाका हेतैक । आर की ? मोन घिना गेलै । ओकर टाकाक व्यवहार करत । छी: छी: ।

बिजली-कलपू प्रणय सह्य कयने रहय । बेटीक खुशीक कारणेँ । बिजली ओकर हृदयक समस्त कोमलभाव नेने अवतीर्ण भेल रहै । ओकर हृदयगत जे किछु कोमल आ मधुर रहैक बबूरक कोमल फूल; दूर्वादलक श्यामता, मेघक गहन गम्भीरता--सभ जखन मीलि जाइक त' ओकर बेटी बिजली भ' जाइक । बिजली ओकर सभसँ पैघ दुर्बलता रहैक । एहि हँसमुखीक चक-चक उल्लसित आँखि, हँसैत मोट ठोर, ओझरायल केश-पास, झीकल-झीकल बाहु-युगल, एकर एकमात्र प्रसन्नता रहैक । कलपुओकेँ नेनहिंस कोर-काँख नेने रहय । आ बिजलीक मोन-प्राणमे खाली कलपुएटा बसल रहैक, तेँ सह्य कयने रहय । लोक-लाज, लोकापवाद, जातिक बन्हेज सभटा के तिलांजलि द' देने रहय ।

मुदा एहि उपाख्यानमे टाका पहिल बेर जखन प्रवेश कयलकै त' बड्ड अध लाह लगलैक । बड्ड क्रोध भेलैक ।

बेटा दिस तकलक क्रोधदीप्त नेत्रेँ । गम्भीर स्वरेँ बाजल–नै ।

फेर सभटा तामस चढ़लै बेटा पर । ई भारी बकलेल अछि । खोधिआ-खोधिया पूछत । सरुपा मुदा नै पुछने रहितय एना दबल-मुनल स्वरेँ । ओ तैखन अस्वीकार कय बिजलीकेँ डाँटि देने रहितैक आ ने त' बड़द कीनि क' दरबाजापर बान्हि देने रहितैक ।

सरुपक मुदा एहि समस्त वार्तालापसँ अलग बैसल रहय अस्त-व्यस्त सन। मुँह चंचल रहैक । आँखि क्रुद्ध । एकटा पैघ संठीक छरक्काके हाथमे नेने रहय ।

अन्यमनस्क भावेँ ओकरा तोड़ि रहल छल । खण्डी-खण्डी । छोट, फेर बहुत छोट खण्ड ।

की भेलैए एकरा ? कतहु लड़ि-झगड़ि क' त' ने आयल अछि ? सोचलक बिसेखी । फेर प्रश्न-सूचक दृष्टिएँ तकलक ओकरा दिस ।

सरूपा पुछलकै–बाबू हौ ? थानासँ तोहर नाम त' कटि गेलह ?

–हँ रे । इसपी साहेब अपनेसँ कहलकै तोँ नै रहेँ ?

–तैयो हाजरी होइते छ' ?

–नै त' । कहाँ ? चकित भ' पुछलकै बिसेखी !

–तखन ई सिपाही तीन दिनसँ किएक अपना ओइठाँ घुरिआइत छैक ?

हँसल बिसेखी आ गेनबो ।

गेनालाल बाजल–धौर बेकूफ । रे मोगल ककाक जमीन दफा चौबालीसमे जप्ती छैक । ओही पर दुरजोधन सिंह तैनात छैक । अपन डिपटी करैत छैक ।

मुदा हँसैत-हँसैत बिसेखी हठात् गम्भीर भ' गेल । छौँड़बाक पुछबाक अर्थ की छैक ? अच्छा, हूँ । बिसेखियो के कनेको पसिन्न नै होइक दुरजोधन सिंह । पहलमानी काटक देह । कोबीक फूल सन टूटल कान । नाक पर एक बाकुट मोछ बीड़ीसँ काड़ी ठोर । आँखि चंचल ओ अस्थिर । चाहा-चिड़ै जकाँ घेँट नमरा-नमरा चारूकात तकैत । अधिक काल बिजलीकेँ तजबीज करैत । ओकरे पर सटल रहै छैक नजरि एकर सदति । रहि-रहि मोँछ पिजबैत ।

बरनी । काल्हि अपन डिपटी पुरा चलि जायत । अपन आँखि छैक नचब' ने । अपने मोन छैक जार', सुड्डाह करौ ने ।

नै किछु बाजल बिसेखी ।

सरूपक मुँह तमतमायल रहैक । बाजल–भारी उचक्का अछि ई । भरि दिन बिजलीके डेढ़ आँखिए देखैत रहै छैक । निर्लज्ज । एकदम ने सोहाइत अछि हमरा ।

गेनालाल नै लक्ष कयने रहय । आश्चर्यचकित भ' भाय दिस तकलक । कहलकै–तोरा अनेरे संदेह होइत छौक । केहन भला आदमी त' छैक । सभके सभ देखै छैक ओहिना । कोनो खराप नजरिञे थोड़े देखै छैक ।

बिसेखी गप्पके समाप्त करैत बाजल–अच्छा, अपने काल्हि चलि जयतैक ।

डोरी बाँटल भ' गेल रहै । गेनाके कहलकै–रे कने बड़दके टहला दही । भोरसँ बान्हले छै ।

बिजलियोके दुरजोधन सिंहक दृष्टिपात अप्रिय लगै । ओकर पैघ-पैघ मोँछ देखि देह जरि जाइक । मोँछसँ बड़ झरकी रहै एकरा । बड्ड । ओकर दृष्टिपात चंचल क' दैक । अस्वस्थ । ओकर नजरि जेना एकर अन्तरालकेँ निर्ममता-पूर्वक छेद दैक । तहिना लगै । दुर ! एक पाँज मोँछ लदने अछि नाक त'र । की त' हम पुरुख छी ! पुरुष नै पुरुखक झ'ड़ । कोना लाल-लाल निर्दय आँखिएँ एकरा तकै छैक, मने एकरा चटैत होइक ! आ कि खाय-खाय पर होइक । केहन डेराओन आ भूखल आँखि छैक । झरक लगै ओइ आँखिक । मोन घिना जाइक । कौखन पीठ पर अनुभव करय, कौखन बाँहि पर, त' कौखन जांघ पर अनुभव करय । जेना कोनो अदृश्य मकड़ाक जाल एकरा देहमे चारूकात सटि जाइक । आ होइक जे तुरत नहा ली । केना तकैत छैक । बिना पपनी खसओने । जेना एकरा नाङ्ट क' क' देखैत होइक । छीः छीः ।

मोनमे होइक ओकर धह-धह करैत दूनू आँखिमे टाकु भोँकि दैक जा क' । मोँछ गोट-गोट क' उखाड़ि दैक ।

सरूपकेँ कहलकै–एँ रे, ई कोढ़िया भरिदिन कदमक गाछ तर किएक ओगरबाही देने रहैक छैक ।

सरूप गप्प टारलक–धुर ! खेत जपती छैक मोगल ककाके । अपन डिपटी पर छैक । तोरा कोन काज छौक !

–त' ई खेत पर डिपटी दैत छैक आ कि हमरा पर ?

–हत् ! अपन ओम्हर तकबे ने करी । ताक' दही । आ काल्हि चलिए जयतैक अपन !

भाइ-बहिनिक गप्प अपन सुनैत रहय बेनी । ननदिक व्यग्रता पर हँसलि । बीखसँ भरल बोलीमे बाजलि–ओ तोरा चीन्हि गेलह अछि नीक जकाँ ।

अनेरे तोँ एतेक भड़कै छहक । हय, मउगीके एकसँ दुइएमे लाज की संकोच, तकरा बाद जेहने तीन तेहने तीस ।

भ्रू-कुंचित दृष्टिएँ तकलक भाउज दिस । बाजलि–गे भौजी । सब गप्प सब ले ठीक नै होइत छैक । मोन जखन ठेसइ छैक त' ओतहि बैसि जाइत छैक । तोँ त' भसन्नरि छेँ, भसन्नरि । गोबरक चोत । तोरा नै बुझयतौक मोनक आगि

की होइत छैक । भइया सन सज्जन लोक भेटलहु । हमरे जकाँ नितुरक पाला पड़ितें त' बुझितही । आ कि तों तैओ ने बुझितही । हमरा होइए तों ओकरो लग ओहिना मगनक-मगन रहितें । ओकर कारी पेंट-हाफ सोडरमे बरका क' खीचि दितही । पथरकोइलाक धूँआसँ भरल ईंटाक ओइ छोट क्वाटरमे तों मगन रहितें ।

बिजलीक स्वर पातर होइत गेलैक । अपने भीतर जेना डुबल जाइत होइक । फेर कहलकै–एकटा गप्प बुझलें भौजी । सब माल पगहा तोड़ि नै पड़ाइ छै । सब गाछकें बिहाड़ि नै तोड़ि-मोडोड़ि दै छैक । बहुत गाछ बिहाड़िक दोगे-दोगे बाँचि जाइत अछि । फंड़ि-फुला क' सुखा जाइत अछि । मुदा कतेक अभागल गाछ बिहाड़िक बाट पर ठाढ़ झमारल जाइत अछि, बेर-बेर मचोड़ल जाइत अछि ।

–गय दाइ । बिहाड़ि-बसातक गप्प हम नै बूझै छियै । घर-गृहस्थी बसाबी। भगवान जे दिअय, नीक वा बेजाय, माथा चढ़ा क' संतोख करी । हम एतबे बुझै छियै ।

हँसलि बिजली । क्षुब्ध हास । बाजलि–भौजी, तों जे बुझै छही से तोंही बुझबही । हम जे बुझै छियै से हमही बुझबै । मगर.....। मगर हमरा कखनो क' होइए जे एको पल ले जँ तों बिजली भ' जैतें आ तोरो मोनमे वैह आगि लेसा जैतौक आ तखनो जँ तों हमरा यैह गप्प कहितें, तोहर सभटा गप्प हम मानि लितियौक । हमरा होइए, भउजी, जे हम अपने लोकक बीचमे एकदम अनचिन्हार होइ, एकदम एकसर होइ ।

आ चुप-चाप बिजली ओतयसँ उठि गेलि !

मुन्हारि साँझ भेल अबैत रहय । दूर बबूरक जंगल पर साँझक मलिन आँचर पसरल छल ।

दुरजोधन सिंह आबि रहल छलाह बिसेखीक घर दिस । काल्हि त' अपन चलिए जयताह । एक नजरि अइ बिजलियाकें देखि लेथि ।

विचित्र कटगर मुँह छैक । श्याम-श्याम आभा । चालि केहन छैक स्वच्छन्द, निर्द्व.. । आँखि केहन छैक निडर, बेफिकिर । देहक बुट्टी-बुट्टी फड़कैत । कलप-चढ़ल पितड़क बट्टम लागल खाकी उर्दी सन कड़-कड़ करैत ।

ओकर प्रणयी-स्वभावक अतिरंजित कथा तरबामे तेल पचबैत काल जीबछ चौकीदार कैक खेपी सुना चुकल रहनि । कलपू सङ्ग ओकर प्रणय अख्यान सेहो

ओकरे मुँह सुनने रहथि । दृष्टि-विनिमय भेल रहनि आँखिमे । ओकर क्रोध रहैक । मुदा तैं की ? सोचथि, इहो एकटा टाटक थिक । ई तँ एकटा स्वच्छन्द भ्रमरी थिक जे कोनो पद्मकोषमे बन्द भ' रसपान क' सकैछ ।

पयर तर ओस-सिक्त बलुआह बाट रहनि । कात-कात टुटल टाटवला घर- आङन ।

चारक खढ़ छेदि धुँआ उठि रहल छल जे ऊपर निर्वात आकाशमे लटकि जाय । मोन गुन-धुनि करनि दुरजोधनक । कौखन भयो होइन । कहुँ हल्ला क' देलक तँ भारी विपत्ति । नोकरियो पर आफद आ बेइज्जती फराक नै, ऐ बिजली सँ फराक रही । मोनक कोनो अव्यक्त शक्ति जेना हिनका एहि प्रयाससँ विमुख करनि ।

मुदा कामना-भोग-लुब्ध मोन नै माननि । घूरि-फिरि बिजली पर बैसि रहनि ।

हठात् अपनाकेँ कदमक गाछ तर पौलनि । आगाँमे बिसेखीक दलान । एकदम सुन्न, निर्जन । केओ कतहु नै रहय ।

एक क्षण ठाढ़ रहि आहटि लेलनि । अङनोसँ कोनो चाल-चूल नै भेटलनि । तखन इनारमे डोल खसबाक ध्वनि सूनि बाड़ी दिस तकलनि ।

बिजली इनार पर ठाढ़ि पानि भरि रहलि छलि । झुकि-झुकि बाल्टीकेँ खिंचैत । माँसल बाहु-युगल लचकैत । देखैत रहलाह । मोनक समस्त संकल्प-विकल्प समाप्त भ' गेलनि । यैह अवसर थिक । काल्हि चलिए जयताह । चल-चलन्ती बेरिया ई अवसर छोड़बाक नै ।

ससरि क' ल'ग गेलाह । तखन देखलकनि बिजली हिनका । चौंकलि । कोंढ़ एकबेर उनटि गेलैक । घर आङन सुन्न छैक । माय नै छैक । भौजी गेल छैक छत्तरक आङन । ई किएक एम्हर ससरल अबैए ?

मुदा मन्त्रमुग्ध सर्प सन क्रम रहैक दुरजोधन सिंहक । बिजली पर नेत्र स्थिर कयने रहय । ओकर पहिरनामे एकटा मैल नूआ रहैक । छीटक आङी परसँ एकटा लाल स्वेटर । हाथमे पातर कारी चूरी ।

दुरजोधन दिस तकलक बिजली । आँखि लाल-लाल, कोनो जानवर जेकाँ गोल चक-चक करैत । माथ पर हरिअर-हरिअर सीर जागल ।

दुरजोधनक अवरुद्ध कण्ठसँ बाहर भेलनि एक आखर – की ?

बिजली एको डेग पाँछा हँटलनि नै आ ने डेराइलि । सोचलक, तखन त' आरो एकर साहस बढ़ि जैयतैक । क्रुद्ध स्वरेँ बाजलि—घरमे माय-बहिन नै छौक रे कोढ़िया ?

दुरजोधन सिंह अप्रतिभ भेलाह । हठात् एकटा गप्प मोनमे अयलनि । कहलथिन । हीरालाल तोरा पर मोकदमा केलकौए । से तोँ चलान भ' जेबेँ । हम चाहिअउ त' तोरा बचा सकै छियौ । मगर से तोँ चाहैँ तखन ने ।

बिजली हाथमे एकटा पजेबा उठा लेने रहय । ईंट उसासि बाजलि--जा कोढ़िये की मारब एहन ईंट जे चनिये भरकूस भ' जयत' ।

मुदा एक धाप भेलैक दुरजोधन सिंहकेँ । बिजलीक फेकल ईंट गद्द द' पाँखुर पर लगलनि । मुदा सम्हरि क' नै । देह गैँच नेने रहथि ।

बिजलीकेँ भरि पाँज क' ध' जोरसँ बाहु-पाशमे कसि लेलनि । बक-बक क' जेना मर-मूठि लागि गेल होनि ।

चीत्कार मारलक बिजली—सरूपा, ...रे.......दौड़.......रे.......।

फेर बक-बका क' दुरजोधनके पाँखुड़मे दाँत बैसा देलक । मुँहमे सोनित भरि गेलै ।

बक्क द' छोड़ि देलथिन ओकरा । मुदा एखन मनुक्ख नै रहथि । कोनो दुर्दान्त पाशविक भावक वशीभूत । बिजलीक गट्टा पकड़ि फेर झिकलनि । बिजली अपना दिस घींचि रहलि छलि ।

बड़द हँकने अबैत रहय सरूपा, तखने बिजलीक चीत्कार सुनलक । दौगल । कदमक गाछ तरसँ समस्त व्यापार एक नजरिमे देखलक । दुहूमे झिक्कमझोरा होइत । हठात् बाँहि छुटलासँ बिजली नीचा खसि पड़लि । दुरजोधन झुकलाह ओकरा पर भरल मेघ सन । बिजली हाथ-पयर चला रहलि छलि ।

सरुपाक हाथमे किछु ने रहै । बड़द रोम' बला एकटा छौँकी मात्र । सोझाँ मे कुट्टी काट' बला गड़ाँस रक्तालिप्त । दुरजोधन सिंहक क्षत-विक्षत शरीर नीचामे निष्प्राण पड़ल रहैक । दुरजोधनक शोणितसँ भीजल बिजलीक आँचर नीचामे लेढ़ाइत रहैक । केश नोचायल रहैक। भय-विस्फारित नेत्रेँ भाइक रक्त-रंजित हाथ देखि रहलि छलि । माय नीचामे घुसकुंनिआ मारने माथाहाथ द' बैसल रहैक ।

सरूप दिस तकलक । ओकर बीत आँखि भाव-हीन रहैक । माथ पर चिंताक रेखा । भौंह कुंचित ।

सेहन हाथसँ गछुआस ल' लेलक बिसेखी । बड़ी कालधरि ओकर रक्त रंजित गात्रकेँ अनिमेष नजरिये देखैत रहल । कामान्ध अविवेकीक रक्तसँ लथपथ गात्र । आँखि मुना गेलैक । माथ पर चिंता-रेखा गहीर भेलैक । ठोर कँपैत रहैक । गुम्म-गुम्म ।

धुम-धुमिर लेल ओना समय ससरि गेल होइक । संध्याक ओ क्षण हठात् एक पल ले स्थिर-स्तब्ध रहि गेल हो ।

बिसेखीक मुँहक भाव स्वस्थ भेलैक । चिंता-रेखा सब नहुँए बिला गेलै । ओकर कँ आँखि खोललक त' कठिनताक स्थान पर कोमल आर्द्र भाव रहैक । निश्चयक सतेज तेजसँ दीपित । एकबेर चारूकात देखलक । फेर सरूपकेँ कहलकै—जो बौका क' हाथ-पयर धो ले ग' । आ मोन राख एकटा गप्प । हम मारलिऐ । हमही सद्द हँकने अबैत रही ।

उत्तेजित मनसँ सरूपकेँ एकर कोनो अर्थ नै लगलैक । चकित भ' पुछलकै—से किएक ?

—से किएक ! बिसेखी हँसल । उत्तेजनासँ उठैत-खसैत भरल छातीबला अपन बेटाकेँ देखलक । मोछक पम्ह करिआ रहल छलैक । बाजल—तोँ नै बुझबही । जखन तोरा बेटा हेतौक आ कहिओ ओकरा हाथमे एहने सोनितायल गँड़ास देखबही तँ प्रायः बूझि जाही ।

सरूपक माय एक बेर बेटा दिस तकलक आ फेर स्वामी दिस । मुँह पर आँचर राखि हिचुकि-हिचुकि कानय लागलि ।

सरूप दिस ताकि बिसेखी बाजल—मोन रखिहेँ हम मारलिअइ । फेर बिजलीकेँ पुछलकै—मोन रहतउ ने ?

चेतना घुरलैक बिजलीक । बापकेँ भरि पाँज ध' कानय लागलि ।

बिसेखीक आँखि भावहीन रहैक । मुँह सहज-स्थिर । बाजल—किएक कनै छेँ ? कान जुनि । आ हे, ई सोचि-सोचि दुख नै करिहेँ जे ई तोरा खातिर भेलै । सभ संयोग होइ छैक । चुप-चुप बिजो......बिजो......बिजो बेटा ।

फेर कनैत पत्नी दिस तकलक । चालिस वर्ष धरि रौद-बिहारि, पानि-पाथरमे संग देब' बाली अभिन्नमित्र, जीवनक सहचरी । कुम्हरा पाटक इनारसन......छोट,

बालुयुक्त तृप्तिदायक निर्मल जलसँ भरल । घुसकुनियाँ मारने बैसलि सरूपक मायक समीप जा बैसि रहल चुक्कीमाली भेल ।

प्रेम विह्वल स्वरेँ कहलकै–बेटा तँ बापक जगह लैते छैक, कखनो बापो के बेटाक जगह लेब' पड़ै छैक । कि ने गय ?

फेर उदास हँसि-हँसि बाजल–तोँ कनबेँ त' धीआ-पुताकेँ धैरजके देतै? परिवारक सबसँ जेठक कतहु आँखि नोराइ ? बताहि नहितन । चुप-चुप !

अंधकार बढ़ल जाइत रहय !

आठ

मोकदमा चलल । खूब सकारि नेने रहैक बिसेखी ।

पानि जकाँ कलपू टाका बहा रहल छलाह । तीन बीघा खेत भरना रखा गेलनि । एतबा दिन धरि बिसेखी ओतयसँ अबरजात नै रहनि । एहि कादो-पाँकसँ फराक रहथि । एहिमे हठात फुलायल नील-कमल मात्रसँ सरोकार रहनि । मुदा मोकदमाक पैरबीमे अबरजात बढ़ि गेल रहनि । हिनके टप्पर पर बिजली, सरूप कि गेना जाय फारबिसगंज आ तकरा बाद हिनके सङे जाय पुरैनिआ, गवाही-इजहारमे । अपन बापो प्रतिएँ प्राय: एतबे तन्मयताक संग उद्यम करितथि । पुरैनिआक सबसँ नीक ओकील रखने रहथि ।

मुदा बिसेखी बी०सी० रहय । माशूल चोर । पुरान इतिहास कारी रहैक । थानामे पुरान रेकर्ड रहैक । आब नाम कटलै, पुलिसक कस्तन कम भेलै त' खून क' बैसल । बेटीक सतीत्वक रक्षा करैत काल ई खून कयलक, हठात् विश्वास जोग नै । सेहो केहन बेटी त' जे अपन बिअहुआ स्वामीके त्यागि कल्पनाथ नामक एक व्यक्तिक धौरबी रहय । की एहन लोकक सतीत्व रक्षाक हेतु खून करबाक आवश्यकता पड़तैक ? हेँ-हेँ-हेँ । एहन लोकक सतीत्व की ? हेँ-हेँ-हेँ । सरकारी वकील बखिया उधेसि देलथिन । संभावना की ? एकदम स्पष्ट । एकठाम डकैतीक आयोजनक सभटा रूप जखन ई तैयार कय नेने रहय, एकर सभ संगी उपस्थित भ' गेल रहैक त' इ सिपाही बेचाराके पता लागि गेलैक । आ ओ बहादुर ड्यूटीमे अपन जान द' देलक । ओकरा मारनाइएटा उपाय बचि गेलै अइ माशूल चोरके । कारण ओ भंडा फोड़ि दितै । आ आब सतीत्व-रक्षाक स्वांग !

चुपचाप कठघरामे ठाढ़ भेल अपना ऊपर अभियोग सुनैत रहल ।

गवाहीक कटघरामे ठाढ़ि बिजली नाना प्रकारक प्रश्नोत्तर दैत रहलि । साफ-साफ । शुद्ध-शुद्ध । साँपके तेयागि देलक । ओकरासँ मोन नै बैसलैक। ओकरासँ कोनो सम्बन्ध नै छैक आब । हँ बापेक ओतय रहैत अछि । कल्पनाथक संग कोन सम्बन्ध छैक ? ....जे स्त्री-स्वामीमे रहैत छैक सैह कि । नै, विआह नै भेल छैक ।

कल्पनाथ एकरा संग बिआह करतै कि नै से नै पुछलकैए आइ धरि ओकरा सँ । नै एकदम झूठ । दुरजोधन सिंहके कहिओ आइ धरि इसारा बतान नै केलकै । नै, ओकरा फँसयबाक कहिओ प्रयत्न नै कयलक । ओकरा पर एकरा घृणे होइक । नै, दुरजोधन सिंह एकर पुरान इयार नै रहैक । ओकरा त' पहिले बेर देखने रहय । नै, ई बदचलन नै अछि । एकदम सच्चरित्र अछि । कल्पनाथ के छोड़ि एकरा मोनमे आन केओ ने आइ धरि बसलैक अछि ।

कल्पनाथ सुनथि आ विचलित भ' जाथि । एकटक बिजली दिस तकैत रहि जाथि । कठघरा पकड़ने शान्त भावेँ ठाढ़ि ।

मुदा बद नीक, बदनाम नै नीक । बिसेखीकेँ 'जनम-हौस' भेलैक । आजीवन कारावास । हाइकोटमे अपील भेलै । मुदा सजाय बहाल रहलैक ।

अन्तिम बेर हाजतिमे भितरी ठाढ़ भेल लोहाक छड़ पकड़ने बिसेखी कनैत पत्नी दिस ताकि कहलकै– तोँ किएक कनै छेँ ? ढ़ाढस बान्ह । जीबामे वैह काज़ दैत छैक । आ तोँ किएक मोन छोट करै छेँ । तोरा जगह पर संसारमे बिजली छौक, हमरा जगह पर गेना-सरूप । बेटा-बेटीमे त' लोक अपने फेर-फेर जनमैए आ जीबैए ।

संकेतसँ कलपूकेँ बजाय कहलथिन–तोरा नेनहिसँ कोरा-काँख नेने छी। कठघरामे जे-जे बिजली बाजलि सुनलह । ओकरा कोनो दुख नै होइक ।

कलपू चुप्पे रहलाह । भरल कान्हवाला बिसेखीके देखैत रहलाह ।

मुदा बेसी दिन जहल नै काटि सकल बिसेखी । संग्रहणीसँ जेलेमे मुइल छबे मासमे ।

नओ

बिसेखीक परोक्ष भेलाक बाद गेना घरक मालिक भेल । कतबो पैघ घटना घटौ ने किएक, लोक मुदा खेपिए लैत अछि । ककरो बेत्रे संसार नै रुकै छैक ।

सरूपा-मायके होइक जे बिसेखीक बाद नै जीबि सकत । मरि जायत । मुदा मनुक्ख महाग थेथर जीव होइछ । सब किछु सह्य क' लैछ । सब कथुक अभ्यास लागि जाइत छैक ।

बिसेखीक छाहरि तर बढ़ैत ई परिवार हठात् परिस्थितिक प्रखर रौदमे पड़ि गेल । मौला गेल एक बेर, फेर हंरिआ गेल । ओकर अनुपस्थितिसँ अभ्यस्त भ' गेल ।

जमीनक प्रश्न ओहिना रहैक लटकल । सभ पर वासलात आ टाइटिलसूट ठोकि देने रहथिन जंगबहादुर बाबू ।

गेना पर टाइटिल सूट रहैक । मासमे एक खेपी जाय पड़ैक अररिया । छतरा सहजहिँ बासलातक मोकदमाक तारीख ऊघि रहल छल ।

भरि दुपहरिया ओइ दिन बरखा भेलै । बेर टगि गेल रहैक । छत्तर, गेना आ सरुप रहय बैसल ।

दस कट्ठामे मकइ रहै गेनाक । बालि परसूए तोड़ि नेने रहय । धान रहै लागल ओही खेतमे । बिदाह कर' जोगर भ' गेल रहैक । पानिक आसाबाटीमे रहय ।

गेना कहलकै–रे सरुपा, मकइमे बगहा धान जे छौक से बिदाह कर' जोग भ' गेलौक ।

छतर टोकलकै–एखन नै, चारि दिनुक बाद । कनेक धार बढ़िआय दही । तखन बिदाहि क' हेलान दिअही ।

सरूप बाजल–उत्तरमे सुनलियैए जे बान्ह पड़लैए । अहुसँ त' पानि अयबाक चाही ।

–हँ ! बान्हे दुआरे ने एखन तक धार नै भरलैए । ई त' सभटा पानि जे देखैत छही से कसौँक पानि छैक ।

गेना बाजल–मुदा परसूसँ पानि बड्ड बढ़लैए धारमे । परसू बिदाह कैए दही ।

– अइ बेर त' एक बिगहामे छौ ने पटुआ रे ? छत्तर पुछलकै ।

– हँ, एखन त' छैक । आब कटि क' घर अबै तखन ने । ई एतेक हँसेरा-हँसेरी । हँसि क' गेना बाजल ।

–हम त' तेँ अइ साल परतिए छोड़ि देलियै । देखल जयतैक बादमे । जेहन सन हेतै । छत्तर हँसि क' बाजल ।

फेर किछु मोन पड़लै त' कने प्रसन्न भ' बाजल–हँ ! एकटा बात बुझलेँ ? आइ कहाँदन मालिक बजओलकैए मानिजनकेँ । सुनलियैए कहाँदन सुलहक गप्प चलै छैक ।

गेनाक मोन प्रसन्न भ' गेलैक । ओह, आब अररिया दौड़-बड़हासँ बाँचत। पुछलकै–सत्ते हओ काका ?

–हँ रओ, मोगल कहै छलै जे मालिक समाद देलकैए भूखन काकाके । अपने त' पता लागि जयतौक । गप्प कोनो छपल रहतैक । ओह, अइ झंझटसँ ककरो चैन नै छैक । भने सुल्लह भ' जाइक ।

सरूप सभटा सुनैत रहल । बाजल–एकटा भेद छैक अइमे काका । तोरा नै बूझल छह काका । मानिजन मालिकमे मील गेलैए ।

गेना आ छत्तर नै पतिअयलै ।

सरूप स्वर हल्लुक कय नहुँए बाजल–सत्तम बात । खेरापट्टीवाली नै छैक, कनही, भूखनक ब'हु, से कहैत रहैक बदमिञाके जे मालिक हमरा परसँ केस उठा लेलकै । हमर खेत आब निष्कण्टक भ' गेल । आ बदमिञा एखने कहैत रहैक बिजलीके जे मानिजनक खेत छूटि गेलैक । तोँही सोचहक, अइमे कोन पोलीसी छैक । जरूर ई नट्टा मालिकमे मीलि गेलह ।

थोड़े काल चुप्प रहल सब ।

गेना बाजल–बुझलहक काका, आइ भोरमे आयल रहै भोला सिंह । कहलक, मकइ जे काल्हि तोड़ि लेलेँ से बाँटि दे । आ ओ एक बिगहा पटुआ जे छौक काल्हि तकरा काटि क' बाँटि दे ।

साकांक्ष भेल छत्तर । पुछलकै–की कहलही तोँ ?

–कहबै की ? जाउ-जाउ, हम नै बाँटि देब, ने मकइ ने पटुए । अपन सन मुँह ल' क' चल गेला ।

ई नीक काज नै कयलक गेना । छत्तर सोचलक । घरक हितैषी रहय । बाजल–ई नीक नै कयलें । बेकार झगड़ासँ लाभ । ओ एकक चारि लगाबझा क' कहतै मालिकके ।

–धुत्त ! कहतै त' कह' दहक । सरूप अँइठि क' बाजल ।

मुदा छत्तरक मोन उद्विग्न भ' गेलैक ।

बिसेखीक परोक्ष भेला पर ई दूनू छँओड़ा अपने मोने काज करै छैक । बिना बूढ़-पुरनिञाक घर !

संध्याकाल जंगबहादुर बाबू दुसधटोलीक मानिजनके बजाय पठओलथिन। भूखनके कहलथिन–सुन भूखना, तोरा लोकनिक दुख हमरो नै नीक लगैत अछि। बाप-दादाक बसाओल परजा छें । आ हमरा अमलदारीमे तोरालोकनि उजड़ि जाय से नीक नै लागत । मुदा तोरा लोकनिक नजरिये उनटि जाइत गेलौक अछि । जाहि घरक अन्न-पानि देहक रग-रगमे भीजल छौक ताही घरसँ अरारि मोल लैत गेलेहें । ई सर्वे की आयल आपसी मेल लोकक खतम भ' गेलैक । बाप-बेटा मे, भाइ-भाइमे, माय-बेटीमे बिबनस (?)।

–हँ से त सैह मालिक !

– रे, जेना लोक लेल हैजा, तहिना जमीन लेल सर्वे । ई जमीनक हैजा थिक, हैजा । साँझ धरि केहन बढ़ियाँ तोहर खेत पथार छौक, आ प्रात भेने अनका नामे दरज । आ कि ने ?

–मगर, मालिक । कुंठित स्वरें भूखन बाजल–एहिसँ गरीबके दस धूरक अबलम भेलै । अपन-अपन हक-हिस्सा लोक बुझलक । प्रेम आ बिबनस त' सरकार जिनगी धरा क' होइते रहै छैक ।

हँसलाह जंगबहादुर बाबू ।

कहलथिन–रओ उनटे आरो अबलम चलि गेलै गरीबक । सभक बटाइ छिना गेलै । लोक परती बरु छोड़ि दैए, मुदा बटाइ नै दैत छैक । खैर जे से। हम एकटा सोचलहुँ अछि । सभ गोटा जे-जे हमर जमीन-जाल फरेबसँ लिखा लेने अछि सुपुर्दी क' दिअ । आधा हम छोड़ि देबैक । झगड़ा खतम ।

फेर कनेक काल चुप्प रहि बजलाह–आ हे, मानि ले, जेना तों भेलें । पुश्त-पुश्तसँ तबेदारी केने छें । तोरा कुल जमीन छोड़ि देबौक । खिदमती जागीर

बूझि क'। चारि बिगहा तँ तोरो नामे खाता खुजलौक । तोँ सभमे बुझनुक छेँ । विचारि क' देख ।

कनेक काल तक भूखन चुप्प रहि सोचलक । बेजाय कोन कहै छैक मालिक । आधा त' सभके भेटिए जाइ छैक । आ एकर चारू बिगहा रहि जाइ छैक निष्कंटक । खेत एकर नीक रहैक । धनहर । अनका सभक जकाँ भीठ नै । आकि परती-पाराँठ नै । बाजल–अच्छा, काल्हि साँझखन हम सभके एकट्ठा क' पुछै छियैक । जे बिचार हेतै, हम हाल देब मालिक ।

मुदा सोचलक, आन सब मानिओ जेतै, मुदा सरुपा पर संदेह होइक । हुड्ड आ उद्धत ।

जेना इएह गप्प जंगबाहादुर बाबू सेहो सोचैत होथि । कहलथिन–हे, ई बिसेखीक बेटा एखन फूजल ऊक भ' गेल अछि । कि ने रे ? सुनलियैए जे चंदा उगाहै अछि टोलमे जे एक भ' क' मोकदमा लड़त । कहि दिअही, बाप त' जहलेमे मुइलैक, ओकरो जहलमे सड़ा देबै । सुपुर्दी ने भेला पर चारिम दिन भोरमे सभसँ पहिने ओकरे पटुआ हँसेरो-हाथे कटबा लेबै हम । मकइ कहि दिअही बांटि देब' लेल । बड्ड सह्य कयलियै हम ।

--कहि देबै मालिक ।

भूखन उठैत-उठैत बाजल ।

दस

साँझखन कदमक गाछ तर बैसकी भेल । मानिजन सभकेँ एकत्र कयलक । टोल भरिक लोक गोट-गोट क' उपस्थित भेल । बीचमे मध्यस्थान रहैक भूखनक । मानिजन रहय । एक बेर चारूकात मूड़ी उठा क' देखलक । बाजल--सभ आबि गेल ?

चारूकात तकलक छत्तर । मोगला, फिरंगी, सरूप-गेना, बओनदास, नेबिया, फुच्चो, छीतन......सब त' करीब-करीब जुटिए गेल । कहलकै–हँ, करीब-करीब ।

स्वर साफ कयलक मानिजन । चारूकात मूड़ी उठा देखलक, फेर बाजल –आइ तोरा सबकेँ एकठाम करबाक ओजह जे काल्हि साँझखन मालिक बजाक' सुलक्क गप्प चलेलकै । मालिकक कहनाम जे जँ दुसधटोलीक सभ केओ हमर जमीन सुपुर्दी क' दियै त' सभके आधा-आधा छोड़ि देतैक ।

माने जकरा नामे तीन बिगहा छैक से डेढ़ बिगहा सुपुर्दी क' देतैक आ डेढ़ बिगहा ओकरा रहि जेतै । कऽर-कचहरीक खरचा सभटा मालिके देतै । से सभ गोटा अपन-अपन विचार करै जो जे मालिकके काल्हिखन हाल दियैक ।

सभ चुप रहल । निस्तब्ध । लोकक साँस सुनाइ । सभ सोचलक । बेजाय कोन । ई फऽर-फौदारी, मऽर मोकदमाक झँझटसँ उग्रास हेतैक । आ मङनीक जमीन रहै परि लागल; अधे त' कोन थोड़ ? जएह हाथ सएह साथ ।

समस्याक एतेक सुलभ निदानक भरोस ककरो ने रहै । विरोध करबाक ने ककरो साहस रहैक ने इच्छा । विरोध के करतै । कोन ठीक अइमे, के मालिकक खोफिया अछि । अइखन नोन-तेल लगा क' कहते जे फलनमा खाली सभटा बनल-बनाओल खेल बिगाड़ि देलक । कथी लेल केओ देखार हैत अनेरे । जे सभ करतै, जे सभक हाल हेतै । सभ सभक मुँह तकलक मुदा चुप्पे रहल ।

भूखन बाजल—सोचि क' देखै जाही । आधा जमीन बिना लड़ने सबके रहि जाइ छैक । बिबनसो खतम भ' जाइ छैक । पूरा जमीन ले सब लड़ैए ।

मगर लड़लाक बादो कोन नियम जे रहिए जेतैक । आ जँ ओ मानि ले मालिकेक पच्छमे डिग्री भेलै तखन ? तखन त' ओहो आधासँ हाथ धोअ पड़तै सबकेँ । आ फेर मुसहरीक सब केओ त' सुपुर्दी कैए देलकै । चारि जना मोटे बाँकी छै ।

फेर सभ चुप्प रहल ।

छत्तर पुछलकै—काका, तोहर की विचार ।

—हम्मर कोन विचार ? ई त' एकटा हम्मर आ कि तोहर गप्प नै छैक । सभक गप्प छैक । सभ अपन-अपन नीक-बेजाय सोचै जाइ जाओ । हम्मर विचार एतबे जे जे करै जाइ से सभ मीलि क' । एकमत भ' क' ।

मोगलक खेत दफा 144मे रहै लटकल । मोकदमाक तारीख ढोइत-ढोइत अकच्छ रहय । तारीख दिन क' बोनिहारियो समाप्त भ' जाइक ।

एकटा बड़द, एकटा महीस आ दूटा बाछा बेचि चुकल रहय । बड़ सुलभ लगलै ई अधिया पर सुपुर्दीक विचार । बाहरे बाह । मगर एना भेल जे सब चुप बैसल छैक से किएक । खुलस्ता ने किएक बजैए । इएह छैक अइ टोलबैआके । गाइओ हूँ बरदो हूँ ।

बाजल—की हओ फिरंगी भाइ, बेजाय कोन ? आधा पर सभटा झंझट खतम

भ' जाय त' कोन छति । अरे, कोनो कि मरौसी अछि हमरालोकनिक ! चीज त' बाबू ओकरे छैक । तखन आग लगन्ते झोपड़ा जे निकसे से लाभ । कि ने हओ बोनदास ?

–हँ से त' ठीके । आइ जखन जमीन भेलै त' सबके ओकर मोह आ लालचि भ' गेलै । कालिह धरि ककरो एक बीत रहै ? नै रहै । बड़कासँ कय घड़ी लोक लड़ि सकैए ? आ असलमे चीज त' मालिकेक भेलै । फा-दूआमे जे जतबा दफानि लै जाइक । की ने रे गेनबा ? बोनदास गम्भीरतापूर्वक बाजि गेना दिस समर्थनक लेल तकलक ।

गेना चुप्प रहल । अइ सब कायदा-कानून बला चीजमे हल्ल द' कोना बाजि देत । भाय दिस तकलक । एहि सबमे छँओड़बे बुधिआर रहैक । ओकरा खाली जोत-कोड़सँ मतलब रहैक । जत' खाली तागतिक काज होइक । नहुँए केहुनिआठि कहलकै–बाज ने ।

सरूप एतबा काल धरि चुप्प सोचैत रहय । मोगल कि बओनदासक एहन भीरु गप्प नै नीक लगलै । हाट-बाजार, परबाहा-फारबिसगंज करैत काल कैक खेपी भाषण सुनने रहय नेता सभक । झंडी-पतख्खा बला कतेक जलूस देखने रहय, नारा सुनने रहय । हठात् मोन पड़लै । ओइदिन परबाहा हाट पटुआ बेचय गेल रहय । एकटा मीटिनमे भदसारिक सुरजा मीसर भासन करैत रहैक–धन ओ धरती बँटि क' रहत । कमाय बला भरि पेट खैत । आर किदन-कहाँदन, मारिते-रासे ।

बाह रे बाह । अगिया-बेताल छै सुरजा मीसर । इसपी, कलक्टर, सबकेँ बेधोख दूटा बिसुनपद सुनाब' बला । बाकुट भरिक जबान मुदा की जिबटगर । हय रे हय ! दू बेर एमेलेक भोटा-भोटीमे हारि गेलै । मुदा तैँ की ? जीबट नै कमलै । ओहिना गरजैत रहै छै सेल्ला बाघ जकाँ ।

ठाढ़ भेल सरूपा । खखसि क' गरा साफ कयलक । सुरजा मिसर सन आकृति ओ स्वर धारण करबाक प्रयास कयलक । यथासाध्य मोट ओ गम्भीर स्वरेँ बाजल काका, हम्मर त' विचार दोसर अछि । पहिल गप्प जे सुपुर्दी लोक करै । किएक ? सर्वेमे सभक हक-हिस्सा कायम भेलै । सभक दखल-कबजा मे जमीन छैक । सरकारी रसीद मालगुजारीक सेहो सभहक कटि गेलैए । तखन लोक कोन कानूनसँ सुपुर्दी करतैक आ दोसर गप्प जे तोँ जे कहलहक जे जमीन असलमे मालिकक छैक से कोना ? जँ ओकर रहितैक कानूनन त' हमरा सभहिक हक-हिस्सा ओइ पर कोना पहुँचैत ? धरती माता छथिन । हुनकर जे

सेवा करत ओ तकरे छथिन । हुनकर मालिकके बनि सकैए । जे हुनकर सेवा नै क' हुनकर मालिक बनत तकरा लग ओ नै रहथिन । तकरा तेयागि देथिन । आ मालिकके आठ सय बिगहा खेत छैक । ओइसँ ओकरा नै हेतै त' बबुरबन्नाक साठि-सत्तरि बिगहाक सुपुर्दीसँ की हेतैक ?

सब चुप्प भेल ध्यानपूर्वक एकरा देखैत रहल । छत्तरक मोन जुड़ा गेलै । बाह रे जवान । बाह । खूबज । अलबत्त । दौक जबाव मोगला आब । तखनसँ फुच-फुच करैत रहय । ठीके ने कहै छैक छँओड़ा । ककरो बोरा-बोरा नोन ककरो रोटी पर ने नोन ।

मोगल टोकलकै—मगर जमीन त' असलमे मालिकेक छैक ।

एक क्षण चुप रहि सरूप बाजल— काका, एखन हमरा, तोरा होइए जे मालिकेक छैक । किएक त' सभ मानि नेने छियैक । मगर असलमे धरती ककरो नै थिकै । अपन जोर जबरदस्तीसँ जे जतेक दखल कयलक तकरा लोक मानि लेलकै । सभटा मानबा पर छैक ।

असलमे धरती जोतनिहारक थिक । हरबाह थिक जे धरतीक असल बेटा थिक । जे ँ अपन पसेनासँ धरती-माताक ँ पूजै अछि । कय दिन देखलहक अछि मालिकक ँ अपन पेसानसँ धरती-माताक पूजा करैत ? देखहक, सरकारी कानून त' जरूर सोचि विचारिक' बनै छैक ने । बटीदारक नामे खाता कि सिकमी-खाता खोलबाक कानून जरूर कोनो इनसाफसँ बनल हेतैक । हम सभ निपढ़ छी तँइ भने नै बुझियै, मगर ई सोचबाक चाही जे सब कानूनक पाछाँ कोनो निसाफ जरूर रहै छैक । । ओइदिन सुनलहक नै । हाट पर की कहैत रहै सुरजा मीसर—धरती जोतनिहारक थिक । कय दिन मालिकक हाथमे हऽरक लागनि देखलहक अछि ?

आ फेर सभक दिस विजयी दृष्टि फेकि सरूप भाय लग बैसि गेल ।

सभक मुँह पर दुविधाक भाव रहैक । एक दिस आधा परित्याग क' आधा पर शांतिपूर्ण स्वामित्वक सुअवसर रहैक जकर समर्थक रहय वृद्ध मानिजनक अनुभवी स्वर ।

हठात् कोनो पक्षमे निर्णय केनाइ कठिन भ' गेलैक सभके ँ ।

भूखन बाजल—हूँ, एकटा गप्प आर नै कहलिऔ तोरा गेनबा । मालिक समाद देलकौए जे काल्हि जे मकै तोड़ले ँ से बाँटि दे नै त' परसू तोहर पटुआ हँसेरी हाथे काटि लेतौ ।

एहि धमकी पर स्वरूप क्रुद्ध भेल । बाजल–बेस काका, अइमे केओ खुलासा हाल नै बजैए । हम अपन विचार कहि दैत छिअह । हम दूनू भाँइ एकटा खऽढ़ बाँटि क' नै देबै आ ने सुपुर्दी करबै । लोक अपन-अपन नीकबेजाय सोचि देख' ।

बड़ी काल धरि केओ किछु ने बाजल । एहन निर्णयक आशा ककरो नै रहैक ।

भूखन कहलकै–की गेना ? मालिक त' एखन तोँही छेँ ? तोरो विचार सएह कि ने ?

–हँ काका, सरूपो त' आब समर्थ भेलै । ठीके त' कहै छैक । कोन सुपथ के बाँटि देबै ? जा मालिकक रहै खऽढ़-खऽढ़ क' बाँटि दैत रहियैक । आब जखन अपन चीज भेलै त' किएक बाँटि देतै केओ ।

भूखन अन्तिम प्रयास कयलक ।

बाजल–सुन सरूपा । तोँ एखन नेना छेँ । ई जिद्दक गप्प नै छैक, सोच विचारक गप्प छैक । परुकोँ त' मालिकक हँसेरी सभक पटुआ काटि क' ल' गेलै । सभ केओ मुँह तकैत ठाढ़ रहलेँ । पैघसँ अरारि मोल नै लेबाक चाही । हम्मर त' विचार जे ई आधा-आधाक गप्प मानलामे सभक कल्याण छैक ।

सरूप बाजल–काका । ई त' अपन विचार छैक । आन सब जे विचार करै । हमर दूनू भाइक विचार पक्का अछि । हम सभ अपन भागी छी । आन किएक हमरा सभक खातिर झंझटि मोल लेत । की त' हम सब परसू अपन पटुआ काटि आनब नै त' खेत पर कटि जायब । आ हँसेरीक गप्प जे कहै छैक काका, से प्राण सभ केँ एकेटा होइ छैक । हाथो अपना लेल सबके दुइएटा होइ छैक । दूटा हाथ आ एकटा प्राण ल' क' सभ गोटा लड़ैए ।

सरूपक तेजोदीप्त मुँह रहैक । स्वरमे समर्थाइक हूँकार आ दृढ़ निश्चय ।

भय जकाँ साहसो संक्रामक थिक । गरम सोनितक गरम-गरम गप्प उत्तेजित कण्ठसँ सुनि सभकेँ गरपीक अनुभूति भेलैक । छत्तरकेँ क्रोध भेलैक । एक बेर गेना-सरूपक जोड़ी दिस तकलक जे अपन समरथाइमे भरल-पूरल आत्मतुष्ट भेल बैसल रहय सटि क' । की एखन बिसेखी भैया रहितै त' एकरा दूनूकेँ ओहिना कट'-मर' ले छोड़ि दितै ? किन्नहु ने ।

उठि ठाढ़ भेल । बाजल–मानिजन, हमहुँ सुपुरदी नै करबै । जे हेबाक छैक होक । लड़ाइ हमरा सभक ठानल नै छैक । मालिके ठनलकै लड़ाइ । तखन

लड़बै अन्त धरि । आ खाली सरूप-गेना किएक कटतै खेत पर ? आ सभ की अपन-अपन माइक दूध नै पीने अछि ? अपन हक-हिस्सा ले सभ कटि मरत ।

शान्त चुप भेल बैसल लोकमे बिजलीक लहरि दौड़ल । माइक दूधक स्मरण-मात्रसँ सभक देहमे पारा दौड़ि गेलै । सभ माइक दूध पीने अछि । कटि मरत । माइक कोखि नै लजायत । हँ-हँ देखल जयतैक ।

एक स्वरेँ सभ बाजल-सुपुर्दी नै हेतै चाहे जे हो ।

अपन विचारक प्रतिष्ठासँ सरूपक छाती दोबरी भ' गेलै । रौद्र स्वरेँ बाजल-काका, मालिक के कहि दिअहक सुपुर्दीक फैसला परसू रन पर हेतैक । हँसेरी साजि क' आब' ले ।

–हँ-हँ । रन पर हेतैक फैसला । रन पर । हँसेरी साजि क' आवै । के बुझलकैए मालिक, खीरा-काँकड़ि । सभ-साल ऊखे माहे रस्ता । देखा देखी अइबेर । सभ बाजय लागल ।

रनसँ एहिमे ककरो भेट नै भेल रहै । आ ने कहिओ ई लोकनि आइ धरि हरबाही पएना छोड़ि लाठी-भाला धारण कयने रहय । मगर रन ओ हँसेरीक चिंतन नीक लगलै । बजलासँ पौरुखक तृप्ति होइक । उत्साहक लहरि सभमे दौड़ि गेल ।

भूखन भ्रूकुंचित आँखिएँ एहि परिवर्त्तनकेँ देखलक । कोनो विपत्ति छैक । नासक काल विनासक बुद्धि । बाजल–सुनै जो । तखन तोरा सभक जे विचार होउक । सभक विचारसँ हमहूँ बाहर नै छी । सुपुर्दी हमहूँ नै करबै । मगर हँसेरा-हँसेरीक पक्षमे हम नै छी । आ परसू अररियामे हमरा तारीख अछि । गमछा कान्ह पर ध' बिदा भेलाह मानिजंन दुखी हृदयसँ ।

मानिजनक प्रस्थान कयलाक बाद बैसकी अनायस हतप्रभ भेल, थोड़ेक काल सब चुपे रहल । के आगाँ बाजय ? आब की कयल जाय ? भीड़ बनि हुले-ले कयनाइ बड़ सहज; मुदा भीडक लेल कोनो योजनाक रूपरेखा प्रस्तुत केनाइ बड़ कठिन । सभ सभक मुँह तकलक ।

छत्तर घुसुकि क' आगाँ आयल । बाजल--हमर विचार जे ई लड़ाई खाली हमरे लोकनिक ने अछि । एक तरहेँ हमरा लोकनिक पाटीमे सब गरीब अछि जकरा सर्वेमे जमीन भेलैए आ जकरा मालिक पेरि रहल छैक । सभकेँ हाल देबाक चाही । अइ अवसर पर जे हमरा लोकनिक संग देत तकरो संग हम

देबैक । हमर विचार सरूपा आ मोगला एक बेर मुसहरीसँ फीरि आबय । फुच्चोसँ पूछि लेतै । ओहो सब संग दैक से सम्भव थिक । हम पलट मड़र ओत' जायब । हुनकोसँ मदति मँगबनि । सभ गोटा मीलि क' जूटब त' बहुत सम्भव झंझट नै हेतैक । काल्हि प्रातखन सभ गोटा एत जुटै जाइ ।

प्रातखन ।

सभक जुटला पर जखन छत्तर आ सरूप अपन संवाद सुनओलक त' सभक मोन खसि पड़लै । एकरा लोकनिक आगिमे कुदबाक खातिर केओ प्रस्तुत नै रहय ।

मुसहर लोकनिक स्वर सर्द रहनि । विरक्त । ई दुसधटोलीक बम-बखेड़ामे के पड़त आ किएक पड़त ? ई लोकनि कहिओ ओकर बेर-परसमे ठाढ़ भेलखिन अछि ? कहिओ ने । छै निगरति सरकारी रिजन इनारोसँ पानि नै भरय दै जाइ छैक ओकरा सभकेँ । चारूकातसँ टाट लगा-लगा घेरि लै जाइत गेलैए । परुकाँ हएजाक सुइ देब' एलै त' छीतनक बेटा कम्पोडरकेँ एम्हरे हुलका देलकै जे जाइये-जाइये मुसहरीमे पाँच आदमी को अगाड़ी-पछाड़ी दुन्नू चालू हए । आ ता जबरदस्ती सभके सुइ भोकि देलकै । तेना अपनो सब लै जाइत त' से नै । मऽरो ग' कऽटो ग' ।

यादव-बन्धु मुदित-मुख रहलाह । छत्तरक सभटा गप्प चुप-चाप सुनैत रहलाह पलट मण्डल । अन्तमे हँसि कहलथिन--छत्तर ई आगि नै नीक । हम किएक अइमे निरर्थक पड़ू ग' । तोँही सोचि क' देखही । पलट मड़र स्वयं बड़ पैघ काश्तकार रहथि । बेस समङ्गर । खूब परिश्रमी । निट्ठाह गृहस्थ । अपन एको धूर सिकमी-तिकमी नै भेल रहनि । अनका नामे दरज सर्वेमे । बटाइ पर खेती कम देथिन । अपना हाथे खेती करबाक कारणेँ संस्कारसँ श्रमिक रहथि, मुदा बेसी खेत रहबाक कारणेँ सहानुभूति रहनि जंगबहादुर बाबू संग । सोचथि जन-बोनिहारकें बहसायब ठीक नै । आइ हुनका पर उकाठी भँजै अछि, काल्हि हमरा पर भाँजंत । पैघकेँ आपसमे मीलि क' रहबाक चाही । ने त' घऽर फूटे गमार लूटे । ई बिसेखीक बेटा महा अगिलेसू भेलैक ।

थोड़बा काल धरि सब चुप्प रहल । सरूप बाजल--हम त' ककरो मदतिक आशा पर काल्हि साँझ नै बाजल रही । हम त' एखनो कहै छियै जे जकर पोन आगु-पाछु करै से अपन फूट भ' जाओ । हमरा खातिर आन कथीले' झंझटि बेसाहत ।

मोगला धोपलकै—चुप रह सरूपा । तोरा तखनसँ एकेटा रटनी लागल छौक : जे गति हेतै से सभक हेतै । एक बेर जखन लोक विचार केलक त' भ' गेलै । आब विचारक थिक जे काल्हि कोना सभ गोटे अपन-अपन खेत काटी। एकदम देखार भ' लाठी-भाला ल' क' खेत पर चली कि कोनो आन लाथे ?

अन्तमे निश्चय भेल जे प्रातखन अपन दूनू भाइ जा क' पटुआ काटत : भाला-ताला कथीले लेत । हँ, एक-एकटा क' लाठी लेत । बगलमे छीतनक पटुआमे सभ नुकायल रहत, हरबा-हथिआरसँ लैस भ' । कोनो झँझटि पर एकरा लोकनिक हाक सूनि छत्तर अपन दलक संग एकरा लोकनिक पीठ पर जूमि जायत ।

मुदा सोचलाहा नै होइ छैक । भोरखन दूनू भाइ जखन पहुँचल खेतमे त' गोड़ बीसेक जऽन पटुआमे ढुकि चुकल रहै । खेतक आरि पर भोला सिंघ आ दस आदमी गड़ाँस-भालासँ लैस ठाढ़ रहथि ।

संतान जकाँ पोसल-पालल जजाति एना भ' कटैत देखि गेना संघर्षक समस्त योजना बिसरि गेल । आरि लग जा' ललकारक—एहन डाका दिन-दुपहरिया! जकरा जानक काज होइ खेतसँ हटि जा । क्रोधावेशमे गराँ अवरुद्ध भ' गेलैक ।

सरूप पटुआ कटैत एकटा जऽनकेँ लाठीक हूरसँ ठेलि देलक ।

भोला सिंघक दल झुकल । मारि बजरल । दूनू भाइक लाठी घिरनी भेल रहैक । ओम्हर दूटा सिपाही खसल । भोला सिंघ भाला समधानि चलओलक। जाँघमे लगलै सरुपाकेँ आ ओ ठामहि खसल ।

पाछाँसँ छत्तरक दल ललकारा देलकै । मुदा भाइकेँ खसल देखि गेना दौड़ल। हाथक लाठी फेका गेल रहैक । खसल सरूपाकेँ देखि पाँच सिपाही भाला लेने दौड़ल ।

मुदा एके डेगमे गेनबा सरूपा लग रहय आ ओकर देह छापि लेलकै निहुरि क'। पाँचो उठल भाला एकरे देहमे गँथा गेलै । छत्तरक उमड़ल दल देखि भोला सिंहक हँसेरी पीठ देलक । लहास खस्लै । आब के अड़त हँसेरीमे ? अपन घायलकेँ उठा-पठा पड़ायल ।

एके पलमे जेना ई समस्त कुकाण्ड घटित भेल हो । सरूपाक जाँघमे साधारण घाओ रहैक । भाला उछटि गेल रहैक । मगर गेनाक शरीर भालाक प्रहारसँ जर्जर रहैक । बेहोश रहय, कने हुक-हुकी मात्र रहैक ।

उठा-पठा ओकरा टेढ़का खयर तर राखि देलकै । बेनी, बिजली आ ओकर माय, पाछाँसँ हकासलि-पियासलि दौड़लि आयलि । बिजलीक आँचर सोनितसँ भिजा गेनालाल प्राण त्यागलक । बेनीकें दाँती लागि गेलै । सरूपक माय घुसकुनिजा मारने बैसलि तकैत रहय बिना पऽल खसओने ।

चारूकात ठाढ़ सभ चुप आ स्तब्ध रहय । हाथमे ओहिना लाठी भाला रहैक । आँखि क्रुद्ध । बालू पर जमल जाइत गेनाक रक्त नहुँए जा क' सभक आँखिमे छितरा गेलै ।

एगारह

दिन जाइत देरी नै होह छैक । बेनी सोचय । बरख पूरि गेलै गेनबाकें मुइना । एही साओनमे परुकाँ मुइल रहय । मनुख बड़ थेथ्थर होइए, बड़ कठजीब । सभ किछु सहि लैए । बेनीकें होइक हुँकरि क' मरि जायत गेनबा बिना । आठ दिन धरि अन्न-पानि तेयागने रहय । मुदा तैओ ने मुइल । होइ बताहि भ' जायत, कि मरि जायत । मगर ने बताहि भ' सकल ने प्राणे बाहर भ' सकलै । मुइनिहार बेत्रे बड़ उदास लगै छै । जेना सब किछु ओ ल' क' चलि गेल हो, सब किछु । मगर मरनिहार किच्छुटा ने ल' जाइए । अपन देहो छोड़ने जाइए । ओ सभटा वस्तु एतहि छोड़ि जाइत अछि बाँचल लोकक खातिर । बेनी सोचय । किछु टा त' ने ओ ल' गेलै । तखनो किएक एना लगै छै जे ओ सभटा नेने चल गेल ?

अही गुन-धुनिमे साँझ-परात, दिन-राति ओकर बीत जाइक । समस्त परिवार पर जेना विषादक कारी छाया पसरल होइक ।

हँ ! दिन बितैत देरी नै लगै छै, सरुपा सोचय । ई साओन बरख लगलै भइयाकें मुइना । बड़ केनादन लगै । बड्ड । एकदम एकसर । बाप-मायक छाहरि हँटलासँ जेना होइक एकदम नाङरं भ' गेल हो । मगर पेटक चिंतामे सभटा लोक बिसर' लगैए । आ दिन ओहिना बित' लगै छै । सरूपाकें होइक कोना जीयत । जेना आब सभ किछु समाप्त भ' गेलै । खतम भ' गेलै । मुदा एक खेपी जजाति उपजलै । एकबेर परमान भरल । एकबेर कदममे गोल-गोल फूल भेलै । सभटा चीज ओहिना रहैक । बाड़ीमे केराक तीन घौर फूटल रहैक। फारबीसगंज मेलासँ अनने रहय गेनबां ई गाछ । वंशी-वट केरा । छोट-छोट गाछ-नाट-आ भुट्ट । मुदा घौर बेस नमहर । भुँइआ सोहार । पहिल बेर फूटल रहैक । गेनबाक रोपल गाछ गेनबाक मुइलाक बादो ओहिना फुटैत छैक । गेनिहार टा खाली चलि जाइत अछि । जे बचैत अछि से जिबीते जाइत अछि । जेना खाली जिबैत रहब सभसँ जरूरी काज हो ।

दलान पर कदमक गाछ तर बनल बातीक छोट मचान पर बैसल रहय सरूप । पयर झुलबैत रहय । निरुद्देश्य भेल बैसल रहय । पयरमे कारी बूट रहैक । देहमे डोरिया हाफ कमीज । बूट तेसराँ गेनबा किनने रहय । डोरिया हाफ कमीजो गेनाबला रहैक ।

नहु-नहु ओकर वस्तु-जातक उपयोग कर' लागल रहय । आइए बूट बहार कयलक । बरसातक करणेँ फुफरी लागि गेल रहैक । झाड़ि-पोछि पहिरलक । पंजामे कनेक ढील भेलैक । आगा दिस जूतामे थोड़ेक तूर कसि देलकै । आब ठीक भेल रहैक । हाफ ठीके जकाँ भेलैक । खाली पाँखुड़ पर कने ढील । बसातक एक लहरि आयल । उपर कदमक पात-पात पर लटकल बरखाक बुन्नी झहरि गेलैक । सरूपक कान-नाक-बाँहि पर पानिक ठोप लटकि गेलैक । नै पोछलक । नीक लगलै ।

निरुद्देश्य रहय । पटुआ काटि गोड़ि चुकल रहय । खेत जोता गेल रहैक । कनेक धार आर भरइ त' फेर बीआ पाड़ि धान रोपि लेत । आर की ?

पयर झुलबैत रहय । नीक लगै झुलबैत । बूटक दुआरे भारी पयर आस त' झुलबैत नीक लगै ।

आब ई बूट एकरे भ' गेलै । ई हाफो आब ओकरे भ' गेलै । गेनाक आनो चीज त' ओकरे भ' गेलै । ओकर छत्ता, ओकर पुरना कोट, सभटा । ई खेत-पथार, घर-आङन, गाड़ी-बड़द सभ एकरे भ' गेलै । लोक आब सरूपाक बड़द आ सरूपाक घर कहैत छैक । गेनाक नाम स्वामित्वक सङ्ग नै जुटैत छैक ।

ठीके गेनाक सभ वस्तु आब एकरे भ' गेलै । ओकर हाथक रोपल वंशीवट केरो आब एकरे खातिर फुटतैक ।

मुदा ! भौजी त' एखन तक ओकरे छैक । माय आ कि बिजली भने सोलहन्नी एकर किएक ने भ' जाउक । भौजी एखन धरि गेनबेक नाम मोन पाड़ि सुड्डाह होइत रहै छैक ।

एकरा आगाँ नै किछु फुरलैक । स्वामित्व हस्तान्तरण शृंखला शोकाकुल बेनी लग आबि अटकि गेलै ।

फेर सोचलक । आइ जँ गेनाक बेटा रहितैक त' ओ धरि गेनेक कहबितैक ।

आं कि बेटियो रहितैक तैओ । मुइनहार अपना जगह पर अपन संतान छोड़ि जाइत अछि । आ एक लेखेँ ओकरा नामे अपने जिबैत रहैत अछि । जेना बाउ मरि गेलै त' ओकर बेटा हम आ गेनबा जिबैत रहलियै। आ लोक कहै बिसेखीक बेटा, बिसेखीक बेटी । एक तरहेँ बाउ जिबिते छैक । जाधरि ई कुल-परिवार जिबैत रहतैक ताधरि बाउ जिबैत रहतैक आ कि ओकरो जे बाप रहैक कि तकरो जे बाप रहैक सब जिबिते रहतैक ।

मृत्युक एहि विराट श्रृंखलामे पितर लोकनिक प्राणवान् प्रतिनिधिक रूपमे परम शांति ओ आनन्दक अनुभव भेलैक । कुल-पलिबार चलयबाक दायित्वसँ अपनामे एकटा नवीन धैर्य ओ बुद्धिक भान भेलैक ।

आ तैखन मोन पड़लैक बिजली । रूसलि छैक । ने खयलकै अछि एखन धरि । ओहिना बासिए मुहेँ छैक । खेतसँ जे तमसा क' अयलै से ओहिना पड़लि छैक कहाँदन मुँह झपने । बड्ड ग्लानि होइक एकरा । अनेरे ने आइ ओकरा पर तामस भेलैक । कैक खेपी बिजली के ई एहूसँ बेसी फज्झति करैत छैक, मुदा तैओ ओ ओहिना हँसैत छैक । मुदा आइ तँ एक तरहेँ पएना उठाइए नेने रहैक ओकरा पर ने ।

किएक ? कलपू लग बिजलिया जाइत छैक । से त' सभ बुझैत छैक । सभ जनैत छैक । जेना ककरो मुँहपर टेटर देखैत लोकके अभ्यास लागि जाइत छैक आ ओ आँखिमे नै गड़ैत छैक, तहिना लोकक आँखिमे इहो नै गड़ैत छैक। आ जाइते छैक त' की ? आइ जँ ककरो संग बिजली सम्बन्ध क' लियै त' फेर सभकेँ नीक लगतै । मुदा एनामे अधलाह किएक लगै छैक । एक तरहेँ त' कलपू संग एकर बिआहे भेल छैक कुमारियेसँ । मोनक बिआह । सभटा मोन मानलाक थिक । दस गोटा जकरा मानि लेलक से ठीक; जकरा नै मानय से अधलाह । चुमाओन मानि लेलक लोक, बिआह, मानि लेलक लोक तँ ठीक । बिना बिआहे कोनो पुरुखक संग रहब ने मानलक त' अधलाह ।

तखन अनेरे एकरा आइ तामस भेलैक । मुदा हठात् बौसबाक साहस नै होइक । की कहतै । केना कहतै ।

बेनी डेउढ़ी बाटे निकसलि आ सरूप लग ठाढ़ि भेलि । एक खेपी गेनाक बूट आ हाफमे ओकरा देखलकै । एकदम फोटो उतार गेना सन । भेलै तकिते रहि जाइक ।

बाजलि-बहीन छ' रूसलि । सब कहि क' हारि गेलैक । चुपचाप मुँह झँपने पड़लि छैक ।

एक बेर भाउज दिस तकलक । की कहौ ? बिजली एकरा एकदम सोहद्द नै छैक । ओकरा प्रतिएँ नीक गप्प कहुँ अधलाह ने लगै । बाजल-दुत् ! अपने भूख लगतै त' खा लेत ।

बेनी हँसलि-ई त' नेना-बला गप्प भेलह । आब तों चेतन भेलह । घरमे एकटा पुरुख-पात । तोरा बहुत चीज देखय पड़तह, सूनय पड़तह, सहय पड़तह । सब बातमे अगुता जयब' आ कि जिद्द ध' लेबह तखन घर कोना चलतह ? घरक मालिके पर घर चलै छै ।

सरूपकें आश्चर्य भेलै । भेल रहै एकर गप्प सूनि बेनी प्रसन्न हेतै । मुदा उनटे ताल । स्त्रीगणक मोनक गप्प बुझनाइ बड़ कठिन ।

बाजल-त' हम की करिऔक ?

फेर हँसलि बेनी । बाजलि-बाउ जिबैत रहितै त' की करितैक, आ कि उएह जिबैत रहितैक त' की करितैक ?

हँ ! ठीके त' कहै छैक बेनी । बाउ जिबैत रहितैक त' बिना बेनीकें बैंठसि क' खुअओने नै रहितैक । ता अपने अन्न-जोग नै करितै । आ ई अपने भरि थारी बैसि क' गीड़ि लेलक अछि । हुँः !

-जा क' ओकरा कहबहक खाय लेल से नै त' अइठाँ बैसि क' पएर झुलबैत छह । बेनी बाजलि आ फेर आङन चलि गेलि ।

थोड़ेक काल चुप रहि सरूप उठल, साहस क' आङन गेल । माय आ भाउज चुप-चाप असोरा पर बैसलि रहैक । ककरो दिस तकबाक साहस नै भेलैक । छोट चौकठिबला घरमे मूड़ी निहुड़ा सोझे पैसि गेल ।

पटिआपर रहै बिजली सूतलि, आँचरसँ मुँह झपने । सौंसे देह जेना प्रयास कय नूआसँ झपने हो । न'ह धरि झाँपल रहैक । माथक फूजल जुट्टी सेहो झाँपल रहैक । सूतल छैक मने । नै । एकर पद-चाप सूनि देहमे स्पन्दन भेलैक । सरूप थोड़ेक काल ठाढ़ रहल । फेर ठामहि बैसि गेल नीचामे । मुदा चुप्पे रहल । की कहतैक ? मने बिजली किछु सुनबाक बाट तकैत रहय । ठेहुन मोड़ि आरो घ किड़िया गेलि ।

-बिजो.......बिजो...........। नहुँए कहलकै सरूप । अपने स्वर जेना अनचिन्हार लगलै । भारी अपराधी स्वर ।

बिजली ओहिना पड़ल रहलि । सरूपाकें साहस भेलैक । कहलकै ममतासिक्त स्वरे—बिजो, उठ ने । चल खो ग' उठ-उठ ।

बिजली ओहिना निस्पन्द रहय । मुदा रोम-रोमसँ जागलि । भाइक स्वर सुनैत ।

चल । उठ बहिन, खा ले । हमरा पर तामस छौक तँ ले, हे ले, चारि चाट मारि दे । उठ-उठ ।

बिजली उठि बैसलि । मुँह भमराह रहैक, आँखि फूलल । थोड़ेक काल भाइ दिस ताकि बाजलि-सरूप । एकटा आइ तोरा खुलासा पुछै छिओ । हम जे छी से आब नै बदलब । नीक कि बेजाय । ने तोरा मारिसँ ने लोकक गारिसँ। ई घर तोहर थिकहु । एकर मालिक तों भेलें । बाप नै अछि जकरा पर अनुराग छजत । संगे-संग पछुआय आ पितरे-पितर पछुआय । हमर रहब तोरा नै पसिन्न होइ छौक; हमर चालि तोरा नै पसिन्न होइत छौक ? आइ ई बात तों खुलासा कह ।

बिजलीक एक-एकटा गप्प तीर जकाँ लगलैक सरुपकें । एहिसँ ओ चारि थापड़ मारि दितैक । दसटा गारि द' दितैक जेना हरदम दैत छैक । मुदा ई घर आङनक गप्प किएक करैत छैक । ई घर-आङन एकर नै छैक की ? एहि घर आङनक कल्पना करैत काल ओकर मनमे सभसँ पहिने बिजलिए आबि जाइत छैक । ई केहन गप्प करैत छैक ?

एहन शांत संयत स्वर बिजलीक स्वभावक प्रतिकूल रहैक ।

किछु ने बाजल स्वरूप । मुँह पर घोर आत्मग्लानि आ लज्जा रहैक । आँखि पनिआ गेलैक । भेलैक कना जयतैक । भाइक स्थान पर बिजली रहैक । संगीक स्थान पर बिजली रहैक । एहन मर्मस्पर्शी कथासँ पीड़ा भेलै ।

भाइक मुँहक भाव देखि बिजली हँसलि । कहलकै—देख सरुप । तों आब पुरुख भेलें । घरक मालिक भेलें । तोरा धीरे-धीरे बहुत चीजक निश्चय करए पड़तौक । लोककें अपना खातिर, अपन परिवार खातिर निश्चय करय पड़ै छैक । ई निश्चय करबाक झंझट टारल नै जा सकैत अछि । एखन् एकसरमे हमरा लग तोरा संकोच भेलौ, लाज भेलौ, हमर सिनेह भेलौ । हमरा बारेमे तोरा किछु निश्चय कयल पार नै लगलौ । फेर तों बाहर जायबें । लोक लग बैसबें। लाज हेतौ जे हमर बहिन कलपू मीसर सङे फँसलि अछि । ओही लोक जकाँ सोचबें । हमरा पर तामस हेतौ, घिरना हेतौ । फेर हमरा दिस तकबे त' सिनेह हेतौ,

सहोदरक ममता हेतौ । हमरे जकाँ सोच' लगबेँ । कतेक आदमी कमजोर होइए । जकरे लग ओ बैसल रहैए तकरे जकाँ सोच' लगैए । फूट, फराक भ' अपन भ' क' ओ नै सोचैए । तोँ एहन नै बऽन । बाबू एहन नै रहय । ओ हमर सिनेहसँ फराक भ' लोकक लाजसँ फराक भ' सोचलक, निश्चय केलक । ओ बिजली भ' क' सोचय । हमरे मनसँ सोचय । आ फेर जे सोचलक तकर जवाबदेही उठेलक ।

चुप चाप सुनैत रहल सरुप ।

बिजली फेर कहलकै—सरुप, तो सहोदर छेँ । एके माइक पेटमे दस-दस मास रहल छी । ने तों हमरा परतारि सकै छेँ, ने हम तोरा । तँइ आइ तोरा खुलासा कहै छिऔ । आ तोंहू खुलासा बाज । जखन हम पहिल बेर ई सोचलहुँ जे कलहू बेत्रे नै जीवि सकब, त' रातिमे छहरदबाली फानि क' भागल रही । बीचमे उमड़ल धार रातिमे हेलि गेलहुँ । दू-दूटा मुर्दघट्टी टपि गेलहुँ । सरुप! राति, धार, लोकलज्जा, जखन हमर बाट नै रोकलक तखन तोहर तामस आ कि गारि-फज्झतिसँ हम नै बदलब । खाली तोरा मनक दुख हेतौ । घरमे कलह हेतौ । घरक मालिक तोँ छेँ । सोचिले; फएसला क' क' हमरा कह'। तखने हम खयबौक ।

किछु नै फुरलै सरुपकेँ । मुदा बिजलीक एक-एकटा आखर जेना एकर मोनमे बैसल जाइक । आँखि नोरा गेलें ।

ता दलानपरसँ छत्तर हाक देलकै—रे सरूप ! सरूप ! धारमे पानि एलै रे । पटुआ सभक भासल जाइत छैक । चल छान' लेल ।

हाथसँ आँखि पोछि मुँह स्वस्थ करबाक प्रयास करैत ठाढ़ भेल सरुपा । फेर लपकि क' बाहर आयल ।

जल्दीमे हाफ कमीज खोलि नीचा फेकलक आ निहुड़ि क' जूता खोलय लागल ।

जूता खोलि माँझ आङनमे आयल कि बिजली पाछाँसँ गट्टा ध' लेलकै ।

चिकरि क' कहलकै—धार बढ़ि आयल छै, नै जो रे कोढ़िया तोँ । परुकाँ जुगला बेटा अहीमे डुबि गेल रहैक ।

बहिन दिस तकलक सरुप । एक पल पूर्वक गम्भीरता मुँहसँ लुप्त रहैक । आ तहिना स्वर संयम । मुँह व्यग्र रहैक आ स्वर लाल ।

हाथ छोड़ा बाजल स्वरूप-भक् । हमर पटुआ कातेमे अछि खयर-बोनी लग । हँट, भग ।

–देखै छही माय एकरा, धार उमड़ल छै । भोरेमे उत्तर कोनो बान्ह टुटलैए ।

फेर सरूपाक पाँछा चललि–अच्छा चल तोँ !

खाम्हीसँ औङठलि बेनी देखलक–बिजलीकेँ हल्लुक डेगेँ जाइत । सोचलक, केहन ढ़िठगरि अछि ई ! कोनो डर-भर नै आ ने लाज-संकोच । ई भाइ बहिन एके सोनितक दूटा ठोप थिक, एके जारनिसँ छूटल दुइठा खुहरी थिक । जे अलग ने कयल जा सकैए ।

सरूपक माय दुनूकेँ जाइत देखलक । नीक क' माँजल ताम्र-कलश जकाँ मुँह चमकि उठलै ।

धार उमड़ल रहय । बबुर, खयर आ झड़-बएरक झूकल डारिपातकेँ धोखारैत बाढ़िक भटरङ्ग पानि धारमे उमड़ल छल । बीचमे करा रेत, कात-कात भौरी मारैत ।

भरि छाँती पानिमे ठाढ़ छत्तर पयरसँ टोइत रहय । एकरा सभकेँ देखि कहलकै आइ भोरे बान्ह टुटलैए सीरामे । तेँ एते हहा क' पानि चललैए । सौंसे टोलक पटुआ भासि गेलै अछि । फेर निहुड़ि क' बोझ छानय लागल ।

चारूकात धारमे टोलवैआ सब पैसि क' अपन-अपन पटुआ छनैत रहय । भासल पटुआ तकैत रहय ।

पानिमे पैसल सरूप ।

पयरसँ टोक' देखलक तँ पटुआक बोझ अभड़लै । यथास्थान रहैक । मुदा एक भाग बोझ किछु स्थान छोड़ि चुकल रहै ।

भड़कछ भीड़ि बिजली भरि जाँघ पानिमे ठाढ़ि रहय । कहलकै–कात क' ले सभटा बोझ, ने तँ रातिमे निपत्ता भ' जेतौ । पानि एखन आरो बढ़तै ।

सरूप एकटा बोझ पकड़ि झिकलक । दोसर भाग बिजली पकड़लकै । बोझ घीचि बालु पर अनलक । काज करबामे बिजली पुरुखसँ कम नै रहय । पातर देहमे इस्पातक सामर्थ्य रहै । सभ बोझ अनलक त' गनतीमे आठ बोझ कमलै । भासि गेलै पुबारी भागसँ । एक थाक रहै । माटिक चेकानसँ दाबल बोझ । माटि धोखरलै की बोझ भसिए गेलै अइ रेतमे । आ रेतमे बलुआह धोखरैत देरिए कतेक लगतै ?

बिजली बाजलि–रे, एकटा अपन दिग्धी खूनि ले । परुकाँ एक कोठीहि बोझ भासि गेलौक । दिग्धी रहलासँ कोनो हर-हर, खट-खट नै । छोट टा दर खुनि ले ।

हँ ! भगवान चाहलकै त' परुकाँ जरूरसँ जरूर खुनबै अपन दिग्धी । लोकसभ धारमे भासल जाइत पटुआ छनैत रहय । अनेरो बोझ सभ । बादमे चीन्ह-पहिचान हेतैक । चिन्हलक, सप्पत खयलक त' नै बोझ पओलक आ ने छननिहारक ।

एकटा अध-डुबल बोझ दहाइत अबैत रहय सीरा दिससँ ।

बिजली कहलक–रे सरूपा, ओइ बोझकेँ छान ।

पानिमे पैसल सरूप । भसिआइत बोझ धयलक । फेर बोझक सङ बह' लागल । थोड़े दूर धरि भाठामे गेल । धीरे-धीरे बोझ कात घिचबाक प्रयास कयलक । दूहू भाइ-बहिन घीचि क' अनलक बालुपर । बिजली अपन बोझाक धाकमे मिलबय लागलि त' सरूप रोकलकै–फराक क' रखही, अनकर हैतैक ।

–इह । अनकर हेतै । आ हमर जे आठ बोझ भासि गेल से ? चल राख ।

आ अपन बोझमे मिला लेलक ।

हाथसँ एटा पटुआक सऽन छोड़ा बिजली बाजलि–छोड़ब' जोगर पटुआ भ' गेलौ । एकदम । आब खराब भ' जेतौ ।

–हँ ! काल्हि अनगुतिये हाथ लगा देबै ।

मुन्हारि साँझमे चारूकात धारमे लोक पैसल अपस्याँत रहय । आकाश साफ भेल अबै । धारक कात खएर-बबूरक जंगलमे फकसियार बाजल । दूरसँ कतहु पटुआक बोझक स्वामित्व लेल उत्तरा-चौरीक स्वर आयल ।

दुनू गोटे एकदम भीजि गेल रहय । नहुँए सरूप धोती गारय लागल । एकटा झड़-बयरक अढ़ भ' बिजली नूआ गारलक आ फेर तीतले नूआ पहिरि लेलक । तीतल आँचरसँ नीक क' देह झाँपलक । धारक कातक जल-हवामे देह भुलकि उठलै । दाँत कटकटा बाजलि–चल रे सरूपा ।

बहिन दिस ताकि स्नेह-स्वरेँ सरूप बाजल–तोँ तँ भरि दिन उपासले छेँ ?

लाजे बिजलीक कान लाल भ' गेलै ।

बारह

बेर खसि पड़ल रहैक ।

सरूपक माय बैसलि सजमनि बनबैत रहय ओसारा पर । लगमे छत्तरक स्त्री रहैक बैसलि । ओसाराक दछिनबरिया कात छलै जाँत गाड़ल । बेनी मकै पिसैत छलि । खाम्हीसँ ओङठलि बिजली बैसलि रहय । दाँतसँ एकटा खढ़ खोँटैत।

जाँत पिसैत पुतोहु दिस तकलक बेनीक माय त' मोन एकटा अवसादसँ भरि गेलै । कोना ई रहतै ? ई भरल देह । वयसक बाढ़िमे भरल उमड़ल परमान धार जकाँ । आर कतेक दिन ई सबूर बान्हि अइ टुटली मड़ैआमे खेपतैक ? इजोरिया जकाँ पसरल, फूलक गाछ जकाँ फुलायल, मह-मह करैत ।

बेटाक मुइलाक बाद जखन वेदनाक लहरि कमलैक तँ बेनी पर ध्यान केन्द्रित भेलै । केहन मन-माफिक पुतोहु भेटल रहै भाग्यसँ एकरा । काजुल. मुँह-सच आ पितमरू । कतबो सासु ओकरा फज्झति क' दौक उनटि क' एकटा जबाव नै देतैक । सदि-घड़ी सासु-ससूरक दासो-दास । तेहने दुख रहैक जे भाय-बाप अओतैक, ल' जयतैक, फेर नीक घर-बर देखि क' चुमाओन करा देतैक ।

आ बाप अयबो केलै बेनीक । मुदा बेनी नकारि देलकै । ई घर छोड़ि क' हम नै जायब ।

सरूपक माय तैओ ना-भरोस रहय । एखन चोट नव छैक, घाव हरियर छैक, तेँ । दुख पुरना जयतैक, बिसरि जयतैक । ई भरल-उमड़ल वयसक कोन ठेकान ? कखन आरि-धूर तोड़ि केमहर हूलि देतै ?

आइ भगवान कोरा भरि देने रहितथिन ! एकटा झरकलो सन बेटियो द' देने रहितथिन त' कोनो-ना खेपियो लितय । बाल-बच्चामे मोन बहटि जैतैक । मुदा सेहो नै छैक । धह-धह करैत वयसक आगिमे कतेक दिन आर ई मगन भेलि जाँत पिसतैक, पटुआ कमयतैक, आ एकरा घरमे दुख कटतैक ।

पुतोहु दिस तकलक । बेनीक गसल-गसल बाँहि जाँत पिसैत काल भरि जाइक । एकटा जाँघ पसारने बेसुध भेल जाँत पिंसबामे मगन रहय । हाथ नमरैत' गरदनिक एकटा पैघ सीर तनि जाइक । गोर मुँहपर घामक छोट-छोट बिन्दु रहैक ।

सरूपक मायक मोनमे भाव उठैक । एहन रत्न पुतोहुकेँ त्यागबाक इच्छा नै होइक । बढ़ैत-फुटैत सरूपेँ देखय । ओ ! घरक लोक जँ घरे रहि जैतैक ! ई

देखल-सूनल, चीन्हल-जानल, सैतल पुतोहु रहैक । केओ अनचिन्हार कनिञा सरूपाक अओतैक ! केहन-कहाँ ? घरमे बिग्रह क' देतैक । कोन ठेकान आइ काल्हुक नव-नवतारिके ? बेटाकें की कहाँ सिखा-पढ़ा देतै ।

मुदा से जँ बेनीकें पसिन होइक तखन ने. । सरूपा एकाध बरख छोट हेतै आर की ? बेनीक देह फोँकगर छैक, बिजलिया जकाँ सक्कत नै तें एना दूध जकाँ उधिआ गेलैए । देह बेसम्हार भ' गेलै अछि । सरूपा तँ बड़ दासो-दास रहै छैक । ओकर नजरि घूरि-फिरि एकरे पर टाङल रहैत छैक बेनीक बड़ आज्ञाकारी छैक छँओड़ा ।

बिजली खाम्हीसँ ओङठलि बैसलि रहय । दाँतसँ खढ़ खोँटनाइ जारी रहै । छत्तरक स्त्री कहलकै-गय ! गे बिजली, लागि ने द' होइ छौक कने । एकसरे तखनसँ पीसै छै बेचारी ।

बिजली एक खेपी भाउज दिस तकलक, फेर छत्तरक स्त्री दिस ताकि बैसले रहलि । दाँतमे खढ़ लटकल रहै । नै उठलि ।

माय रोषसँ कहलकै-कने समाङकें दुख दे । बेजाय ने । तखनसँ घामे-पसेने नहायल छै ।

बैसले-बैसलि भाउजकें पुछलक बिजली-लागि दिअ भौजी हे !

-नै आब भ' गेलै । लगिचिआ गेलै आब ।

-नै हय भौजो । मने-मने तोँ सरापैत हेबह ।

उठिक' धप्प द' जा क' बैसि रहलि बेनीक सोझाँ-सोझी । टाङ पसारि जातक हथड़ पकड़ि जोरसँ चला देलकै जाँत ।

हँसि क' बेनी कहलकै नहुँए-कथीले हरान होइ छह, हाथमे ठेला पड़ि जेतह ।

-की करबहक ? तोरा नै ने गड़तह । पड़य दहय ठेला । हमरा हाथमे पड़ल ठेला ओकरो नीके लगतै ।

ननदि-भाउजिक हास सुनलक छत्तर स्त्री । अपनो हँसी लागि गेलै । सरूपक मायकें सम्बोधित कय बाजलि - गय बहीन । कनिञा द' की सोचलही ? ई एना कते दिन चलतौ ? आ हम त' कहै छिऔ जे अपन कनिञा अपने भ' रहौ । सरूपो त' आब फूटि क' पुरुख भेलै । बेजाय कोन हेतैक ? एकरो अपन देखल-सूनल घर हेतैक । मोन बैसि गेलैए अइ गाँ-घरमे ।

मूड़ी निहुड़ओने सरूपक माय बाजलि-से कनिञाकें अपनो विचार हतै तखन ने ।

—दुर जो । तोहूँ त' तेहने छें । ओकर अपन विचार हतै त' की कहतौ जे हमरा सरुपसँ चुमाओन करा दे ? तोरा कहियो अपन मति नै भेलौ—उत्तेजित भय छत्तरक स्त्री बाजलि ।

जाँत पिसैत ओकर धन-धनीक मध्य बिजली आ बेनी दुनूक वार्तालाप सुनलक ।

जाँतकें एकाएक ब्रेक देलक बिजली । बेनी दिस आँखि गुड़ाड़ि तकलक। ओकर लज्जा-दीप्त मुँह रहैक । फेर हाथ चमका बाजलि—तों त' काकी आरो लिल्ला करै छें । तोरो गप्प जे होइ छौक । गे मइयो.....सरुपा एकरामे सकतै ? हम नै जीब आब !!

विरोध पर मन्द-बुद्धिवाली छत्तरक स्त्री उत्तेजित भेलि—से किएक ? किएक ने सकतै ? की भेलैए कनिञाकें तोरासँ एकर बरख बेसी छैक की ? तों बरखगीड़ू छें, बरखगीड़ू । तें एना छौड़ी जकाँ लगै छें । एकर देह कने फोंकगर छैक । आ सरुपा आब कि नेने छैक ? समर्थ भेलैक, एकदम पूरुख, फूटि क' ।

बेनीक कनपट्टी धरि लाल भ' गेलै । कान जरय लगलै, मुँह एकदम सिनुरिया । कोना बेकछा-बेकछा क' बजै छै ई । हठात् ई प्रश्न सूनि मोन सिहरि उठलैक । आगाँक कोनो योजना मोनमे नै रहैक । अइ घर-आङन, केरा, बँसबाड़ि, सासु-देयर, माटि-पानिसँ ततेक ममत्व भ' गेल रहैक जे जयबाक कोनो प्रश्न नहि उठैक । एखन धरि किछु ने सोचने रहय आ ने सरुपकें एहि नजरिञे देखने रहय एखन धरि । मुदा ई प्रश्न सूनि जेना सरुपा एकटा नव रूपमे ओकर मोनक सोझाँ ठाढ़ भ' जाइक । एकटा एहन संबलक रूपमे जे ओकरा अइ घर-आङन, अइ इनार आ बाड़ी-झाड़ीसँ सम्बन्ध बनओने रहय देतैक । सरुपक प्रतिएँ एकटा कृतज्ञतासँ मोन भरि उठलैक ।

मुँहक भाव-परिवर्त्तनक एक-एकटा रेख बिजली देखैत रहय तीव्र दृष्टिएँ । बेनीक दूनू हाथ पकड़ि घिचलक । पुछलकै—बरनी भौजी, तोंही कहहह ? की बिचार छह ।

बेनीकें लाजें भेलैक माँटिमे गड़ि जायत । बिजलीकें ठेलि हाथ छोड़ा घर पड़ा गेलि ।

थपड़ी बजा बिजली हँसलि–झूलि–झूलि । हँसैत-हँसैत साँस फूलि गेलैक आँखि नोरा गेलैक । बाजलि–ठीक बात । ठीक । भौजीकेँ पसिन्न छैक सरुपा । भौजी राजी छैक । मुँह केहन सिनुरिया भ' गेलै कुमारि जकाँ बिआहक गप्प पर ।

छत्तरक स्त्री बाजलि–गए, बिआहक गप्प पर सभकेँ लाज होइ छैक । बिआह करैत काल सभ कुमारिए जकाँ निर्मल भ' जाइए ।

बिजली हँसिक' कहलकै–देखलही नै । मुँह कोना सिनुरिया भ' गेलैक । आइ हमरा अन्दाज लागल । बहुत दिनसँ ई सरुपा पर धपाइत रहय ।

–गय अलगी । ! चुप ने रहि होइ छौक । बाड़ीमे सरुपा छैक । माय टोकलकै ।

केराक घौर फूटल रहैक बाड़ीमे । फूटल घौरमे बाँसक सोङर लगबैत रहय सरुप । आङनक सभटा वार्तालाप सुनलक । सकुचल । नीको लगलै । लाजो भेलै । ता बिजलीक हाक सुनलक–रे सरुपा, सुन त' ।

सरुप आयल । आङनमे ठाढ़ भेल । क्रम पात एहन सन जेना किछु सुनने नै हो । यथा साध्य मुँह संयत राखि बिजली दिस तकलक ।

बिजलीक आँखि हँसैत रहैक । सरूपकेँ देखलक । ईह ! मुँह केना बनोने अछि जेना किछु सुनने नै हो । आ सभटा सुनलक अछि कान पाथि क' । आँखि केना कासा-पितड़ सन झलकै छैक । पहिरनामे सरुपक रहैक भायबला डोरिया हाफ आ पयरमे ओकरे बना बूट ।

हँसि क' पुछलकै बिजली–रे सरुपा, भोजीकेँ रखबही । सम्बन्ध करबही ओकरासँ । सम्हरतौ त' बाज ।

हाथगे केराक एकटा काटल घौर रहैक । ठामहि ओकरा माटिपर पटकि बहिन दिस कृत्रिम क्रोधेँ तकलक सरूप ।

बिजली हँसि क' बाजलि–ठीक-ठीक । भैयाक जुत्ता एकरा औंटि गेलै अछि । भौजीकेँ जरूर सम्हारि लेतै । पक्का बात ।

डेग झटकारि सरुप दलान पर विदा भेल । कोना ई बजै छैक बेधोक ! कहियो एकरा लाज-संकोच नै हेतै !

–चुप बेलज्जी । एकोरत्ती संकोच नै छैक एकरा । सरूप आब नेना छैक ? कनेको विचार नै छैक एकरा । मुदा माइक टोकक कोनोटा असर नै पड़लै बिजली पर । घर जा भाउजकेँ धीचि अनलक ।

जाँत लग बैसा कहलकै–चल' पीस' आब । एकसरे । आर त' तोरा ततेक बऽल हेतह जे चिक्कस मेही हेतै ।

ननदिक पाँजरमे जोरसँ बिटुआ कटलक बेनी ।

तेरह

सभ पटुआ छोड़बैत रहय कलपू मिसरक दिग्धीमे । सरूप, बिजली, बेनी, मोगला, फिरंगी आ बहुतो जन ।

सड़ल पटुआक सड़ल पानिसँ गन्ध करैत दिग्घीमे पैसल सरूप । थालमाटि सड़ि क' बज-बज करैत रहैक । जाँघ-छावामे नीक क' मटिआ तेल अँउसि नेने रहय जोंकक कारणे । खूब सराबोर कय लेलासँ जोंक नै धरतै । आ ने त' ओना पैसय त' लुधुकिए जयतैक । सोनित सिसोहि लेतै । पैघ-पैघ, मोट-मोट जुआयल जोंक सह-सह करैत रहय दिग्घीमे ।

बज-बज करैत सड़ल थाल-कादोबला दिग्घीमे गोड़ल पटुआक एक मुट्ठी फेर घिचलक । जड़ि दिससँ छोड़बय लागल । आधा छोड़ाय जाँघ पर राखि बीचसँ तोड़ि देलकै । लस-लसाह उज्जर संठी पटुआमे ओझरायल अलग भ' गेलैक । फेर उपरकां छोड़ाओल स'न पकड़ि नहुँ-नहुँ पानि पर झमारलक । फुनगी दिससँ पटुआक संठी छोड़ि देलकै । धीरे-धीरे पटुआक स'न छुटि गेलै। पानि पर झमारलक । भीड़ी बना उपर फेकि देलक । उपर भीड़ पर बैसलि बेनी पटुआक भीड़ी बना-बना रखने जाय ।

पटुआ नै सुतरलै अइ साल । एकदम कारी खट-खट । अधलाह भेलइ । पानिक अभावमे आर उपाय कोन ? धारक धोअल पटुआ चानी जकाँ चक-चक करैत छैक । असल चानी-पाट होइ छैक । साफ पानिमे धोअल पटुआक दरो दू टाका फाजिले होइ छै । सोचलनि कलपू मीसर । बड्ड खराब भ' गेल रहै पटुआ । सुतार थिकै जजातिक सरगअसरा जमीनमे ।

भीड़ पर दू मुट्ठा बीड़ी आ सलाइ नेने छाता लगओने बैसल रहथि कलपू। ज'न के बीच-बीचमे बीड़ी पिओनाइ, तमाकू देनाइ आवश्यक । आठ-धोमे एक धो मजूरी फराक । कनिञो नजरिक ओट भेल कि दू धो पार । इएह-ले, उएह-ले ।

बिजलीक हाथ कदोआह रहै । पटुआक सनल । जोंकक नितान्त भय होइक । कहिओ कोनो दिग्घीमे नै पैसय । मुदा पटुआ छोड़ाबयमे आन मदतिक हेतु प्रस्तुत रहय । संठी एकट्ठा करब, की भीड़ी बनायब, की सुखायब, कि लाड़ब । सभमे दक्ष ।

कलपूकें संकेत कय बाजलि–एहने गिरहथ, ने बीड़ी, ने सुपारी । भारी मरकट गिरहथ छ' तों ।

कलपू बिहुँसलाह । बीड़ीक मुट्ठा आ दिआसलाइ फेकि देलनि । एकटा बीड़ी सुनगा मगन भ' पीब' लागलि । लोकमे कलपू प्रतिएँ सामान्य व्यवहार करैत नीक लगै । ओहीमे झाँपल-तोपल हास की व्यंग्य करैत नीक लगै । जेना यौवनक प्रथम चरणमे करय । प्रणयक गोपनीयता प्रत्यक्ष रूपें रखैत नीक लगै। कलपू दिस तकलक आ आँखिए-आँखि बिहुँसलि ।

एक झोंक सब ऊपर भेल । बीड़ी आ तमाकूमे तन्मय भेल ।

सरूपक जाँघमे एकटा जोंक लागल रहैक । हाँथसँ घीचि फराक क' फेकलक । डरे बिजली ठाढ़ि भ' गेलि । कहुँ उछटि क' एम्हरे ने अबैक । कलपू आ बेनी हँस' लागल ।

बहीनसँ एकटा बीड़ी ल' सुनगौलक सरूप आ छाहरिमे बैसि रहल । श्रम सँ कनहा आर चाकर भ' गेल रहै । छाती फूलल । घामसँ भीजल ताम्रवर्ण बाँहिक सीर जागल रहै । यौवनक उष्ण रक्त सौंसे देहमे बहैत होइक जेना । बेनीक आँखिक चोरी पकड़ल गेलै बिजलीक तेज नजरिञे ।

भाउज लग निहुड़ि नहुँए बाजलि–दू दिन आर सबूर बान्ह' ।

कृत्रिम गंम्भीरतासँ बेनी भौंह कोचिआए तकलक ननदि दिस ।

तामाकू चुनबैत फिरंगी बाजल–पटुआक भाओ त' बेस खसि पड़लै मालिक हओ ।

–हँ ! बीस-बाइस भ' गेलै । पैंतीस रुपैये नै बेचलहुँ जे आर भाओ बढ़तै से आब बाइस भ' गेलै ।

–त: । एहन बेठूआ खेती आन नै कोनो । जान मारि दै छैक । गमछासँ हौंकैत मोगल बाजल ।

–अबस्से की । गृहस्थ तँ आर थौआ भ' जाइए । जोड़ि क' केओ देखै'त कोनो फायदा ने । खेतमे ततेक ख'ढ़ भ' जाइ छै जे कोनो हिसाब नै । पँच-पँच कमाओन देब' पड़ै छैक । आ बीघामे बीस-बीसटा जन । फेर काटू-गोड़ू । छोड़ाउ । जतहि राखू तत्तहि महकत । आ बेचैत काल झमा क' खसू । कलपू बजलाह ।

तमाकूक पसरल तरहत्थी कलपू दिस बढ़ा फिरंगी बाजल–आ मालिक, गोर' काल सभ दसा भ' जाइ छैक । ताहूमे अइ साल ! उत्तर बान्ह भेला उत्तर धारमे पानि अयबे ने केलै । धार सुखा गेलै । आधा सड़ल पटुआ गाड़ी पर सब ढो-ढो दू कोस पूब मोनिमे जा क' गोरलक । आधासँ अधिक चोराइए लेलकै । सभ दशा भ' जाइ छै पटुआक खेतीमे ।

मोगल बाजल हओ मालिक, मोट गिरहथ अपन राखि लै अछि । भाओ बढ़लै तँ बेचलक । मुदा छोट किसानकेँ कोन उपाय ? गरजू भ' क' सस्ते बेच' पड़ै छैक । उपजाबे किसान सब आ मोटाय गोलाबला । बनिञा हाथे बेचू त' रिया-खिया क' टाका देतह ।

–इह ! परुकाँ सुरुजचन-मथुरा परसादके तीन लाख कहाँदन फायदा भेलै । पटुआक भाओ एकेबेर तीससँ बाबन भ' गेल रहैक ! देखने रहिअइ, मोटा क' त' बोच भ' गेलैए । एह ! मसनद पर एम्हरसँ ओम्हर ओंघड़ा जाइत रहैक । टाकाक खौंत फुकने रहै छैक । इह ! कोठी जे बनेलकैए तेमहला । हाय रे हय !

दोसर बीड़ी सुनगा सरुपा बाजल–हँ हओ ! हमरा सभक पसेना ओकरे सन-सन लोक के फलै छै ने । एखन हम सब बबूरक छाहरि तर औले मरइ छी आ ओकरा दू-दूटा पंखा लागल हेतइ । एकटा चानि पर आ एकटा सोझाँ मे छोटकिनमी.........हाँइ-हाँइ बसात ! आ असल जे मरओ-खटओ से मरिए जाओ ।

मोगल कहलकै–रे बेच' जो ताहू पर परलय । ओम्हर मनुसपलटीबला टिकस ले बड़दक नाथ पकड़ने । ओम्हर सिपाही जुआ धने, पाछाँसँ मटर बला पों-पों करैत । हमर त' प्राण अकच्छ भ' जाइत अछि । आ चारि खेपी त' पटुआ देखि नाक-भौंह चमकयतौ । एक बेर भाव कहि धूरि तकबो ने करतौ । मगर गरजे आन्हर लोक ।

–हँ से त' ठीके । किसान त' मजबूर रहैए । की करत । भाव बढ़बा धरि लेल ओकर बेगरता थोड़े रुकतै । मुदा उपाय कोन ? टाका बाला आर कोन जजाति हेतै । ने मरचाइ, ने तमाकू, ने आने कोनो मसल्ला । कुसिआर जोग जमीन छैको त' बेचत कत्त' । कलपू बजलाह ।

मोगला उत्कण्ठित भ' बाजल–सुनलिअइए जे बनमनखीमे चीनी मिल खुजतइ ?

दीर्घश्वास फेकि कलपू बजलाह–खुजि जाइ तहन ने । सुनै त' बहुत दिनसँ छियैक ।

सरूप बाजल–एँ हओ मालिक ! त' अपने कोल्हु गाड़ि क' लोक किएक ने पेरत कुसिआर । आ गूड़ बना क' बेचत ।

हँसलाह कलपू । कहलथिन–ओहो क' क' लोक देखलक । मोन छौ फिरंगी, ओइ साल एक खेपी सब कुसिआर केलक । गुड़ बना क' बेच' काल भाव एकदम खसि पड़लै । दू अने तीन अने सेर केओ ने पुछै । ने एकोटा बनिया तैयार होइक । बजार ल' जा' क' बेचबामे गाड़ी भाड़ा तक ने उपर होइक । बरिसात अबैत-अबैत सभटा सार गूड़ पघिलक' घरमे एक बीत बहि गेलै । एकटा जन राखि काटि क' ओकरा फेकबाबय पड़ल । कि ने रे फिरंगी, मोन छौक ?

–हँ मालिक ! हम सब जैह चीज उपजबिऔ सैह कौड़ी मोल भ' जाइ छै । पिआज उपजाउ त' छ पैसे सेर भ' जाइ छै, आलू उपजाउ त' दू अने सेर । कोना ने हेतह ने गाममे सड़क छैक ने बाजार । फारबिसगंज बला सड़क तेहन खराब छैक जे पावपैदल चलबामे हाड़-पाँजर टुटबाक डर होइत रहै छै । तीन-तीन ठाम गाड़ी पलटी कर' पड़ै छै । तेहन हेंक आ थाल भ' जाइ छै । बड़दक त' सभ दशा भ' जाइ छै ।

फेर मटिआक तेल औंसबाक दोसर राउण्ड चलल ।

कलपू बिदा भेलाह ।

कने थम्हि क' बिजली पछोड़ ध' लेलकनि ।

हठात् बड्ड आश्चर्य लगलनि कलपूकेँ । कोनो चीज हिनकासँ नै, माङनि । किछु देबो करथिन त' पहिने एक घंटा नेहोरा करा लैन तखन ।

मुदा से आइ एकरा की भेलैए । रेशमी पटोर, छीटबला साया । नीक सन आङी । छक । स्नो-पाउडर-अलता-बिन्दी ।

आश्चर्यसँ तकलनि ओकरा दिस ।

मुस्कीक लहरि ठोर पर आनि बाजलि बिजली–काल्हि साँझ धरि आनि दिह' सभटा चीज । पटोर नीक लिह; ललका । आङियो रेशमी । साया बनले बिकाइ छै । मेलामे देखने रहिअइ । छीटबला, नीचामे पाढ़ि लागल । छक लिह' पाथर बला । जेहन हमरा आनि देने रह' । नीक चीज लीह' । मरकटपनी नै करिह' । पटोर बुझलहक ने । बनियाँ के पटोर कहबहक त' देत' ।

तैइयो अर्थ नै लगलनि एकोरत्ती । की करतै ई सभ ल' क' । ललका पटोर, पाथरबला छक आ पाढ़िबला साया ?

बिजली बड्ड लग आबि सटि क' बैसि रहलनि । मेहनतिक, घामसँ सिक्त ओकर देह गमक' लगलनि । श्रमक स्वेदक सुगन्ध । बरखा-सिक्त माटिक गमक सन । कलपूक मुँह लग मुँह ल' जा क' हुनकाँ आँखिमे गम्भीर भावेँ एकटक तकैत मोट स्वरेँ बिजली बाजलि– तोरा सङे बिआह करब त' की अही फाटल-पुरानमे । एकदम नव कनिआबाला कपड़ा चाही हमरा ।

मंत्र-मुग्ध सर्प जकाँ बिजलीक आँखिमे पड़ल डुबैत-भसैत रहलाह । बड़ धीर-धीर ओकर गप्पक असर भेलनि । भहरल स्वरेँ कहलथिन–एना नै तोँ हमरा दिस ताक बिजो । फेर खुशी भेलनि । आइ एकरा की भेलैए । कोन सनक सबार छैक आइ एकरा ।

हिनक मुँहक भाव-परिवर्त्तन बड़ सतर्कतासँ बिजली देखैत रहय । फेर भभा क' हँसलि । बाजलि–डर भेलह तोरा जे गराँ पड़ैए । हँसी केलिअहु अछि। चारिम दिन भउजीक चुमाओन छइक । ओकरे ले चीज-वस्तु चाही । अपन नाँ कहलिय' जे नीक कीनिक' अनब' । मुदा तोहर सुखायल मुँह देखि दया भेल ।

निश्वास छोड़ि कलपू बजलाह–हमरा संग तँ तोँ बरोबरी हँसिए करैत रहले। कहिओ त' सत्त-सत्त अपन मोनक कथा कहितेँ । की त' खाली चुप्पे रहबेँ सपनाइत आ कि खाली अराट-बराट बजबेँ । धीआ-पूता जकाँ हमरा किदन-कहाँदन कहि परतारैत रहबेँ ।

फेर उठि घर गेलाह आ एकटा पितड़िआ सनुकची नेने बहरेलाह । ओकरा खोलि गोट-गोट क' बाहर करय लगलाह–सोनाक सूति, सोनाक बाला आ अनन्त । सोनाक मंगटिक्का, सोनाक तीन छर चेन आ दूटा औंठी । कहलथिन–ई जेबर सभटा हमर माइक थिकइ । ओकरासँ पहिने प्रायः हमर दादी पहिरने हैत। हमरा बरोबरि होइत रहैए जे तोरा ई सभटा पहिरा दितिऔ । तोँ ई सभटा पहिरतेँ।

क्रुद्ध कलपू दिस तकैत रहलि बिजली ।

कलपू बजलाह–विवाहक तोरे इक्षा हौक त' हम बरोबरी तैआर छी । कोट-कचहरीमे, पंडित-पुरहित लग ! जत' तोहर इक्षा होउक, जखन तोहर मन होउक । जाहिसँ तोरा मनबन्ध होउक । हमरा एना रहब नीक नै लगैए । । तोँ एतहि रह' पीसी काशीबास कर' चलिए गेलीह । हमर अधर्मताइ सहल नै भेलनि । तोरा ओइ घरमे दुख कटैत देखल नै जाइए । हमरा तोरा छोड़ि आर केओ नै अछि । अही ठाँ रह, नीक खो, नीक पहिर । ने त' जतहि कह ततइ चली ।

मधुसिक्त स्वरेँ बाजलि--हम त' तोरे छिअह । की एखनो ने मोन पतिआइ छह !

–की छें हम्मर ? साँझ खन क' एना चोरा-नुका क' अबइ छें । कैक खेपी तोरा देखना अठ-अठ दिन भ' जाइए । तों की बुझबही । बस तोरा एतहि रहय पड़तौक । ले पहिर आइ ई सभठा ।

जीह कूचि बिजली पाछाँ घुसकि गेलि जेबर पहिरबाक नाम पर । फेर गम्भीर भेलि किछु-काल विचारैत रहलि । फेर शांत स्वरें बाजलि–हम तोरा सङे ने रहब, ने बिआहे करब । हम नियम केने छी, बिअहुआ के तेआगि आब ई तोहर सूति-पाती हमरा छजत ? हम अहिना तोरा लग अबैत रहबह । चोरा क' नुका क' । साँझखन, रातिमे, बेरियामे ।

हमरा अहिना नीक लगइए । सासुर जयबासँ पहिने हमरा बड्ड होअय जे तोरे लग रही । तोरे सङ रही सदति । मगर आब सोचै छियै त' मोन खराब होम' लगइए । छोट रेलवी क्वाटरमे काँच पथर-कोइलामे जेना औनाइत रही तेहने मोन होमय लगैए । तोरासँ फूट-फराक रहि कमा-ख़टा क' पेट भरि लै छी । आ ओइ धूँआ-धक्करसँ अलग भ' तोरा लग अबइ छी । सब दुख झंझटि तेयागि । तोरा नोन-रोटी सन कुस्वाद कोना बना दीअ । हमरा सभसँ खुशी होइए जखन तोरासँ भेट करबा लेल सिन्नुर-टिकुली क' बिदा होइत छी । अपना के बिसरि जाइ छी । अपन दुख-फिकिर सभ । तोरा कोरामे माथ द' क' जिनगी हवा-बसात जकाँ बिला जाइए ।

गह्वरित कण्ठे कहलथिन कलपू–जेना तोरा नीक लागौ । हम तोरा खुट्टा मे बान्हि क' नै रखबौक सानी-भुस्सा द' । मगर हम एतेक अधलाह छी जे अपना जोग हमरा नै बूझै छै ?

समस्त गम्भीरता बिजलीक करुणामे बदलि गेलै । ओकर मुँह दिस ताकि नोरायल आँखिए बाजलि-एहन गप्प नै बाज' । तों हमर सींथ छुबितह तेहन भाग हमर नै छह । तों देवता छह हमर । मगर ई गहना पहिरबाक हमर भाग नै अछि अइ जन्ममे । ओ गहना पहिरब त' हम जरि जायब । ओइ जन्मक हमर चूक रहय जे ई गहना-गुरिया पहिर क' तोहर नै भ' सकलिअह । अइ जन्ममे हमरा तोहर छाहरिएटा लीखल अछि । अगिला जन्म तोरा सङ बिआह हैत.....आगिक सोझाँ, गठबंधन द' क' । कनिञा-बहुरिया भ' क' तोहर घरमे रहब' । अइ जनम हमरा एतबे बहुत ।

फेर हाथ नमरा कलपूक दूनू पैर पकड़ि लेलक । बाजलि–ओइ जन्म हमर साँय होएब' ने ? बाज' ?

एकर गप्प सुनैत-सुनैत एकटा विचित्र प्रकारक शान्ति कलपूके घेरि लेलकनि । समस्त उद्वेग ओ आक्रोश जेना समाप्त भ' जान्हि । ओहि शान्तिमे

आचूड़-स्नात क्षणभरि चुप्प रहलाह । मुदा अनायास जेना हृदयक अन्तरालसँ बहार भ' जान्हि–हेबौ ।

आँचरसँ आँखि पोछि बिजली ठाढ़ि भेलि । निमिष मात्र कलपू दिस तकलक आ फेर झटकारि क' बिदा भ' गेलि

पितड़िया सनुकचीमे कलपू गोट-गोट क' गहना राखय लगलाह ।

चौदह

आकाशमे मेघ चितकाबर छल । वर्षाक बादक अउल जेना उसिनने जाइत हो ।

पटुआ भरि डाँड़ क' आबि गेल रहैक । हरिअर कचोर । भोगर गाछ ऊपर मुँहे उठल । नोकगर पात पुष्ट । कोमल-कोमल डाटबला गाछ लह-लह करैत। तीनू गोटा अपन खेत कमा रहल छल । बेनी, बिजली आ सरूप । छोट-छोट खुरपी, टेढ़ बेट बला, पकड़बामे सुबिधाक हेतु । पत्नी दिस तकलक सरुप । गर्भ-भारसँ असल-शिथिल बेनी पटुआ कमा रहल छलि । मुँह पीअर रहैक । आँखि धसल । चाकर पीठ पर नूआ घामसँ सटि गेल रहैक ।

बिजली कहलकै–बैसबह कल-बलसँ छाहरिमे से नै । एखन तोरा एतेक मेहनतिक समय छह ?

बेनी मुसुकि क' चुप्पे रहलि । सगर्ब आँखिएँ पति दिस तकलक । ओ घास गढ़ैमे तन्मय छल ।

बड्ड बढ़लैए पटुआ हा-हा क', किने रे सरुप ?

– हँ । सुतार पर बरखा होइत गेलै । आ ई उमस ।

बरखक बाद बरेक आ जतेक गुमार करतै आ गरमी रहतै पटुआ बिखिया-बिखिया बढ़तै ।

–अइ बेर दिग्घी मुदा तैयार क' ले ।

–हाथ त' लगा देलिअइए । छत्तर काकाक साझमे, तखन देखा चाही ।

सरुपक मोन शान्त रहैक । पैर तर तीतल आ चिक्कन बलुआह माटि रहैक। एही खेतमे ओकर भाइक सोनिते-तीतल लहास रहै पड़ल । प्राण द' ई सिकमी बला बखेड़ा जितलक गेना । आब ने मालिकक दिससँ जजातिबाँटक तगादा होइक आ ने सुपुर्दीक प्रलोभन । सभटा केस उठि गेल रहै ।

कोना दिन बीतल जाइ छैक ।

पटुआ कमाइत-कमाइत बिजली कने अ'ढ़मे चलि गेलि ।

बेनीकेँ कहलकै सरुप-छोड़ि ने दहक तोँ । बेजाय कोन कहै छह ?

हाथसँ खुरपी राखि देलक बेनी आ ओतहि बैसि गेलि । घामसँ आँचर भीजि गेल रहै । पीअर मुँह झामर भ' गेल रहैक ।

फेर सरुप के मोन पड़लै चुमाओनक राति ।

कतेक लाज भेल रहैक एकरा । घरमे पैसल त' जेना दुनू पयर बर्फ भ' जमि गेल रहैक । कोनो अबूझ नै रहय । मुदा लाज होइक । कोनो अनजान-अनचिन्हार लोक जँ घरमे लज्जावनत मूड़ीसँ एकर प्रतीक्षा करैत रहितै त' दोसर गप्प । तखन ई अपन पौरुखक दर्पमे निःसंकोच चलि गेल रहितय । मुदा ओतय त' रहैक बेनी, एकर चिर-परिचित आदरक पात्र । एकर भौजी । की कहतै ओकरा जा क', कोना कहतै ओकरा जा क' ।

गंजी घामे-पसेने तर-बतर भेल रहैक । माँझ ठाँ ओहिना रहल । लाल रेशमी पटोरमे मूडी झुका घोघ काढ़ने रहैक बेनी । टुहटुह करैत लाल । जेना पलासक कोनो गाछ हो । ककरा कहौक, किछु ने फुराइ ।

आ प्रायः ई राति भरि अहिना ठाढ़े रहि जाइत जँ बेनी एकरा दिस मूड़ी उठा क' नै देखने रहितै । ओ मुँह आ ओ समय ओहिना मोन छैक । कहिओ कि बिसरतै ? कौमार्यक दीप्तिसँ दीपित, लाल पटोरसँ बेंढ़ल गोर नाम मुँह । माथ पर लाल ठोप । सिंथमे सिन्दूरक मोट रेख आगि जकाँ लह-लह लपटैत । आँखिमे घोर आशंकाक भाव ।

सिन्दूरक रेखसँ जरैत ओ मुँह आ आँखिक भाव एकदम अनचिन्हार लगलै सरुपके । दिनमे नित्य जकरा देखैत रहय ताहि बेनीसँ भिन्न । एकदम अपरिचित । बेनी सन एकदम नै लगलै । एहन कोनो स्त्रीके आइ धरि ओ नै देखने रहै । ई त' केओ एकदम नव आ अनचिन्हार लोक थिक । पिघलैत शंकाकुल आँखि, नरम-नरम मुँहक कोमल भाव । एके दृष्टिनिक्षेपमे पूर्व परिचयक भावविलोपित भ' गेलै । मात्र एकेटा परिचय बाँचि गेलै । नारी-पुरुषक प्रथम-साक्षात्कारक शाश्वत परिचय ।

लाज आ द्विविधा समाप्त भ' गेलै । आ अनचिन्हार लोके दिस धरकैक हृदयँ, उल्लसित भ' बढ़ल ।

एना जँ अनचिन्हार नै लागल रहितै ओ त' निश्चय ई पड़ा आयल रहितय ।

हम अनचिन्हार कोना लगलिअह ? बेनी हँसि क' पुछै ।

चुप रहि जाय सरुप । फेर कहै—कि जान' गेलियै । हमरा होअय जे तों कुमनसँ हमरासँ चुमाओन केल' । तोहर आँखि देखि भेल जे तोरा एकरा डर होइत छलहे !

—धुर ! लजकोटर । बेनी हँसी कौ ।

बेनी स्वामी दिस तकैत रहय । कोमल सरल-भावेँ टुक-टुक सरुप तकलकै त' मूड़ी निहुड़ा लेलक ।

घासक ढेरी कात कयलक सरुप ।

एकदम आत्मतुष्टिक भाव रहैक । मूड़ी उठा जजातिक हरियरी दिस तकलक । एही बलुआह माटिबला खेतमे ओकर पसेनासँ पाटल पटुआ लह-लहा रहल छलैक । एकर प्रेमसँ पाटल बेनीक कोखिमे एकटा संतान पोसा रहल छलैक । एकर संतान जे एकरा संगे आ एकरा बादो अही बलुआह धरती पर अपन पसेनासँ पटा-पटा एहने जजाति उपजाओत । आर की चाही एकरा ?

ई सभ सोचि अदम्य उत्साहसँ सरुपा भरि गेल घामसँ तीतल देह, पटुआक कोमल गाछसँ भिड़ैत देह हठात् फुला गेलै ।

आकाश दिस तकलक ।

मेघक रंग नीक रहैक । आइ जरूर बरिसत फेर । कमाओल पटुआ पानि पर लहलहा क' बढ़तै ।

धारक कात बबुर बन्नामे मेघ झिसिआइत रहय । एम्हर ढबेर रहैक ।

